पानी में नहीं भीगतीं मछलियां

अली एम. सैयद

पानी में नहीं भीगतीं मछलियां

अली एम. सैयद

सृजन बिंब प्रकाशन
नागपुर

Anakhar
An Online Publication

मुझे विश्वास है कि ज्ञान, समेकित सामाजिक उपलब्धि है, पितरों के दिये से अर्जन है, सो ज्ञान को बिना किसी भेदभाव, सब के लिये सहज सुलभ होना चाहिए, ज्ञान के एकल कापी राईट का ख्याल ही मुझे हान्ट करता है। अस्तु मेरी यह धारणा है कि इस पुस्तक में प्रकाशित सामग्री के सर्वाधिकार लेखक के पास सुरक्षित रखने का कोई औचित्य नहीं है। कोई भी अध्ययनोत्सुक व्यक्ति/संस्था/समूह, इस पुस्तक की पूरी या आंशिक सामग्री का उपयोग कर सकते हैं, उन्हें इस हेतु लेखक से अनुमति लेने की कोई आवश्यकता नहीं होगी। वे चाहें तो लेखक को उद्धृत करे अथवा नहीं, यह उनकी इच्छा पर निर्भर है। कथनाशय यह है कि यह पुस्तक कापी राईट के बंधन से मुक्त है, इस पुस्तक में प्रकाशित सामग्री का बौद्धिक, अकादमिक इस्तेमाल करने वाले बंधु बांधव, मुक्त भाव से इस सामग्री का उपयोग कर सकते हैं।

कहानी संग्रह : **पानी में नही भीगतीं मछलियां**

ISBN : 978-93-91817-38-1

लेखक : © अली एम. सैयद

प्रकाशक : **सृजन बिंब प्रकाशन**
301, सनशाइन–2, के.टी. नगर
काटोल रोड, नागपुर–440013
दूरध्वनि–8208529489, 9372729002
ई–मेल– srijanbimb.2017@gmail.com

प्रथम संस्करण : जुलाई 2023

पृष्ठसज्जा : अली एम. सैयद

मूल्य : निःशुल्क

वितरक : **अनाखर ऑनलाइन प्रकाशन**
धरमपुरा–2, जगदलपुर–494001
दूरध्वनि–9424297450
ई–मेल– ummaten@gmail.com
Love folklore
Sociology of Folk Literature

कुछ कहना है...

अरसा बीता कुछ लिखा नहीं था। सोचा प्रेम लिखूं फिर ख्याल आया। मिथकों तक जाऊं, किंचित इतिहास भी हो। प्रेम मय लोक और परलोक भी। लिखने बैठा तो मिली कहानियां कुछ अजानी और कुछेक बहुश्रुत। देवताओं से लेकर नश्वर मनुष्य तक,सबके सब प्रेम के लिए देह ढूंढ रहे थे। आत्मिक अनुराग से बढ़कर यौनाचार मिला। मैं आख्यानों में, खोज रहा था प्रेम, परन्तु वो निकला सहवासनुमा सानिध्य की अभिलाषा के जैसा। धरती के लगभग हर कालखंड में भटका, लेकिन ज्यादातर वृत्तांत मिले, बहु-स्त्री/बहु-पुरुष गामी होकर, कभी कभार एक स्त्री बनाम एक पुरुष का बोझ लिए। हमेशा की तरह इस बार भी कोशिश रही कि, हरेक आख्यान, हरेक बयान का सामाजिकता आधारित विश्लेषण करूं।

इस संग्रह के लिए चुने गए आख्यानों का भावानुवाद सह पुनर्लेखन और विश्लेषण भले ही मेरा हो पर उनके संग्राहक मुझसे पहले की पीढ़ियों के विद्वतजन हैं, सो उनके लिए ह्रदय से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं कि, उनकी रखी बुनियाद पर अपनी अकादमिक समझ का महल मैं भी तामीर कर पाया। संग्रह में सम्मिलित कुल 39 कहानियां या बयान, दुनिया के भिन्न मुल्कों, जल थल, पाताल सह देवलोक के हवाले से कहे गए हैं। इन्हें बांचते समय ऐसा लगा कि, देवी देवताओं को भी नश्वर मनुष्यों की मानस संतति मानने में कोई हर्ज़ नहीं है। प्रेम नामित, यौन लालसाओं के मुरीदों को श्रेष्ठ, हीन, प्रकट, अप्रकट, शक्तिमान, निर्बल जैसी श्रेणियों में बांटने का कोई औचित्य नहीं है। उनका एक्य, देह गाथाओं में परिलक्षित है।

इस किताब में, उत्तरी अमेरिका के मूल निवासियों, एस्किमों समुदाय, तुर्की, पर्सिया, सिंध, चीन, ग्रीक, इजिप्ट, आयरिश, नॉर्स, जर्मनिक मूल तथा देवलोक से लेकर पाताल तक के देवी देवताओं और अप्सराओं से सम्बंधित आख्यान शामिल किये गए हैं। इनमें से ज्यादातर जाने पहचाने और बहुश्रुत हैं। मेरे लिए अनंत काल के, जग व्यापित प्रेम पर लिखना कठिन नहीं होता अगर समकालीन वैश्विकता, घृणाजीवी, बर्बर और वैषम्य आधारित नहीं हो रही होती। हो सकता है कि, यदि पाठक मित्र, मेरी विचार दृष्टि सह कथा विवेचना से असहमत हों, उनका स्वागत है। बहरहाल आख्यानों में खोजते, बूझते, कुछ नग झगड़े, कुछ नग प्रेम निकला।

जब लिखना शुरू किया तो आंखों पर अंधियारे का संकट था, जिससे मुक्त होते होते, लगभग तीन महीने गुज़र गए। किताब, विशुद्ध रूप से प्रेम के नाम पर मिली यौन अपरिहार्यताओं, स्त्रियों, सामाजिक सरोकारों को संबोधित है। इसे अमृत चखे देवत्व और नश्वर मनुष्यों के दरम्यान, अभिन्नता को खोजना था, जो मिली। यूं तो दुनिया में बिखरा है प्रेम बेपनाह पर इंसान भीगते नहीं उसमे, और जीते हैं नफरतों में, जहर बुझे से। भूल ना जाऊं, किताब के शीर्षक के प्रेरणा स्रोत सैयद अनाब अली को विशेष स्नेह। इसके विन्यास, सजधज के लिए डा. शोएब अख्तर को पुनः साधुवाद। रीमा दीवान चड्ढा को उनके सहयोग के लिए विशेष स्नेह

जिनके साथ, जीवन जिया, सुख दुःख भोगे, अनुभव पाये, उन सभी के लिए कृतज्ञता ज्ञापन।

अली एम. सैयद
जगदलपुर

21-06-2023

रावी, शायान के लिए...

क्रमांक	आख्यान	पृष्ठ
1	चिया	1
2	कनिशा	4
3	हुरित	10
4	ति'अमोनी	18
5	कोमो	23
6	चेन लियेन	30
7	असली और करीम	34
8	ज़ुहरा और ताहिर	37
9	इरोस और साइके	40
10	अल्कियोनी और सेइक्स	49
11	अफ़रोडाइट और नेरीटिस	57
12	अफ़रोडाइट और हेफिस्टोस	59
13	अफ़रोडाइट और एरेस	64
14	अफ़रोडाइट और हेमीज	68
15	अफ़रोडाइट और पोसीडॉन	70
16	अफ़रोडाइट और डायोनिसस	73
17	अफ़रोडाइट और एडोनिस	75
18	अफ़रोडाइट और जिउस	78
19	हेडेस और पर्सेफोन	82
20	आर्फियस और यूरीडाइस	86

क्रमांक	आख्यान	पृष्ठ
21	पिरामस और थिस्बे	89
22	पोसीडॉन और एम्फीट्राईटी	94
23	हीरो और लिएंडर	98
24	ट्रिस्टन और इसोल्डा	101
25	रुदाबा और ज़ाल	106
26	मोमल रानो	112
27	सस्सी पुन्नू	116
28	ईस्टर	121
29	अखनातन और नेफरटीटी	125
30	आइसिस और ओसिरिस	128
31	तूतनखामन और अखसेनामुन	132
32	नेफरतारी और रामसेस महान	136
33	फ्रेया	139
34	नार्सिसस	144
35	थर थर कांपती पत्तियां	148
36	कटहदीन का ब्याह	153
37	सुफैद घोड़ा और नीली हवा	157
38	देशद्रोह	160
39	नेरिविक	163

चिया

एक युवा अपने ही कबीले की युवती चिया से प्रेम करता था, किंतु वो उस युवा को पसंद नहीं करती थी। युवा ने हर तरह से कोशिश कर ली कि, चिया उसे पसंद करने लग जाए लेकिन वह अपने हरेक प्रणय जतन में असफल रहा और निराश रहने लगा तथा खुद को मानसिक रूप से बीमार समझने लगा। उन्ही दिनों एक तिल जो कि उस युवा के साथ रहता था। उसने उस युवा को हतोत्साहित देख कर इसका कारण पूछा। युवक ने शुरू से लेकर आखिर तक अपने असफल प्रेम का किस्सा बयान कर दिया। जिसे सुनकर तिल ने कहा कि, मैं इसमें तुम्हारी मदद कर सकता हूं। मेरी मदद की वजह से वो चिया न केवल तुम्हें स्वीकार करेगी बल्कि खुद से चल कर तुम्हारे पास आयेगी। उस रात्रि को तिल उस जगह भूमिगत हो गया, जहां वो लड़की सोया करती थी। फिर चिया के निद्रालीन होते ही तिल ने उसका दिल निकाल लिया और वापस उसी रास्ते से होकर, युवक तक पहुंचा, जिस रास्ते से चिया तक पहुंचा था।

उसने युवक के हाथ में दिल रख कर कहा ये लो इसे निगल जाओ। युवक निराश था तो उसने देखा भी नहीं कि तिल ने उसे क्या दिया है और वो उसे निगल गया। सुबह जैसे ही लड़की की आंख खुली, उसने उस युवा के बारे में सोचा। उसे अजीब सी अनुभूति हुई कि उसे, उस युवा के पास जाना चाहिए और वो उसी लम्हा बिना सोचे समझे, उस युवा के पास जा पहुंची। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि, जिसे वो नापसंद करती रही, उसके लिए उसका प्यार शिद्दत से क्यों बढ़ रहा है? उसकी इच्छा हो रही थी कि, वह उस युवा की पत्नी बने और उसे प्रेम करे। अंततः वही हुआ जैसा कि, तिल ने कहा था। यह सब देख कर उस

समुदाय के जादूगर आश्चर्यचकित हो गए कि, यह घटना कैसे घटी? जब उन्हें यह पता चला कि यह सब कारस्तानी तिल की है, जिसे उन्होंने हमेशा निरर्थक माना है। तब से वे सब के सब, तिल से ईर्ष्यालु हो बैठे और उसे जान से मारने की धमकी दी। बस उसी दिन से तिल छुपकर रहता है।

चेरोकी इन्डियन कबीले की यह कथा मौलिक रूप से तीन अलग-अलग तरह के संकेत देती है। पहला यह कि, युवक अपने ही कबीले की युवती चिया से प्रेम करता है और उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता है, किंतु चिया उसे पसंद नहीं करती, जिसका मूल कारण, कथा को अनेक बार पढ़ने के बाद भी पता नहीं चलता। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि, कथा कालीन समाज की युवती, प्रेमी के चयन में अपना विशेषाधिकार रखती है और वह प्रणय आकांक्षी युवक को अपने प्रेमी अथवा पति के रूप में स्वीकार करने को तैयार नहीं है। युवक इस घटनाक्रम में एक पक्षीय प्रेम करता है और चिया की निरंतर असहमति के कारण से दुखी है तथा स्वयं को बीमार और अभागा मानने लगता है। यहां तक ये कथा अत्यंत स्पष्ट है कि, युवक की पहल को अस्वीकार करना, चिया का अधिकार है और उसने ऐसा ही किया।

कथा का दूसरा पक्ष यह है कि, युवक के शरीर पर मौजूद तिल को कदाचित, सौंदर्य का प्रतीक मानते हुए अप्रत्यक्ष रूप से यह कथन किया गया है कि, तिल उस युवक की दु:खद कथा को सुनकर, उसकी मदद करने का भरोसा देता है। यद्यपि कथा के अनुसार तिल भूमिगत रास्ते से होकर चिया की निद्रा स्थली के समीप प्रकटित होता है और चिया का दिल निकाल कर युवक से उसे उदरस्थ कर जाने की बात करता है। किंतु सांकेतिक रूप से यह प्रतीत होता है कि यदि युवक के तिल को सौंदर्य का प्रतीक माना जाए और यह भी स्वीकार किया जाए कि, चिया के अवचेतन मन में युवक का यह प्रतीक पहले से ही मौजूद है और वो या तो स्वप्न में या फिर जागने के बाद, उसके प्रभाव को स्वीकार करती है तथा स्वयं ही

युवक से विवाह का प्रस्ताव कर बैठती है।

ये कथा एक ओर युवक के असफल प्रयासों का कथन है, वहीं युवक के तिल के रूप में यह प्रतीक, चिया के अवचेतन मन में ऐसा प्रभाव डालता है कि, वो अपने नकारात्मक रवैये को छोड़कर युवक के साथ विवाह करने के लिए राजी हो जाती है। अतः इस कथा को चिया के अस्वीकरण सह स्वीकरण के दरम्यान दोलन करते हुए निर्णयों में देखा जाना चाहिए। कथा का तीसरा हिस्सा यह स्पष्ट करता है कि, कथा का नायक संभवतः अपने समुदाय के जादूगरों से मदद मांग चुका होगा और वे लोग सकारात्मक भूमिका निभा पाने में सर्वथा असमर्थ रहे होंगे। अस्तु प्रेमी युवक की जादुई मदद करने में असफल रहे, जादूगर युवक के सौंदर्य के प्रतीक तिल से ईर्ष्या रखते हैं क्योंकि वह युवक को चिया के समीप ले जाने का कारण बनता है, सो वे लोग उस तिल को मिटा देना चाहते हैं।

यद्यपि ये कथा तिल के भूमिगत हो जाने का प्रतीकात्मक बयान करती है। जिसके माध्यम से वह ईर्ष्यालु जादूगरों से सुरक्षित है। स्पष्टतः ये कथा देह से संबंधित सौन्दर्यात्मक प्रतीकों के स्वीकरण से वास्ता रखती है और प्रेम में दैवीय सहायता का दावा करने वाले लोगों की असफलता का बयान करती है। प्रेम अंततः नश्वर देह धारी युवक और चिया के दरम्यान घटित होने वाली एक स्वभाविक घटना है, जिसमें, प्रारंभिक संकोच और नकारात्मकता की पृष्ठभूमि में सकारात्मकता मौजूद है, जिसके परिणाम स्वरूप, रिश्ते जुड़ते हैं और प्रेम गहराने लगता है।

कनिशा

ताकीमियां नाम के गांव में पांच भाई और एक बहन कनिशा निवास करते थे। कनिशा से अलग-अलग जगह के सैकड़ों युवा विवाह करना चाहते हैं, लेकिन वो शादी करने की इच्छुक नहीं थी। कनिशा हरेक दिन गांव के पास की छोटी सी खाड़ी में तैरने जाया करती, किंतु एक दिन जब तैर कर लौट रही थी, तो उसने अनुभव किया कि वह गर्भवती है। उसके भाई जानना चाहते थे कि ऐसा कैसे हुआ? लेकिन कनिशा को जो बात खुद ही पता नहीं थी, वो अपने भाइयों को क्या बताती। कुछ दिनों के बाद, उसने एक पुत्र को जन्म दिया जोकि स्वभाव से बहुत ही चिड़चिड़ा था और हर समय रोता ही रहता था। उसे चुप कराने के लिए स्वजनों ने बहुत मेहनत की, लेकिन इसका कोई नतीजा नहीं निकला। कनिशा के भाइयों ने कनिशा से कहा कि, वह अपने बच्चे को घर से बाहर ले जाए। ऐसा करते ही बच्चे ने रोना बंद कर दिया और एक दिन कनिशा बच्चे को खाड़ी की तरफ घुमाने ले गई। कुछ देर बाद उसे आश्चर्य हुआ कि बच्चा, सील का मांस खा रहा है। बच्चे को मांस किसने दिया, ये जानने के लिए, कनिशा चारों तरफ देखती और घूमती रही, किंतु उसे यह पता नहीं चला कि आस पास कोई और भी मौजूद है।

जैसे ही वो अपने घर पहुंची बच्चा फिर से रोने लगा और रात भर किसी को सोने का मौका नहीं मिला। कनिशा के भाइयों ने, उससे कहा कि वह छुप जाए और देखे कि, बच्चा क्या करता है? बाहर जाकर कनिशा ने अपने आप को छुपा लिया, किंतु उसे दिन भर कोई दिखाई नहीं दिया, लेकिन शाम को एक युवक प्रकट हुआ और उसने कनिशा से कहा कि मेरे पीछे पीछे आओ, असल में वो युवक ही, उसका पति था। पहले पहल

तो कनिशा ने उस युवा को मना किया फिर यह सोच कर कि उसके रिश्तेदार इस बारे में जान ना जाए, वो उस युवा के पीछे चली गई। युवक ने कनिशा से कहा कि वह सुरक्षित रहेगी। बच्चे को अपनी गोद में लेकर चले। जब वो दोनों खाड़ी में पहुंचे तब, उस युवा ने कनिशा से कहा कि अपनी आंखें बंद करो और मेरी करधन को कसकर पकड़ लो। इस तरह से उन्होंने एक साथ पानी में छलांग लगा दी और समुद्र तल जितनी गहराई में, एक गांव में जा पहुंचे, जहां पर बहुतेरे मूल निवासी / इंडियंस बसे हुए थे। उसका पति, गांव के मुखिया की पांच संतानों में से एक था। अगले कुछ दिनों तक ये जोड़ा, संतुष्ट और प्रसन्न चित्त जीवन व्यतीत करता रहा।

कनिशा का बच्चा बड़ा होने लगा था और उसे अपने मातुलों के गांव के कई बच्चे पसंद थे। जिनके साथ वो तीर कमान लेकर खेला करता था। कनिशा ने बच्चे को बताया कि, उसके पांचों मातुल, सागर की सतह के ऊपर वाली धरती पर रहते हैं और बच्चा उनसे बहुत सारे तीर कमान ले सकता है। एक दिन बच्चे ने अपनी मां से कहा कि, मुझे धरती पर बसे हुए मामा लोगों से कुछ तीर दिलवा दो, लेकिन बच्चे के पिता ने इस बात पर आपत्ति जताई, हालाकिं काफी बहस के बाद, उसने अपनी पत्नी को अनुमति दी कि, वह अकेले धरती पर जाकर वापस आये। लिहाजा कनिशा, ऊदबिलाव की खाल पहन कर अपने साथ में पांच अतिरिक्त खालें लेकर बड़ी सुबह अपने गांव की ओर चल पड़ी। खाड़ी के तट पर उसे, उसके भाइयों ने देखा तो समझे कि, ये कोई ऊदबिलाव है और वे उस पर तीर बरसाने लगे, जिसके कारण से ऊदबिलाव की खाल में जगह-जगह छेद हो गए और कई तीर उसके अंदर भी पहुंचने लगे। इस पर कनिशा, पानी में गहराई की ओर तैरने लगी, लेकिन कई लोगों ने अपनी छोटी-छोटी डोंगियों के सहारे, उस पर तीर बरसाना जारी रखा, हालांकि कोई भी तीर कनिशा को जिस्मानी नुकसान नहीं पहुंचा सका।

धीरे-धीरे सभी शिकारियों ने ऊदबिलाव की खाल पहनी हुई,

कनिशा का पीछा छोड़ दिया, लेकिन उसका सबसे बड़ा भाई उसके पीछे लगा रहा और उसने ऊदबिलाव की खाल के अंदर छुपी हुई कनिशा को पकड़ लिया। उसने देखा कि, यह तो उसकी खोई हुई बहन है। तब कनिशा ने अपने बड़े भाई को बताया कि, उसकी ससुराल खाड़ी के तल पर है। कनिशा ने कहा कि जब भाटे के समय जल स्तर घटता है, तो उसकी ससुराल के गांव को देखा जा सकता है। वहां गांव के मुखिया के पांच बेटों में से एक उसका पति है और वह अपने पुत्र के लिए मायके से, तीर लेने आई है, तब बड़े भाई ने अपनी बहन को अनेकों तीर भेंट में दिए। ससुराल जाने से पहले बहन ने अपने भाइयों से कहा कि, कल सुबह एक व्हेल खाड़ी के तट पर मिलेगी, और ऐसा ही हुआ। उस व्हेल के मांस का बटवारा गांव में बराबर से किया गया। कुछ महीनों बाद कनिशा फिर से मायके आई और उसके भाइयों ने उसे दोबारा कुछ तीर दिए।

भाइयों ने देखा कि उनकी बहन के कांधों की त्वचा समुद्री नागों के जैसी काली हो चली है और वहां पर सिल्क की परत, दिखाई देने लगी है। कहते हैं कि उसके बाद कनिशा, कभी भी अपने मायके वापस नहीं आई। माना जाता है कि, हर साल गर्मियों और सर्दियों में खाड़ी के तट पर दो व्हेल मिलती हैं जोकि, समुद्री तल के गांव के नातेदार, धरती के अपने नातेदारों को भेंट बतौर देते हैं।

अक्सर कथाओं को उनकी सपाट बयानी के अनुसार नहीं बांचा जाना चाहिए, बल्कि इन कथाओं को दिए गए विवरणों के सांकेतिक निहितार्थ के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिए। यह कथा अमेरिकन इंडियंस में प्रचलित उस गांव की कथा है जोकि किसी समुद्री खाड़ी के पास बसा था और जहां एक परिवार विशेष में पांच पुत्र और एक पुत्री होने का कथन है। हालांकि कनिशा प्रतिदिन तैरने के लिए खाड़ी की दिशा में जाती है और किसी एक दिन उसे गर्भवती होने की अनुभूति होती है। हम ये नहीं कह सकते कि कनिशा को तैरने के दौरान अनायास ही गर्भवती होना पड़ा

होगा, हमारा मानना है कि, कनिशा किसी अन्य गांव के युवक पर आसक्त रही होगी और तैरने के बहाने, अपने गांव से बाहर, उस युवक के गांव की दिशा में जाया करती होगी। अतः कनिशा के गर्भवती होने का कथन दैवीय कथन या कनिशा के गोपनीय दांपत्य जीवन का कथन नहीं माना जा सकता। स्पष्टतः इसे, भिन्न बसाहटों में रहने वाले युवक और युवती कनिशा के प्रणय सह दैहिक संसर्ग की कथा माना जाना चाहिए।

युवक का गांव समुद्र तल में स्थित बताया गया है। यह उल्लेख भारतीय संदर्भ में मत्स्य कन्या और मत्स्य देश के उल्लेख से साम्य रखता है, जहां एक भिन्न जीवन संसार, जल तल में मौजूद होता है और जिसके बारे में धरती की सतह पर बसे हुए गांव के लोग सामान्यतः नहीं जानते हैं।

कनिशा अविवाहित है और उसके गर्भवती होने को लेकर किसी भी तरह के विवाद की स्थिति नहीं है। कनिशा के भाई केवल इतना ही पूछते हैं कि यह कैसे संभव हुआ? उल्लेखनीय है कि, वे अपनी बहन से कोई विवाद नहीं करते। अतः हमें यह मानने में कोई कठिनाई नहीं होना चाहिए कि, उक्त समाज में स्त्रियों को अपना प्रेमी चुनने और उसके साथ संसर्ग करने तथा जीवन यापन करने का अधिकार रहा होगा। यह दृष्टिकोण, इस तथ्य से भी पुष्ट होता है कि कनिशा अपने भाइयों के साथ रहते हुए, अपनी संतान को जन्म देती है। जिसे खुलेपन और पानी के सामीप्य की अनुभूति प्रिय है और वह अपने मातुलों के घर के अंदर एक चिड़चिड़े बच्चे के रूप में जाना जाता है। यह निश्चित है कि, बच्चा स्वयं के अनुरूप पारिस्थितिकी तंत्र चाहता है और तदनुसार खुश होता है। आगे चलकर, आख्यान में यह उल्लेख मिलता है कि, बच्चे को अपने मातुलों के गांव के अन्य बच्चों के साथ खेलने का अवसर मिला था। अतः यह मानने में कोई कठिनाई नहीं है कि, बच्चा काफी दिनों तक अपने ननिहाल में रहा था और कालांतर में अपने पिता के गांव में जाने के बाद भी, उसे अपने मातुलों के गांव और वहां के बच्चों की याद आती है।

आख्यान से यह भी स्पष्ट होता है कि, उक्त समाज, तीर कमान जैसे हथियारों के माध्यम से आखेट, खासकर जलीय आखेट पर आधारित समाज रहा होगा। कनिशा की ससुराल भी सामाजिक दृष्टि से उच्चवर्गीय सह कुलीन मानी जाना चाहिए। कथा संकेत यह है कि, कनिशा को अपने बच्चे के लिए तीर कमान लाने के बहाने से, मायके जाने की ललक जागी होगी। अतः कनिशा अपने पति से लंबी बहस करने के उपरांत अपने मायके जाती है। एक बार पुनः यह स्पष्ट होता है कि, उक्त समाज या उन दोनों गांव के लोग, स्त्रियों से विचार विमर्श के विरुद्ध नहीं थे और स्त्रियां सहज ही, चर्चा कर स्वयं के अनुकूल निर्णय पा सकती थीं। इसके बाद कथा में यह उल्लेख मिलता है कि, कनिशा अपनी ससुराल से ऊदबिलाव की खाल पहनकर और अतिरिक्त पांच खाल लेकर निकलती है ताकि उन्हें उपहार स्वरूप अपने भाइयों को दे सके। मायके पहुंचने के लिए कनिशा जल मार्ग चुनती है। चूंकि उसने ऊदबिलाव की खाल पहनी हुई है। अतः उसके मायके के लोग, उसे ऊदबिलाव समझ कर, उसका शिकार करना चाहते हैं और यहां भी तीर कमान के उपयोग का उल्लेख मिलता है। कनिशा, वापस गहरे पानी में भागती है और गांव के लोग छोटी छोटी डोंगियों के सहारे, उस पर तीर छोड़ते रहते हैं। जिस के कारणवश उसकी पोशाक क्षत-विक्षत हो जाती है और तीर उसके अंदर घुसने लगते हैं।

कनिशा को पकड़ पाने या मार डालने में असफल रहे, लोग एक स्थान पर ठहर जाते हैं, किंतु कनिशा का बड़ा भाई उस का पीछा नहीं छोड़ता और उसे पकड़ लेता है, फिर उसे पता चलता है कि, यह तो उसकी खोई हुई बहन है जो आकस्मिक रूप से कहीं लापता हो गई थी, जबकि कथा में इस बात का उल्लेख है कि कनिशा अपने भाइयों के कहने से अपने बच्चे से छुपकर किसी व्यक्ति की तलाश में है या कहें कि, गुप्त मददगार की तलाश में है, जो बच्चे को मांस खाने के लिए देता है। बड़ा भाई अपनी बहन को पहचान कर उसे अपने साथ घर लाता है, तब कनिशा अपने पांचों भाइयों को ऊदबिलाव की खाल भेंट करती है और बदले में उसे कई तीर कमान मिलते हैं और वो वापस अपनी ससुराल

चली जाती है, लेकिन इससे पहले वो ये घोषणा करती है कि, कल सुबह खाड़ी के तट पर एक व्हेल मिलेगी। कनिशा के कहने के अनुसार तट पर व्हेल मिलती है और उसके मायके के लोग उस व्हेल का मांस गांव के सभी लोगों में बराबर से बांट देते हैं। अतः यह स्पष्ट होता है कि उक्त समाज, आखेट में प्राप्त या भोजन के रूप में प्राप्त सामग्री को समाज में समान रूप से वितरित करने में यकीन रखता है। यानि कि, उक्त समय में वहां, परिवार से अधिक महत्वपूर्ण गांव था और प्राप्त खाद्य सामग्री को परस्पर बांट कर खाने की परंपरा प्रचलन में थी तथा बटवारे में कम या ज्यादा का भेदभाव नहीं था।

कालांतर में कथा में समुद्री सर्पों का उल्लेख मिलता है जोकि, प्रतीकात्मक रूप से कनिशा से साम्य रखता है, क्योंकि कनिशा जब अगली बार मायके आती है तो उसके कांधों पर शल्क दिखाई देते हैं, ठीक वैसे ही, जैसे कि समुद्री सांपों में होते हैं, उसका कांधा स्याह हो चला था और वो अपने मायके से पुनः तीर कमान का उपहार लेकर अपनी ससुराल वापस लौटती है। सामान्यतः यह कथा, कनिशा के द्वारा, अपने वर के चयन के, अधिकार के प्रयोग का बयान करती है और इस बात की घोषणा करती है कि, ये कथा दो युवाओं के मध्य पनपी और पल्लवित प्रेम कथा है। जहां परस्पर विजातीय समुदायों के साथ नातेदारी का संबंध स्थापित होने के बाद, गांव के लोग एक दूसरे को उपहार देना नहीं भूलते। तभी तो कनिशा के मायके से अंतिम प्रस्थान के उपरांत भी सर्दियों और गर्मियों में, गांव के लोगों को तट पर दो व्हेल उपहार स्वरूप मिल जाया करती है। जिसकी एवज में, वे लोग अपनी सुकन्या के ससुराल पक्ष को तीर कमान भेंट करते हैं। हमें इस कथा में कनिशा के प्रणय संगी चुनने के अधिकार, विवाह पूर्व संतान को जन्म देने के अधिकार और सह पलायन के अधिकार का स्पष्ट संकेत मिलता है और यह भी कि, तब युवक युवती के विजातीय होने पर भी विवाह के संबंध स्थापित हो सकते थे और नातेदार अपनी सामर्थ्य के अनुसार उपहारों का लेन देन करते थे। ये उपहार वही होते, जो उनके समाज में बहुतायत से प्रचलित या सहजता से उपलब्ध होते थे।

हुरित

मुद्दतों पहले की बात है, जब अपाचे जनजाति का एक समूह, धरती के उस टुकड़े पर निवास करता था, जिसे मिट्टी की रंगत के हिसाब से, पीली धरती कह सकते हैं। उस समूह में चेतोन और एल्सू नाम के दो युवा दोस्त थे। जिनमें से चेतोन का विवाह मुखिया की पुत्री हुरित से हुआ था। उन दिनों, उनका समूह किसी अन्य जनजाति के साथ संघर्षरत था जो उनसे बहुत दूर निवास करती थी। अतः इन दोनों युवकों को शत्रु जनजाति के कुछ योद्धाओं के शीश काटना थे और अपने समूह को चिंता मुक्त करना था। इसलिए एक दिन, उन्होंने अपने घोड़े तैयार किए और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए शत्रु जनजाति के गांव की ओर चल पड़े, रात होने पर उन्होंने, रास्ते में ही पड़ाव डाला और आपस में बातें करने लगे कि उन्हें आगे क्या-क्या करना है और अपने पीछे क्या छोड़ आए हैं। अविवाहित एल्सू ने चेतोन से कहा कि, आमतौर पर जैसा कि, महिलाएं करती हैं, तुम्हारी पत्नी भी आज की रात किसी अन्य पुरुष के साथ सो रही होगी। चेतोन ने कहा कि, तुम ऐसा सोच सकते हो किंतु मैं ऐसा कभी नहीं सोचूंगा, मेरी पत्नी मेरे लिए विश्वसनीय है।

बहरहाल उन दोनों में इस मुद्दे पर शर्त लगी और एल्सू गांव में लौट आया था। उसने चेतोन की झोपड़ी के चारों ओर चक्कर लगाए। उसने देखा कि चेतोन की पत्नी अपने घर की दहलीज में बैठी हुई है, लेकिन उसने एल्सू की ओर देखा तक नहीं, यद्यपि एल्सू उसे देखकर मुस्कुराता रहा, लेकिन हुरित ने उसे पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया, जिससे कि वह हुरित से बात करने से डरने लगा। एल्सू को महसूस हुआ कि चेतोन की पत्नी हुरित उतनी ही विश्वसनीय है जितना कि चेतोन सोचता है।

शर्मिंदगी और शर्त हारने के भाव से वह, वहां से वापस लौट रहा था, तभी उसे उस गांव की एक बूढ़ी स्त्री का ख्याल आया जो उसकी मदद कर सकती थी। उसने कहा कि, दादी मां क्या मैं हुरित को बिना कपड़ों के देख सकता हूं? क्या आप मुझे यह बता सकती हो कि उसके शरीर में किस किस तरह के निशान हैं, इसके लिए मैं आपको अच्छा पैसा दूंगा। बूढ़ी स्त्री, लालची थी उसने कहा कि हां, मेरे बच्चे, मैं तुम्हें इसकी जानकारी जरूर दूंगी।

तयशुदा योजना के अनुसार, बूढ़ी स्त्री एक बेंत के सहारे, फटी हुई जूतियां पहन कर, लंगड़ाते हुई चेतोन की पत्नी के सामने से गुजरी। हरित ने सोचा, बेचारी बूढ़ी। उसने बूढी से अपनी झोपड़ी के अंदर आने की गुजारिश की और कोने में खाल का बिस्तर ठीक कर दिया, उसे खाना खिलाया, देर हो चुकी थी अतः बूढ़ी स्त्री, कंबल ओढकर सोने का नाटक करने लगी। उसके कम्बल में एक छेद था, जिससे वह हुरित को कपड़े बदलते हुए देखने में कामयाब रही। हुरित ने अपनी लंबी सुनहरी चोटी को खोलकर फिर से सवांरा, मुंह धोया। उसने अपने शरीर पर पांच घाव किये जोकि उसके योद्धा पति के लिए सांकेतिक प्रणय की निशानी थी। वो पीछे मुड़ी तो बूढ़ी ने देखा कि उसकी पीठ पर एक काला निशान था। अगली सुबह बूढ़ी स्त्री ने हुरित से कहा कि पुत्री मैं अपने घर वापस जाऊंगी ताकि अपनी मुर्गियों को दाना डाल सकूं।

लेकिन बूढ़ी स्त्री वहां से निकलकर, सीधे एल्सू के पास पहुंची और उसने हुरित की पीठ पर काला निशान होने की बात कही। एल्सू यह सुनते ही खुश हुआ और वापस युद्ध शिविर में जा पहुंचा और उसने चेतोन कहा कि दोस्त, तुम्हारी पत्नी कल रात मेरे साथ सोई थी। उसके लंबे सुनहरे बाल हैं लेकिन पीठ पर एक काला निशान है। यह सुनकर चेतोन का चेहरा अपने कांधों पर झुक गया, वो उदास था। उसने कहा, चलो। वापस चलो, गांव में मेरे पास जो भी है, पैसा, घोड़े, जानवर और घर, वह सब मैं तुम्हें दे दूंगा क्योंकि मैं शर्त हार चुका हूं। गांव लौट कर चेतोन

ने सारी संपत्ति एल्सू को दे दी जैसे कि उसका अंतिम संस्कार होने वाला हो। हुरित ने उससे पूछा यह क्या कर रहे हो, अपना सब कुछ एल्सू को क्यों दे रहे हो? चेतोन ने कोई जवाब नहीं दिया और चमड़े का एक बड़ा संदूक बनाने लगा। जिसमें उसने कुछ पैसा, थोड़ा खाना और खाना बनाने का सामान रखा।

इसके बाद उसने कहा कि, मैं मैदानों की यात्रा करना चाह रहा हूं, एक लंबी और आनंदमयी यात्रा, तुम्हें अपने बेहतरीन कपड़े पहनना चाहिए और फिर उसने हुरित को उस संदूक में लेटने कहा और बोला कि, ये मैंने तुम्हें सूरज की गर्मी से बचाने के लिए बनाया है, इसके बाद उसने एक घोड़ा गाड़ी में संदूक लादकर अपनी यात्रा प्रारंभ कर दी। एक लम्बा रास्ता तय करने के बाद उसे एक नदी मिली, उसने संदूक को नदी में डाल दिया और गांव वापस लौट आया। गांव वालों ने पूछा कि, हुरित कहां है और सारी संपत्ति तुमने एल्सू को क्यों दे दी है? तो उसने किसी को कुछ नहीं बताया। हुरित के बारे में चेतोन की चुप्पी को लेकर मुखिया बहुत नाराज हुआ और उसने भूमि के अंदर एक कुआं जैसा बनाकर चेतोन को कैद कर दिया। उधर उस नदी में, जहां चेतोन ने संदूक फेंका था एक अपाचे मछुआरे ने जाल फेंका, जिसमें संदूक फंस गया, उसे लगा कोई बड़ी मछली फंसी है।

उसने जाल बाहर खींचा तो पाया कि उसमें मछली नहीं थी बल्कि एक सुंदर युवती लेटी हुई थी। वह उसे अपने घर ले जाना चाहता था, लेकिन हुरित ने कहा कि उसके घर जाने से पहले उसे कपड़े बदलना है। चूंकि वो मछुआरा, अपाचे समूह के साथियों के साथ युद्ध में जाने की तैयारी कर रहा था, तो हुरित ने भी पुरुषों जैसे कपड़े पहन कर, मछुआरे के साथ अपनी यात्रा शुरू की, ताकि वह योद्धाओं के दल में शामिल हो सके। उसे देखकर कुछ नौजवान योद्धाओं ने कहा कि, इस युवा की आंखें लड़कियों जैसी दिखती है बल्कि यह लड़कियों की तरह चलता भी है। अतः युवाओं ने तय किया कि वह पुरुष वेशधारी युवा की लैंगिक पहचान

करेंगे और इसके लिए उन्होंने उससे दोस्ती करने की योजना बनाई। हुरित ने कहा कि वह एक औषधि विज्ञानी है और उसे सूर्य देव से दवा मिलती है। इसलिए उसका तंबू, दूसरों से अलग रखा जाएगा। उसने सफेद चील का एक पंख भी धारण किया हुआ था, ताकि अन्य लोग उस पर शक न कर सके।

एक लड़का जो उसे दोस्त बनाना चाहता था। उसके तंबू में गया और पूछा कि क्या मैं यहाँ पर सो सकता हूं? हुरित ने कहा ठीक है। हुरित के पास सोने का नाटक करते हुए, उस योद्धा ने उसके ऊपर अपना हाथ रखा तो हुरित ने कहा ऐसा मत करो। वह बार-बार कोशिश करता और हुरित उससे कहती कि तुम सो क्यों नहीं जाते, इस तरह से वो पूरी रात, योद्धा की असफलता की रात सिद्ध हुई और उसने अगली सुबह अन्य साथियों से यह बात कुबूल की कि, वह असफल हो गया है। इसी तरह से यात्रा की हरेक रात अलग-अलग योद्धाओं ने इस अजनबी के असली लिंग का पता लगाने की बेकार कोशिशें की, लेकिन वे सभी असफल रहे। अंत में इन योद्धाओं का जत्था, शत्रुओं के देश जा पहुंचा तो हुरित ने सभी योद्धाओं को एक चेतावनी दी और कहा कि वे चुप रहें और अपने तंबू के अंदर रहें । उसके पश्चात हुरित ने शत्रु पक्ष की दिशा में दवा फेंक दी और बिना किसी की अन्य योद्धा की सहायता के अपने सभी शत्रुओं को मार डाला।

फिर उसने युद्ध का बिगुल फूंका, जिससे सभी योद्धा अपने तम्बू से बाहर निकले। तब हुरित ने घोषणा की कि, मैंने बड़ी लड़ाई लड़ी है और सभी शत्रुओं को मार डाला है। उसने कहा कि, अब मैं सभी मृतक शत्रुओं के पास जाऊंगा और उनके कान काट डालूंगा, उनकी ढालें, तीर कमान या युद्ध की तमाम सामग्रियां ले लूंगा और कुछ शत्रुओं के शीश भी काट लूंगा। युद्ध में जय के बाद जब विजयी योद्धाओं का यह दल वापस अपने गांव लौटा तो इन योद्धाओं में से, हुरित को विशेष आभार स्वरूप, उसके घर वापस वापस छोड़ने लिए, एक टुकड़ी की अगुवाई का प्रस्ताव

दिया गया। किंतु हुरित ने अपने पुरुष वेश को त्यागते हुए कहा कि मैं वह वफादार पत्नी हूं, जिसके पति ने उसे नदी में फेंक दिया था, यद्यपि मैं एक युवती हूं, तब भी मैंने अपने युवा योद्धाओं के लिए यह लड़ाई लड़ी और दुश्मनों को मार डाला है, जिनकी खोपड़ी या कान और हथियार आदि आदि आपको समर्पित हैं। चेतोन मेरे पति हैं।

लेकिन आपने उन्हें कैद कर लिया है, चूंकि यह कुटिल योजना एल्सू की थी, जिसके कारण से मेरे जीवन में अंधेरा छा गया है। अब उसे पकड़कर मेरे सामने लाओ। इसी दौरान चेतोन को मुक्त कर दिया गया तो हुरित उसे देख कर रो पड़ी और उसे गले लगा लिया। चेतोन बहुत दुबला पतला और उदास लग रहा था। हुरित ने कहा तुम्हें पीटा गया था। लेकिन यह योजना एल्सू की थी, उसने तुम्हें धोखा दिया है। मैं तुम्हें संपूर्ण समर्पण और ईमानदारी के साथ प्रेम करती हूं। इसलिए अब जाओ और एल्सू के साथ बूढ़ी स्त्री को पकड़ कर लाओ। ऐसा ही किया गया तब हुरित ने अपने पिता से कहा कि गलत काम करने वालों को दंड मिलना ही चाहिए। इसलिए घोड़ों की जगह दो जंगली टट्टू बुलवाइए और फिर एक की पूंछ पर बूढ़ी स्त्री को और दूसरे की पूंछ पर एल्सू को बांध दिया गया और उन्हें जंगली टट्टूओं के पीछे बांध कर दूर तक खदेड़ा गया, गांव के लोग उन्हें लात से मारते रहे, उन पर कूदते रहे और शिविर से दूर ले जाकर। उन दोनों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए ताकि अन्य कोई इस तरह की कुटिल योजना बनाकर किसी का घर परिवार ना उजाड़ सके।

यह आख्यान मशहूर जनजातीय समूह अपाचे इंडियंस का है। जिसके गहरे निहितार्थ हैं। इस आख्यान में वर्णित समूह ऐसी धरती पर निवास करता है, जहां की मिट्टी का रंग पीला है और जहां दो मित्र, जिनका नाम क्रमशः चेतोन और एल्सू है, निवासरत हैं। इनमें से चेतोन का विवाह उक्त समूह के मुखिया की पुत्री हुरित से हुआ है। कहने का आशय यह है कि, चेतोन राजनीतिक सत्ता का वैवाहिक स्वजन है, किंतु उसका मित्र एल्सू अभी अविवाहित है। मोटे तौर पर दोनों योद्धा हैं और

अपने समूह को शत्रु जनजाति से सुरक्षित रखना चाहते हैं, अस्तु दोनों युद्ध की तैयारी के साथ शत्रु समूह की ओर प्रस्थान करते हैं और दूरी अधिक होने के कारण, रास्ते में तंबू डालकर विश्राम करते हुए, अपने पीछे छूट गए नातेदारों तथा गांव के संबंध में अपनी स्मृतियों को ताजा करते हैं एवं शत्रु समूह के साथ होने वाली, आगामी मुठभेड़ की तैयारियों पर विचार विमर्श करते हैं। प्रतीत होता है कि एल्सू अपने मित्र चेतोन के हुरित से विवाहित होने को लेकर इर्ष्यालु है।

वह बहाने से, अपने मित्र से यह कहता है कि गांव की अन्य स्त्रियों की तरह हुरित भी चेतोन की अनुपस्थिति में किसी अन्य व्यक्ति के साथ रात्रि कालीन संबंध बना रही होगी। यह स्थिति दर्शाती है कि उक्त समाज में, संभवत स्त्रियां, अपने पतियों की अनुपस्थिति में पर-पुरुषों के साथ यौनाचार में लिप्त रहती होंगी। अतः एल्सू इसी सूत्र को पकड़कर, चेतोन से शर्त लगाता है कि, वह भी हुरित के साथ रात बिता सकता है। कथा से यह संकेत मिलते हैं कि एल्सू, चेतोन से द्वेष भाव रखता है और वह चेतोन और उच्चकुलीन, हुरित के विवाह से खुश नहीं है। वह मित्र के वैवाहिक संबंधों को तहस-नहस करने के लिए गांव में प्रचलित विवाहेत्तर संबंधों को आधार बनाकर चेतोन के मन में संदेह के बीज डालने की कोशिश करता है। कथा में दोनों मित्रों के मध्य लगी शर्त के अनुसार संपत्ति के लेन देन का विवरण मिलता है। एल्सू एक कुटिल युवक है, जो अपने मित्र की पत्नी पर कुदृष्टि रखता होगा और उसके वैवाहिक जीवन को अस्त-व्यस्त करने के लिए कुछ भी कर सकता है।

यहां तक कि गांव की किसी लालची बूढ़ी स्त्री से धन की एवज में, अपना काम भी निकाल सकता है। यह कथा हुरित की पीठ के काले निशान और सुनहरे बालों के सार्वजानिक प्रकटन के आधार पर चेतोन के मोहभंग का संकेत देती है। किंतु इससे यह भी स्पष्ट होता है कि चेतोन में सामान्य दृष्टि बोध भी नहीं था कि वो यह समझ पाता कि, गांव की स्त्रियां सामान्यतः नदी, तालाब में स्नान करते हुए भी इस तरह के शारीरिक

संकेतों को प्रकट कर सकती हैं। जिन्हें गोपनीयता का आधार बनाकर एल्सू ने प्रस्तुत किया है। चेतोन अपनी पत्नी से निराश है और उससे कोई तर्क वितर्क किए बिना ही एल्सू को अपनी सारी संपत्ति सौंप देता है तथा पत्नी की मृत्यु का आयोजन करता है। हुरित अपने पति के अबोलेपन से व्यथित है, किंतु वो उसकी ये दलील आंख मूंद कर स्वीकार कर लेती है कि, पति पत्नी को लंबी दूरी तक मैदानी यात्रा करना है। इसके लिए हुरित को एक चमड़े के संदूक में समय बिताना होगा। उसका पति उसे कहता है कि धूप की तेजी से उसकी रंगत पर असर पड़ेगा।

अतः उसे संदूक के अंदर लेटे हुए यात्रा करना होगी, हुरित इस बात पर विश्वास कर लेती है और उसका पति सुदूर बहती हुई नदी में, उसे मृत्यु के मुख में ढकेल देता है। गांव वापसी के उपरांत वह गांव वालों से हुरित की गुमशुदगी के बारे में कोई चर्चा नहीं करता, अतः उसका स्वसुर, उससे रुष्ट हो जाता है, वो चेतोन को तलघर में कैद कर लेता है और शारीरिक यातना भी देता है। दूसरी ओर हुरित के जीवित बचे रहने और उसके औषध ज्ञानी होने का कथन मिलता है। यह संयोग ही है कि उसका जीवन किसी मछुआरे के माध्यम से बचता है और वह जिद करके पुरुष वेश धारण कर के योद्धाओं के दल में सम्मिलित हो जाती है। युद्ध के पूर्व युवा योद्धाओं में पुरुष वेश धारी हुरित को लेकर संशय की स्थिति है और वे प्रत्येक पड़ाव में उसकी मित्रता के बहाने उसकी लैंगिक स्थिति को स्पष्ट करना चाहते हैं। कथा का अंत इस तथ्य के साथ होता है कि युद्ध शारीरिक तौर पर लड़े बिना ज्ञान के आधार पर भी जीते जा सकते हैं, जैसा कि हुरित जैसी युवती ने अपने औषध ज्ञान को आधार बनाकर शत्रु पक्ष को हताहत कर दिया।

यहां तक कि, उनके मृत शरीरों से, प्रतीकात्मक तौर पर, अंग विच्छेद किये और उनके हथियारों को जब्त कर, अपने समूह के समक्ष प्रस्तुत किया। यह एक अकेली स्त्री के ज्ञान की विजय थी। इसमें पुरुष योद्धाओं के शारीरिक सामर्थ्य का कोई योगदान नहीं था। अपना परिचय

हुरित तब देती है, जब गांव के लोग विजेता नायक के रूप में, उसका सम्मान करते हुए, उसे एक सैन्य टुकड़ी के साथ उसके घर भेजना चाहते हैं। तब वह कहती है कि उसने अपने समुदाय के लिए युद्ध जीता है। अतः उसके पति को मुक्त कर दिया जाए। कथा के अंतिम चरण में हुरित के पति की मुक्ति और आरोपी द्वय की अपमान जनक मृत्यु का विवरण मिलता है। जिसमें अंतर्गत गांव के लोग, एल्सू तथा बूढ़ी स्त्री को हुरित की इच्छा के अनुसार टट्टू की पूंछ से बांधकर प्रताड़ित करते हैं और उनके जिस्मों के टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं।

कथा से यह स्पष्ट होता है कि, नायिका हुरित अपने पति के इस व्यवहार से रुष्ट नहीं होती कि, उसने अपने संदेह के निवारण के लिए, हुरित की मृत्यु का आयोजन किया था, यहां तक कि, अपने संदेह के निवारण के लिए, हुरित से कोई चर्चा तक नहीं की थी। तो कथासार यह है कि हुरित अपनी विश्वसनीयता को सिद्ध करने के लिए अपने नासमझ पति की चुप्पी को अनदेखा करते हुए दोबारा जीवन व्यतीत करने की कोशिश करती है और वह अपने ज्ञान के आधार पर अपने समूह को शत्रु समूह की तुलना में सुरक्षित रखने के बंदोबस्त कर देती है। यह आख्यान स्त्रियों के सामर्थ्यवान एवं स्वयं सिद्धा होने का प्रतीक है।

ति'अमोनी

महान देवी ने धरती छोड़ने से पहले छै सिया युवतियों का चयन किया और उनमें से एक को उत्तर, दूसरी को पश्चिम, तीसरी को दक्षिण और चौथी को पूर्व दिशा में जाने के लिए कहा, पांचवी युवती को शीर्ष आकाश की ओर तथा छठवीं युवती को गहनतम पाताल की ओर जाने का निर्देश दिया। उसने कहा कि तुम हमेशा हमेशा के लिए इन स्थानों पर अपना घर बनाओ और समस्त दिशाओं के मेघ शासकों से अपनी सहायता की कामना किया करो। इसके बाद उसने सामान्य सिया लोगों से कहा कि आपको जो भी आवश्यकता हो, वो इन 6 युवतियों से कहें, उन्हें याद रखें ताकि ये युवतियां, उन के पक्ष में मेघ देवता से अपील कर पाए। इनमें से एक अकेली सिया युवती ने महान देवी के निर्देश का पालन किया और सीधी सड़क पर चल पडी, जबकि अन्य पांचों युवतियां भिन्न मार्गों से पृथ्वी के केंद्र की ओर बढ़ी और उन्होंने महान देवी के धरती लोक से जाने के पश्चात, सुंदर सफेद पत्थरों वाले एक गांव का निर्माण किया और घोषणा की, कि वे सभी हमेशा यहां रहेंगी।

यही हुआ सिया युवतियां अपने पति के साथ वहां बस गई और उनके घरों में नौनिहाल किलकारियां भरने लगे, हालांकि इस दरम्यान एक दुखद घटना यह हुई कि देवी ति'अमोनी को इस बात पर आपत्ति थी कि, सिया कबीले के लोग तेज गति से जनसंख्या बढ़ा रहे हैं तो उसने सारे नवजात बच्चों को मौत के घाट उतार दिया। सिया लोग अभी आपदा से उबरे भी नहीं थे कि, उनके सामने एक और गंभीर संकट आ खड़ा हुआ। हुआ यह कि, सिया युवतियां पूरे दिन कड़ी मेहनत करतीं, अन्न पीसना, भोजन बनाना और गुनगुनाना वगैरह -वगैरह ऐसे में जब उनके पति शाम

होने पर घरों में वापस लौटते तो ये युवतियां, उन्हें अपशब्द कहतीं और कहतीं कि तुम लोग अच्छे नहीं हो, तुम्हें हमारे काम की परवाह नहीं है। तुम हर समय अपने मतलब के लिए पत्नियों के साथ रहना चाहते हो। यह ठीक नहीं है, अगर तुम हमसे दूर रहो तो हम तुम्हारा ज्यादा ध्यान रख लेंगे।

इस पर पतियों ने प्रतिवाद करते हुए कहा कि, तुम पत्नियां ही पूरे दिन और रात हमारे साथ रहना चाहती हो और तुम कुछ दिन भी हमारे बिना नहीं रह सकती हो, अगर हम साथ नहीं रहे तो तुम दुखी हो जाओगी। पत्नियों ने कहा कि ये तो आप पुरुष हैं जो दुखी होंगे। आप सप्ताह में केवल 4 दिन हमारे साथ रह सकते हैं। इस तरह से उनके बीच झगड़ा बढ़ता गया। पत्नियों ने कहा कि तुम हमसे महीनों दूर रहो, तब भी हम दुखी नहीं होंगे बल्कि हमें प्रसन्नता होगी। पुरुषों ने कहा कि हम दस चन्द्र मास से भी अधिक तुमसे दूर रह सकते हैं और खुश रहेंगे। वे लोग 3 दिन तक झगड़ते रहे चौथे दिन देवी ति'अमोनी की मध्यस्थता में यह तय हुआ कि पुरुष और बालिग़ लड़के यह गांव छोड़कर महान नदी के उस पार जाकर बस जाएंगे और महिलाएं इस गांव में पुरुषों के बिना रहेंगी।

पत्नियों ने कहा यह ठीक है, हम इनके बिना खुश रहेंगे और पुरुषों ने कहा कि हम वह सभी काम कर सकते हैं जो महिलाएं करती हैं। उन्होंने महिलाओं से कहा कि हम तुम्हें एक या दो साल या उससे ज्यादा अवधि के लिए छोड़ने के लिए तैयार हैं क्योंकि हम तुम्हारे जितने कामुक नहीं है। नदी बहुत चौड़ी थी और उसे पार करने में पुरुषों को अधिक समय लगता, तो इस पूरे समय तक देवी ति'अमोनी ने पुरुषों का नेतृत्व किया और उन्हें नदी के उस पार पहुंचाया। अगले दो चंद्रमास तक स्त्री और पुरुष बहुत खुश थे। पुरुष शिकार में व्यस्त रहते जो उनके बाएं हाथ का खेल था। लेकिन पत्नियों के पास खाना तक नहीं था। उधर पति खा खाकर मोटे हो रहे थे जबकि इधर युवतियां पतली होती जा रही थीं,

दुबली होती जा रही थीं। जैसे-जैसे एक साल बीता पत्नियां, पतियों के दूर जाने से दुखी होने लगीं।

दूसरा साल बीतते बीतते पत्नियां, पुरुषों की घर वापसी चाहती थी, हालांकि पुरुष संतुष्ट नजर आ रहे थे। तीसरे साल के बाद पत्नियों को पुरुषों की अधिक से अधिक कामना होने लगी, लेकिन पुरुषों में यह कामना तुलनात्मक रूप से कम थी। जब चौथा साल भी आधा बीत गया तो पत्नियों ने देवी ति'अमोनी को यह कहते हुए बुलाया कि, हम चाहते हैं कि, हमारे पति हमारे पास वापस लौट आएं। हमारी लड़कियां बड़ी हो गई है लेकिन उनके शरीर पर मांस नहीं है। उन्होंने ति'अमोनी से याचना की, जिस के बाद ति'अमोनी ने महिलाओं के साथ नदी पार की और पुरुषों से घर वापसी के लिए कहा। पुरुषों की घर वापसी के पश्चात पत्नियों को उनके हिस्से का मांस मिलने लगा...

यह आख्यान सिया कबीले से संबंधित है जहां एक आदि देवी इस कबीले की छै युवतियों को छै भिन्न दिशाओं में बसने का निर्देश देने के पश्चात धरती को त्याग देती है। यहां यह तथ्य उल्लेखनीय है कि, आदि देवी उक्त समुदाय के किसी पुरुष को कोई निर्देश नहीं देती हैं, अतः यह स्पष्ट होता है कि सिया कबीला मूलतः मातृवंशीय रहा होगा। क्योंकि आदि देवी भी कबीले की युवतियों को ही प्राथमिकता देती हैं हालांकि उस कबीले की केवल एक युवती ही आदि देवी के निर्देशों का पालन करती हैं। वे सफ़ेद पत्थरों वाले एक गांव में जाकर बसती है, जहां की, स्थानीय देवी ति'अमोनी है और जिसे इस कबीले में जनसंख्या की वृद्धि की दर पर आपत्ति है, अतः वह स्त्रियों के परिवारों में से बच्चों का मार डालती है। जिससे परिवारों को अपार दुःख होता है। कहने का आशय यह है कि स्थानीय देवी जनाधिक्य के विरुद्ध है और वह चाहती है कि सिया कबीला, जनसंख्या को नियंत्रित रखे।

आदि देवी के निर्देश से यह स्पष्ट होता है कि, इस समुदाय में मेघों के देवताओं की पूजा करने का प्रावधान किया गया है। संभवतः इस का

कारण पानी की उपलब्धता या पर्याप्तता हो सकता है, अतः हमें यह मानने में कोई आपत्ति नहीं होना चाहिए कि, मेघों के देवता की पूजा को छोड़कर जनजाति की सभी देवियां स्त्री कुल से हैं। बहरहाल संतानों की अकाल मृत्यु से आहत कबीले के सम्मुख एक और संकट है कि वह यौनाचार के परिणामस्वरूप अधिक संख्या में संतानों की उत्पत्ति के लिए स्थानीय देवी के कोप का शिकार हैं, अर्थात देवी ति'अमोनी बहु-संतानोत्पत्ति के विरुद्ध है। कथा से यह स्पष्ट होता है कि युवतियां सदैव गृह कार्य में लिप्त रहती हैं, जबकि पुरुष दिन भर घर में नहीं रहते और शाम को ही घर वापस आते हैं, अतः पत्नियाँ यह मानती हैं कि पुरुषों को रात्रि काल में उनके सानिध्य की लालसा ही घर वापस लाती है, अन्यथा पुरुष घर के बाहर ही बने रहते।

उन्हें इस संदर्भ में देवी ति'अमोनी के कोप का भी ख्याल है। वे अपने पतियों से कहती हैं कि उन्हें सप्ताह में चार दिन ही युवतियों के पास आना चाहिए और इस तरह से युवतियों के सानिध्य की अवधि को लेकर पति, पत्नियों में अत्यधिक विवाद होता है और यह विवाद अगले 3 दिन तक चलता रहता है। जिसे ति'अमोनी के मार्गदर्शन में निराकृत किया जाता है। पत्नी और पतियों के दरमियान अलग अलग रहने की अवधि दिनों से बढ़ते हुए अनेकों माह तक जा पहुंचती है, अतः ति'अमोनी पुरुषों को युवतियों से पृथक रहने की एक व्यवस्था करती है और उन्हें नदी के उस पार ले जाकर छोड़ देती है। पुरुष इस स्वतंत्रता से प्रसन्न हैं क्योंकि अपने परिवारों में रहकर वे लोग अपने अपने परिवारों के जीवन अस्तित्व का रक्षण ही करते थे और अब वे केवल स्वयं के लिए उत्तरदाई हैं, अतः आखेट करते हैं और मोटे होते जाते हैं जबकि उनके बरअक्स उनकी पत्नियां खाद्य सामग्री के अभाव में दुबली होती जाती है।

इस स्त्री प्रधान समुदाय में स्त्रियों और पुरुषों के अलग-अलग रहने और पृथक पृथक जीवन यापन की व्यवस्था से पुरुषों के हट्टे कट्टे होते जाने और स्त्रियों के दुबले बने रहने का कथन यह स्पष्ट करता है कि, पुरुष

अपने परिवारों के लिए खाद्य सामग्री जुटाया करते थे जोकि बिछड़ गए परिवारों को उपलब्ध नहीं है। कथा से यह भी स्पष्ट होता है कि, सिया समुदाय आखेट और कंदमूल फल एकत्रित करने वाले युग का समुदाय है, और उन्होंने अभी तक कृषि कार्य नहीं सीखा है अन्यथा स्त्रियां भी कृषि का कार्य करके अपना भरण पोषण कर सकती थी और उन्हें पुरुषों की आवश्यकता ही नहीं पड़ती, लेकिन जीवन संकट के इस दौर में उन्हें पुरुषों की आवश्यकता होती है तथा जैसे-जैसे समय बीतता है, स्त्रियों के लिए कठिनाइयां बढ़ती जाती हैं और वे सभी अंततः देवी ति'अमोनी की सहायता से पुरुषों को वापस अपने घर लेकर आती हैं।

इस आख्यान को पढ़ते हुए प्रथम दृष्टया यह लगता है कि, स्त्रियां पुरुषों की तुलना में पराजित हुई है किंतु वास्तव में ऐसा नहीं है वे स्त्री प्रधानता के युग की निवासी हैं और उन्हें अपनी संतानों और स्वयं के लिए भोजन का प्रबंध करना आवश्यक प्रतीत हुआ, अतः उन्होंने स्वयं के सानिध्य से दूर गए पुरुषों को इसलिए वापस बुलाया क्योंकि वे लोग घर से बाहर की व्यवस्था संभालते थे, आखेट करते थे। अतः पुरुषों की घर वापसी के स्त्रियों के प्रयास को समाज को जीवित रहने के प्रयास के रूप में देखा जाना चाहिए।

कोमो

कोमो बांका सजीला, ऊंचे पूरे कद का युवक था और कबीले की परंपरा के अनुसार उसकी दो पत्नियां थी, एक उना जो बेहद खूबसूरत थी और दूसरी चाहा जोकि साधारण शक्ल-ओ-सूरत की युवती थी किन्तु स्वभाव से दयालु और कोमल हृदय थी। कोमो, उना को बहुत चाहता था लेकिन चाहा के स्वभाव ने उसका दिल जीत लिया और वो चाहा की तरफ ज्यादा ध्यान देने लगा, इस वजह से उना की ईर्ष्या और चाहा के प्रति उसकी नापसंदीदगी दिन-ब-दिन बढ़ने लगी। उसने कोमो से कहा कि आप मुझसे ज्यादा, चाहा को पसंद करते हैं जबकि मैं आपके 3 बच्चों की मां हूं। इसलिए आपको चाहिए कि आप चाहा के बजाय सिर्फ मुझे पसंद करें। यह सुनकर कोमो मुस्कुराया और उसने उना की बात का कोई जवाब नहीं दिया, इस पर उना को और ज्यादा गुस्सा आ गया, उसने कहा कि मैं आपको और आपके बच्चों को छोड़कर कहीं दूर चली जाऊंगी।

उना को यह उम्मीद थी कि कोमो उसे रोकेगा और कहेगा मैं तुमसे बहुत ज्यादा प्यार करता हूं और तुम मेरे बच्चों की मां हो, मुझसे दूर मत जाओ, लेकिन कोमो ने ऐसा नहीं कहा, हालांकि वह उना को प्यार करता था और उसे अपने प्यार पर भरोसा था। इसलिए उसने कहा, अगर तुम चाहो तो जितनी जल्दी और जहां चाहो वहां जा सकती हो। यह सुनकर उना, धीरे-धीरे अपना सामान बांधने लगी, उसने सभी प्रकार के बीज, कंद, जड़ें और जामुनों को बांधा, सभी तरह के फूलों के पौधों को भी अपने सामान के साथ रख लिया। उसकी निराशा बढ़ती जा रही थी और वह भारी क़दमों से कोमो से दूर जाने का दिखावा करने लगी। जिसे देखकर उसके तीनों बच्चे जोर जोर से रोने लगे। उना को लगा कि बच्चों

के रोते देख कर कोमो से उसे वापस बुला लेगा, किंतु ऐसा नहीं हुआ।

वह अकेले ही पहाड़ से घाटी की ओर उतरने लगी, कुछ दूर जाकर, उसने पीछे मुड़कर देखा, उसे उम्मीद थी कि, कोमो उसे रुक जाने के लिए कहेगा, थोड़ी दूर जाकर वह एक छोटी पहाड़ी पर रुकी और उसने अपने पंजों पर खड़े होकर अपने बच्चों और कोमो को देखा, फिर भी कोमो ने यह नहीं कहा कि उना वापस आ जाओ। वह रुक रुक कर दक्षिण दिशा में जा रही थी, जहां ढेर सारे पहाड़ और पहाड़ियां थे, जिनकी उनकी ऊंचाई, कोमो जितनी नहीं थी। इसके बावजूद कोमो ने उसे वापस नहीं बुलाया, उना सुदूर दक्षिण में एक ऊंचे पहाड़ की चोटी पर चढ़कर, पंजों पर खड़ी हो कर कोमो और बच्चों को देखने लगी, उसे उम्मीद थी कि इतनी ऊंचाई पर कोमो और बच्चे उसे देख लेंगे।

उना अब काफी ऊंचाई पर थी, हालांकि उसे यह विश्वास हो चला था कि, उसका पति नहीं चाहता कि वह घर वापस आए तो उसने उसी ऊंचाई पर एक कुटिया बनाने का फैसला किया। अब तक के हालात से उना को यह स्पष्ट हो गया था कि, इसी जगह से वह अपने परिवार को देख सकेगी, तो उसने, अपने साथ लाए हुए सारे बीज, जड़े और कंद निकाल कर अपने चारों तरफ रोप दिए और पहाड़ पर रहते हुए, बागवानी करने लगी। कुछ महीने गुजरे तो चाहा ने कोमो से कहा मैं अपनी मां से मिलना चाहती हूं क्योंकि मैं एक बच्चे की मां बनने वाली हूं इसलिए मुझे अपनी मां से मिलने की इच्छा हो रही है, कोमो ने पूछा कि तुम अपनी मां के पास कैसे जा सकती हो जबकि हमारे और तुम्हारे मायके के बीच में पेड़ों और पहाड़ों के अलावा कुछ भी नहीं है। मुझे यह भी पता नहीं है कि, मैं तुम्हें तुम्हारे मायके तक कैसे पहुंचा सकता हूं।

चाहा ने कहा कि आपको मेरे लिए रास्ता बनाना होगा, क्योंकि मैं अपनी मां से हर हाल में मिलना चाहती हूं। इस पर कोमो ने ऊदबिलाव, भालू, चूहे जैसे सभी जानवरों को एक साथ बुलाया, जो अपने नुकीले पंजों का इस्तेमाल कर सकते थे। कोमो के कहने से, इन जानवरों ने एक

गहरी खाई खोदी जो इतनी चौड़ी थी कि उसमें से दो डोंगी एक साथ गुजर सकें, तब कोमों ने अपने इर्द-गिर्द के पहाड़ों से इतना पानी उस खाई में डाला जब तक कि, वो खाई डोंगियों के तैरने लायक नहीं हो गई। उसने इस खाई को नुक्सैक नदी का नाम दिया जोकि आगे चलकर खारे पानी में मिल जाती है। यात्रा शुरू करने से पहले चाहा ने अपने साथ कई तरह के खाद्य पदार्थ और बीज इकट्ठे किए, फिर वह ढोंगी में बैठकर नदी में चली और आगे चलकर खारे पानी में जा पहुंची।

चाहा राह में मिलने वाले हर द्वीप में कुछ ना कुछ खाकर छोड़ती जाती, जैसे कि, सीपी, मछली, कैमास, बेर, जामुन वगैरह वगैरह। तो इन सारे द्वीपों में आज भी चाहा की छोड़ी हुई सामग्री, पौधे या जीव के रूप में मिलते हैं जिसे गांव के लोग अपनी भोजन सामग्री के रूप में इकट्ठा करते रहते हैं। इसके बाद चाहा एक समतल भूमि पर जा पहुंची और उसने फैसला किया कि वह यहीं बस जाएगी। वो बहुत देर तक अपने लिए एक बेहतर जगह चुनने की कोशिश कर रही थी। इस समय उसके जिस्म के चारों तरफ तेज हवाएं चली और बवंडर बनते गए, जिन्होंने बहुत दूर-दूर के गांव के लोगों को भी अपनी तरफ खींच लिया और निगल लिया।

चाहा वहीं खड़ी रही और तेज हवाएं उसके चारों तरफ चलती रहीं, तब सृजनहारा, उसके पास आया और उसने चाहा से कहा, तुम लेट क्यों नहीं जाती? जब तक तुम खड़ी रहोगी, इन हवाओं से बवंडर पैदा होते रहेंगे और वे सभी लोगों को अपने अंदर खींच लेंगे। यह सुनकर चाहा लेट गई और सृजनहारे ने उसे स्पाइडेन द्वीप में बदल दिया। इसके बाद उसके बच्चे के जन्म हुआ जो, एक छोटे से द्वीप के रूप में प्रकट हुआ जो स्पाइडेन के समीप था जिसे आज के समय में सेंटिनल द्वीप कहते हैं। काफी लंबा वक्त गुजर चुका था। कोमो ने अपने बच्चों के साथ उत्तर पश्चिमी तट की सीमा के पहाड़ों को छोड़ दिया और अपनी पत्नियों को देखने की कोशिश करने लगा।

दक्षिण दिशा की लंबी यात्रा, में उन्हें अपनी बाहें फैलाए हुई, उना दिखी, जिसके लगाए हुए बीज, माउंट रेनियर के चारों तरफ पेड़ बनकर बड़े हुए और फैल गए थे। पहाड़ की, निचली ढलान पर रंग बिरंगे फूल खिले दिखाई दिए। कोमो के साथ चल रहे उना के तीनो बच्चे ऊंचे ऊंचे पहाड़ों में तब्दील हो गए और खुद कोमो एक सफेद चमकदार पहाड़ की तरह से खड़ा होकर, अपने बच्चों और अपनी दोनों पत्नियों को लालसा के साथ देखता है।

यह आख्यान लुमनी कबीले का है, जो प्रकृति प्रेमी है और पहाड़ों, मैदानों, द्वीपों तथा फूलों, दरख्तों, पानी, हरियाली यहाँ तक कि, प्रकृति की हर एक शय को मनुष्यों से जोड़कर देखते हैं और जिनका मानना है कि, प्रकृति मनुष्यों से अभिव्यक्त होती है। वह प्रेम में, विरह में, और जीवन के तमाम आयामों में मनुष्यों से, प्रकृति के रूप में कायांतरित होती है। कुल मिलाकर यह कथा प्रकृति और मनुष्यों के बीच बेहतर समझ की कथा है, जिसमें मनुष्य, प्रकृति को अपने ही रूप में देखते हैं और प्रकृति मनुष्य के जीवन में रंग भरती है तथा उनके जीवन यापन एवं अस्तित्व का आधार बनती है।

इस कथा में कोमो को एक ऊंचे पहाड़ जैसा खूबसूरत मनुष्य बतलाया गया है जोकि शुभ्र वस्त्र पहनता है। यह सांकेतिक रूप से किसी पहाड़ के बर्फ से ढके होने का प्रतीक है। इसी के बरअक्स उना जो सुंदर है, किंतु स्वयं से कम सुंदर चाहा से ईर्ष्यालु हो गई है। वह कोमो पर एकाधिकार चाहती है, भले ही कोमो से उसके 3 बच्चे हो चुके हों और जिससे यह सिद्ध होता हो कि, कोमो उसे अत्यधिक प्रेम करता है। लेकिन कथा से यह तथ्य भी उदघाटित होता है कि उना की सुंदरता और उर्वरता, कोमो के प्रति सम्पूर्ण प्रेम समर्पण के लिए पर्याप्त नहीं है। कोमो उना की ईर्ष्यालु और एकाधिकारवादी प्रवृत्ति से संतुष्ट नहीं है, बल्कि उसे चाहा का दयालु और कोमल हृदय होना, भाने लगता है। हम कह सकते हैं कि लुमनी कबीला बहुपत्नी विवाही है और इस कबीले में स्त्रियों के सौंदर्य से

अधिक उनकी दयालुता और कोमल हृदय होने के गुण को वरीयता दी जाती है।

स्पष्ट है कि कोमो अपनी दूसरी पत्नी चाहा के स्वभाव पर आसक्त हो जाता है और उससे प्रेम करने लगता है जबकि चाहा से उसकी कोई संतान भी नहीं है। इस कथा में अद्भुत तरीके से उना के मन में आ जा रहे विचारों को अभिव्यक्त किया गया है। उना कोमो का घर छोड़ना नहीं चाहती लेकिन वह उसे बिछड़ जाने का नकली भय दिखाकर, प्रेम समर्पण के लिए विवश करना चाहती है, परन्तु कोमो, ऊना के इस मोह जाल से मुक्त रहता है। इसके बाद उना अपने बाहर जाने की तैयारी बड़े अनमने ढंग से करती है, क्योंकि वह वास्तव में कोमो से दूर नहीं जाना चाहती और उसकी इच्छा है कि कोमो से उसे मना ले और कहे कि मैं तुमसे, सबसे ज्यादा प्रेम करता हूं, तुम रुक जाओ यद्यपि कोमो ऐसा नहीं करता और फिर बहिरागत होती हुई, उना अपने बच्चों के रुदन पर यकीन करती है कि, शायद बच्चों से बिछड़ती हुई मां के लिए कोमो का हृदय पिघल जाए।

कथा में यह बेहद मार्मिक बिंदु है कि पत्नी अपने पति को छोड़ना भी नहीं चाहती, अपनी बात मनवाना चाहती है और इसके लिए वो घर से प्रस्थान का अभिनय भी करती है तथा सोचती है कि कोमो उसे मना लेगा, वापस आने के लिए कहेगा, लेकिन ऐसा नहीं होता, विवशता में उना घर से दूर होती जाती है और अंततः किसी ऊंचे पहाड़ की चोटी पर पंजों के बल खड़े होकर, अपने परिवार को देखती है कि उसके परिजन उसे वापस बुला ले और यह विश्वास होने पर कि परिजन उसे वापस नहीं बुलाने वाले हैं, वह वही बस जाती है, और अपने साथ लाए हुए बीज, कंद मूल इत्यादि उसी ऊंचाई पर रोप देती है ताकि प्रकृति नए सिरे से पुष्पित, पल्लवित हो और वह अपने बच्चों को उस ऊंचाई से देखती रहे। कथा आगे चलकर यह कथन करती है कि चाहा भी प्रसव पूर्व अपने मायके जाने के नाम पर कोमो से आग्रह करती है कि वो पहाड़ों के

दरमियान एक रास्ता बनाए, जहां से चाहा अपने मायके की ओर प्रस्थित हो सके।

यह कथा बेहद शानदार तरीके से आगे बढ़ती है, कोमो हतप्रभ है, किंतु चाहा के मायके जाने वाले आग्रह को टाल नहीं सकता, वह पहाड़ों और पेड़ों के बीच में से एक नदी नुमा रास्ते की कामना करता है और इसके लिए वो उन जीवो की सहायता लेता है, जिनके नाखून बड़े हैं। पहाड़ों के बीच में से नदी का गुजरना और नदी में नाव तैरने लायक पानी का होना बेहद दिलचस्प कथन है, क्योंकि पहाड़ों की बर्फ पिघल कर नदी नालों में रूपांतरित होती है और जिनका उपयोग मनुष्य, छोटी-छोटी डोंगियों में यात्रा के समय कर लिया करते हैं। बहरहाल चाहा अपनी यात्रा के पूर्व सभी तरह की खाद्य सामग्री रखती है और रास्ते में पड़ने वाले अलग-अलग द्वीपों पर अलग-अलग सामग्री छोड़ती जाती है, जोकि कालांतर में उन द्वीपों की पहचान बन जाती है और जिसके आधार पर लुमनी कबीले के लोग अपने जीवन यापन के लिए भिन्न प्रकार की खाद्य सामग्री जुटा लेते हैं। चाहा गर्भवती है वो जब तक खड़ी रहती है, तब तक हवाओं के बवंडर आते हैं लेकिन लेटते ही एक द्वीप बन जाती है और उसकी आगत संतान भी एक नन्हा सा द्वीप बन जाता है।

सांकेतिक रूप से यह कथन बेहद दिलचस्प है कि चाहा अनेकों द्वीपों में खाद्य सामग्री के स्रोत पैदा करती जाती है और अंततः स्वयं एक समतल द्वीप में परिवर्तित हो जाती है, तथ्य यह कि कोमो की दो पत्नियों में से एक, पहाड़ों की ऊंचाई पर और दूसरी द्वीपों की निर्मिति पर अपना ध्यान केंद्रित करती हैं। उना हरियाली और रंगत बिखेरती है जबकि चाहा जीवन के लिए भिन्न प्रकार की खाद्य सामग्री का प्रबंध कर देती है। इधर कोमो अपनी पत्नियों की जुदाई को महसूस करता है और उत्तरी पश्चिमी दिशा से दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थित होता है, उसके साथ उसके तीनों बच्चे हैं, जो ऊंचे कद के हो गए हैं और वे सभी एक ही स्थान पर जाकर अपनी मां उना को देखते हैं, उन्हें लगता है कि जैसे उना बाहें फैलाए

उनका इंतजार कर रही है और वे तीनों स्वयं भी पर्वतों के रूप में तब्दील हो जाते हैं।

इस तरह से ऊना और उनकी संताने पर्वतों के रूप में दृश्यमान, अस्तित्वमान हुई और स्वयं कोमो एक शुभ्र, धवल ऊंचे पर्वत के रूप में खड़ा रह गया है, वह कभी, उना और उसकी संतानों को देखता है और कभी, द्वीपों के रूप में परिवर्तित हुई चाहा और उसकी संतान जो कि, लुमनी कबीले की खाद्य सामग्री की उपलब्धता के लिए आजीवन कल्याणमयी मानी जाएगी, को देखता है बस दूर ही से...

चेन लियेन

वू तांग एक संपन्न घर का युवा था, जो चेन लियेन के पड़ोस मे अपनी छुट्टियां बिताने आया हुआ था और वह पेड़ पर चढ़कर पक्षियों के घोंसले की तलाश कर रहा था। उसने देखा कि चेन लियेन अपने बागीचे में बैठी हुई कढ़ाई करते हुए, गुनगुना रही थी। वू तांग को चेन लियेन की आवाज ने सम्मोहित कर दिया। वह फुसफुसाया, मुझे मेरी दुल्हन मिल गई है और उसने अपने माता-पिता से कहा कि शादियां करवाने वाले को तुरंत बुलवाएं और इस लड़की से मेरी शादी तय कर दें। शादी करवाने वाले ने चेन लियेन के परिवार से सामान्य चर्चा की और कहा कि चेन लियेन, वू तांग को पसंद है, लेकिन चेन लियेन ने कहा कि मैं वू तांग से अकेले में बात करना चाहती हूं। असल में चेन लियेन बचपन की एक घटना के कारण अपनी एक भौं पर घाव के निशान से चिंतित थी। वह भूल से भी आईना नहीं देखती थी, उसे वह निशान, हमेशा परेशान करता। वह अपना ज्यादातर समय अपने बगीचे मे बिताती, जहां पर बैठे हुए उसे, वू तांग ने देखा था।

शादी की बात चल रही थी, तो चेन लियेन ने शादियां करवाने वाले मध्यस्थ से कहा कि, मेरे भावी पति को स्पष्ट कहिए कि वह मुझसे मिल लें। मेरी भौं पर चोट का एक निशान है, उन्हें इस निशान को देख लेना चाहिए और तभी शादी के लिए हां करना चाहिए, मध्यस्थ वू तांग के पास गया और उससे यह बात कही तो वू तांग ने कहा, कोई बात नहीं, मैं इसी लड़की से विवाह करूंगा। शादी के दिन चेन लियेन के घर के बगीचे को शानदार फूलों से सजाया गया था और चेन लियेन दुल्हन की पोशाक में खड़ी थी और असहज महसूस कर रही थी। उसने अपनी मां से कहा कि आपको विश्वास है कि, वू तांग मुझे स्वीकार कर लेगा? चेन लियेन की मां

ने कहा, मेरी बच्ची मैं तुम्हें सौ बार बोल चुकी हूं कि वू तांग के लिए तुम्हारी चोट का निशान कोई मायने नहीं रखता और वह इसके बावजूद तुमसे शादी करना चाहता है। चेन लियेन को मेहमानों के साथ खड़े अपने भावी पति की चिंता थी कि, वह आकर, उसके घाव के बारे में कोई बात क्यों नहीं करता।

शादी का समारोह संपन्न हुआ और पति ने अपनी पत्नी का घूंघट उठाया और उसकी भौं को देखकर चुप रहा, चेन लियेन को आश्चर्य हो रहा था कि, उसका पति उसकी भौं के निशान को लेकर चुप क्यों है। उसने कहा कि, मैं जब छोटी लड़की थी तो मेरा परिवार एक लंबी यात्रा पर गया था, जहां मैं बागीचे में खेल रही थी, तभी एक छोटे बच्चे ने एक पत्थर फेंका जो मेरी भौं पर लग गया था, जिससे एक गहरा निशान बन गया है। मुझे विश्वास है कि उस लड़के ने जानबूझकर वो पत्थर मुझे नहीं मारा था। वू तांग ने अपनी पत्नी से पूछा कि, क्या तुम्हें याद है, उस छोटे लड़के का क्या नाम था? चेन लियेन ने कहा, वह भी एक आगंतुक था और मुझे उसका नाम याद नहीं है। वू तांग ने कहा, तुम जिस बगीचे में खेल रही थीं, क्या वह बीजिंग में ली परिवार का था? चेन लियेन हैरान होकर कहा, आप इस बात को कैसे जानते हैं? वू तांग ने कहा कि वह लड़का मैं ही था और मेरे माता पिता ने मुझे अक्सर बताया है कि, ली परिवार के बागीचे में, जब मैंने पत्थर फेंका था तब एक बच्ची के माथे पर गहरी चोट लगी थी। यह एक नियति है और तुम्हें लगी हुई चोट के लिए मैं ही उत्तरदाई हूं। इसलिए मुझे क्या करना है, यह मैं ही तय करूंगा।

इसके बाद वू तांग ने एक ब्रश और काली स्याही की सहायता से अपनी पत्नी की नई भौं बनाई जो पतली और घुमावदार थी, ठीक विलो वृक्ष की पत्ती की तरह। यह चेन लियेन की दूसरी भौं के जैसी थी। अब कोई नहीं कह सकता था कि, दोनों भौं में कोई अंतर है? इसके बाद, वू तांग अपनी पत्नी चैन लियेन के साथ खुशहाल जीवन व्यतीत करने लगा। वह हर एक सुबह अपनी पत्नी की चोट वाली भौं पर ब्रश और काली

स्याही से एक नई भौं बना दिया करता और इस तरह वे सदैव एक दूसरे का साथ देने के लिए और बेहतरीन जीवन जीने के लिए संकल्पित बने रहे...

इस आख्यान का संबंध चीन से है जो अत्यंत संवेदनशील और भावुक जोड़े की कथा कहता है। इस आख्यान में युवती अपनी भौं में लगी चोट से व्यथित है और वह विवाह से पूर्व अपने भावी पति को इसके संबंध में स्पष्ट रूप से अवगत कराना चाहती है, अतः वह शादी के लिए नियुक्त मध्यस्थ से इस विषय में चर्चा भी करती है कि, युवक वू तांग उसे एक बार देख ले, उससे व्यक्तिगत चर्चा कर ले। वह वू तांग को अपनी चोट का निशान दिखाना चाहती है, जिसे लेकर उसमें यह भावना दृढ़ हो गई है कि वह बदसूरत हो चुकी है। वह आइना नहीं देखती बल्कि अपना अधिकांश समय अपने बागीचे में व्यतीत करती है। वह अपने भावी पति को किसी भी प्रकार से धोखा नहीं देना चाहती। कथा से यह भी स्पष्ट होता है कि चेन लियेन, कढ़ाई और गायन जैसे कार्यों में निपुण है और अपना अधिकांश समय इन्हीं कार्यों में व्यतीत करती है। चेन लियेन, विवाह समारोह से पूर्व अपनी मां से अपनी शंका का निवारण चाहती है और विवाह के पश्चात अपने पति से हुई, चर्चा को लेकर हतप्रभ रह जाती है, जब उसे पता चलता है कि उसके बालपन की घटना का संज्ञान उसके पति को है। चेन लियेन का पति, संकेतों और चुने हुए शब्दों के माध्यम से उसे अवगत कराता है कि जिस बालक को वह घटना का मासूम सहभागी मान रही है। वह वू तांग स्वयं है।

इस आख्यान को पढ़ने से, यह प्रतीत होता है कि यह कथानक संवेदना के धरातल पर अत्यधिक प्रभावशील है। बालपन की घटना में सम्मिलित लड़की और लड़का, अब युवा होकर पति, पत्नी हो गए हैं और वे दोनों एक दूसरे के साथ अपनी परिचित, अपरिचित कथा का रहस्योदघाटन करते हैं। वू तांग कहता है कि वह चेन लियेन के बालपन का अपराधी है और उसकी जिम्मेदारी बनती है कि वह उस अपराध का

निवारण करे। चेन लियेन अपने पति को अपने बारे में स्पष्ट बताना चाहती थी और उसका पति बालपन उससे अनायास हुए अपराध का निवारण करना चाहता है, इसलिए वह उससे विवाह करता है और जीवन भर उसकी चिंता करता रहता है। कुल मिलाकर यह कथा स्पष्ट करती है कि अगर पति पत्नी के दरमियान आपसी समझ बूझ और एक दूसरे की परवाह हो तो परिवार सदैव सुरक्षित, संरक्षित रहता है। परिवार की निरंतरता का आधार जोड़े का पारस्परिक, मित्रवत व्यवहार तथा परस्पर हितैषी भावना है। वू तांग आजीवन अपनी पत्नी का श्रृंगार करता रहता है जो कि इस बात का प्रतीक है कि जिस कुरूपता के लिए वह उत्तरदाई था, उस कुरूपता को वह प्रतिदिन सुंदरता में परिवर्तित करता है और अपनी पत्नी के प्रति अपने समर्पण का उदघोष करता है। कुल मिलाकर यह कथा बालपन की चिंताओं, अपराध बोध और युवा समय में एक दूसरे से स्पष्ट बातचीत, समझ बूझ की कथा है तथा यह प्रकटित करती है कि परिवार, दंपत्ति की आपसी फ़िक्र पर निर्भर करते हैं...

असली और करीम

तकरीबन 1000 साल पहले की बात है उन दिनों ईरान का शहंशाह बे-औलाद था और वह हमेशा अफसोस करता कि उसके बाद उसकी माल-ओ-दौलत और तख्त का वारिस कौन होगा? शहंशाह के अफसोस को ध्यान में रखते हुए एक बूढ़े दरवेश ने उसे एक सेब देते हुए कहा कि, इसे अपनी पत्नी को खिला देना। इससे तुम पिता बन सकोगे। अगली सुबह जब शहंशाह की पत्नी उस सेब को खाने वाली थी कि उसकी सहेली जोकि एक पुजारी की पत्नी थी वह शहंशाह की पत्नी से गिड़गिड़ाते हुए बोली कि, मैं भी बे-औलाद हूं और मुझे भी सेब का एक छोटा सा टुकड़ा खाने दो ताकि मैं भी मां बन सकूं। इसके बाद उन दोनों ने आपस में एक समझौता किया कि उनकी जो भी संतान होंगी, वो बड़े होकर आपस में शादी करेंगे।

कुछ समय बाद शहंशाह के घर पुत्र और पुजारी के घर पुत्री का जन्म हुआ पुत्र का नाम करीम और पुत्री का नाम असली रखा गया। जैसे-जैसे दोनों बच्चे बड़े होते गए वे एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते गए, यूं कहें कि मोहपाश में बंधते गए। हालांकि विडंबना ये हुई पुजारी ऑर्थोडॉक्स ईसाई था और शहंशाह मुस्लिम। तो पुजारी का परिवार यह नहीं चाहता था कि, उसकी पुत्री किसी मुस्लिम परिवार में ब्याही जाए। इसलिए वह राजधानी को छोड़कर कहीं दूर जा बसा। असली की गुमशुदगी के दौर में करीम ने अपने शहंशाह पिता की दौलत का परित्याग करते हुए, एक साधारण जिन्दगी गुज़ारना शुरू कर दी। वो अपना ज्यादातर वक़्त असली के लिए प्रेम गीत लिखने और गाने में बिताने लगा।

पुजारी चाहता था कि, उसकी पुत्री का विवाह उसके किसी स्वधर्मी युवा के साथ हो जाए। इस घटनाक्रम से चिंतित करीम और असली के सामने यह संकट खड़ा हो गया कि उन्हें अपना ब्याह जल्द करना ज़रूरी लगा। कहते हैं कि, तुर्की के पाशा ने पुजारी को इस प्रेम विवाह के लिए राजी हो जाने की हिदायत दी तो पुजारी ने अपनी पुत्री को ऐसी मन्त्रपूरित पोशाक दी, जिसे खोला नहीं जा सकता था और करीम को एक अभिशप्त कमीज दी, फिर कहा कि ये ब्याह का तोहफा है। करीम ने वो कमीज पहन ली लेकिन एक रोज वह कमीज के बटन खोलने में हड़बड़ी कर बैठा और उस अभिशापित कमीज के कारण से जलने लगा। अपने प्रेमी को धू धू कर जलते देखकर असली भी आर्तनाद करती हुई प्रेमी के साथ लिपटकर जल मरी।

तुर्की में प्रचलित और बहुश्रुत ये प्रेम कथा बे-औलादों की ईश्वरीय मदद स्वरुप प्राप्त, एक ही सेब को खाकर, संतानवान हो जाने को, लेकर कही गयी है किन्तु एक आशीष, एक ही सूत्र से प्राप्त संततियों में धार्मिक भेदभाव/वैमनस्य और पत्नियों के मध्य हुई वचन-बद्धता को पुरुषों के धार्मिक मिथ्याभिमान के कारण भंग हो जाने की स्थिति को भी दर्शाता है। प्रेमी अपनी प्रेमिका के लिए राजपाट और पैतृक संपत्तियों का परित्याग कर देता है और प्रेमिका के लिए अनुराग/प्रेम और आसक्ति भरे गीत लिख कर अपने समर्पण का अहसास कराता है। प्रेम गीत जिनके कारण उसे तुर्की के पाशा का नैतिक समर्थन प्राप्त होता है।

ये कथा जन्म की तरह से मृत्यु के आशीष सह अभिशाप के विश्वास पर आधारित है, जहां प्रेम मर कर अमर हो जाता है और यह उसका पुनर्जीवन है, अशरीरी किन्तु जग व्यापित। समय से परे। अगर हम चाहें तो प्रातीतिक रूप से यह भी कह सकते हैं कि, यह आख्यान, हृदय की दग्धता/ज्वलनशीलता का आख्यान है। प्रेम में दग्धता करीम और असली की तरह। प्रेम में सांसारिक विरह, किन्तु पारलौकिक मिलन के स्थायी संकेतों के साथ। अंधकार जो मनुष्यों के दरम्यान मौजूद घृणा है, छद्म

अभिमान हैं, भेद भाव है। कहना ये कि, अगर मैं नहीं जलूंगा, अगर तुम नहीं जलोगे, अगर हम नहीं जलेंगे, तो अंधियारा आलोकित कैसे होगा?

ज़ुहरा और ताहिर

यह कथा तुर्की के सुल्तान और वजीर की है जिनके घर कोई औलाद ना थी और बे-औलाद रहने का दर्द उन्हें खाए जा रहा था। एक रोज वे दोनों वेश बदलकर बाज़ार से गुज़रे जहां पर उन्होंने एक दरवेश को देखा, सुल्तान ने सोचा कि दरवेश का इम्तहान लिया जाए तो उसने कहा कि आप यह बताएं कि हम दोनों की ख्वाहिश क्या है? दरवेश ने कहा कि आप दोनों बे-औलाद हैं और आप दोनों को औलाद की ख्वाहिश है। ये सुनकर सुल्तान समझ गया कि दरवेश सच में ज्ञानी संत है। उसने दरवेश से प्रार्थना की कि, दरवेश उन दोनों की मदद करें और उन्हें संतानवान होने का आशीर्वाद दे। यह सुनते ही दरवेश ने अपने थैले में से एक सेव निकाला और उसके दो टुकड़े करके एक टुकड़ा सुल्तान को दिया और दूसरा टुकड़ा वजीर को देते हुए कहा कि आप दोनों इसे आज रात में ही खा लें। जल्दी ही आपके घर किलकारी गूंजेगी। सुल्तान के घर एक सुकन्या जन्म लेगी जिसका नाम ज़ुहरा रखा जाए और वजीर के घर एक पुत्र का जन्म होगा जिसे ताहिर नाम दिया जाए।

इसके बाद जब दोनों बच्चे बालिग़ हो जाएं तो उन दोनों की शादी कर दी जाए अगर उन दोनों की शादी नहीं की गई तो आप दोनों उनसे हाथ धो बैठेंगे, लेकिन ताहिर और ज़ुहरा का नाम युगों युगों तक लिया जाएगा, ऐसा कहते हुए दरवेश वहां से चला गया। सुल्तान और वजीर ने वही किया जैसा कि, उनसे दरवेश ने कहा था। कुछ महीनों के बाद उनके घर पुत्री और पुत्र का जन्म हुआ जिनका नाम दरवेश से किये गए वादे के अनुसार ज़ुहरा और ताहिर रखा गया। ताहिर और ज़ुहरा जवान हो चले थे और शिद्दत से एक दूसरे की मोहब्बत में गिरफ्तार हो गए थे। वह दोनों

चाहते थे कि, जल्द से जल्द उन दोनों की शादी करा दी जाए, लेकिन इस दरम्यान सुल्तान की बेगम को यह एहसास हुआ कि, उसकी सल्तनत में वजीर का ओहदा छोटा है इसलिए उसका बेटा, सुल्तान की पुत्री के साथ शादी करने लायक नहीं माना जाना चाहिए।

उसने यही तर्क अपने पति को दिया और उसे यह समझाया कि पद क्रम में सुलतान, वजीर से श्रेष्ठ है अतः अपनी लड़की, किसी छोटी हैसियत वाले व्यक्ति के घर में नहीं देना चाहिए। हालाँकि ताहिर ने ज़ुहरा से अपनी मुहब्बत और शादी की जिद को छोड़ने से इंकार कर दिया। इसलिए ताहिर को बंदी बनाकर तहखाने में डाल दिया गया लेकिन ताहिर किसी तरह से वहां से बच निकला। दूसरी तरफ ज़ुहरा को महल के एक कमरे में बंद कर दिया गया ताकि समान श्रेणी के परिवार में उसका रिश्ता किया जा सके। जब ताहिर ने ये खबर सुनी तो वो परेशान हो गया और वेश बदलकर ज़ुहरा का हाल चल जानने वापस आया। लेकिन उसे पहचान कर फिर से गिरफ्तार कर लिया गया और सुल्तान ने यह तय किया कि उसे फांसी दे दी जाएगी। ताहिर ने सुल्तान से गुज़ारिश की, कि मुझे फांसी पर टांगने से पहले खुदा से दुआ मांगने दी जाए।

दुआ में ताहिर ने अपनी मृत्यु मांगी। उसकी दुआ कुबूल हुई और ताहिर फांसी पर चढ़ाए जाने से पहले सजदे में ही गिर कर मर गया। अपने प्रेमी की मृत्यु से ज़ुहरा इतनी विचलित हुई कि उसने शोक संतप्त होकर अपना नकाब उतार कर ताहिर के शव पर रखते हुए वहीं अपने प्राण त्याग दिए। कालांतर में उनकी कब्रें एक दूसरे के बगलगीर होने की तर्ज पर बनाई गईं।

तुर्की का यह आख्यान कहने सुनने में असली और करीम की प्रेम कथा जैसा लगता है, लेकिन यहां पर एक ही आशीषित सेब के खाने से पैदा होने वाले बच्चे एक ही धर्म के अनुयाई थे। किन्तु सुलतान और उसके वजीर का रिश्ता लगभग मालिक और नौकर जैसा माना गया। असली और करीम की कथा में असली का पिता प्रेम और ब्याह के विरुद्ध

था। लेकिन ताहिर और ज़ुहरा की कथा में लड़की की माता यानि सुल्तान की, पत्नी अपनी सामाजिक, राजनीतिक श्रेष्ठता के दंभ में अपनी पुत्री का ब्याह, अपने वजीर के पुत्र ताहिर से नहीं करना चाहती थी। अतः उसने अपने पति को भी यही नसीहत दी कि वजीर का बेटा उनसे सामाजिक, राजनीतिक रूप से हीन है। इसलिए हम अपनी पुत्री का ब्याह किसी छोटे सामाजिक राजनीतिक स्तर के व्यक्ति के साथ नहीं कर सकते, सुल्तान को उसका यह तर्क भा गया और वह दरवेश की नसीहत को भूल गया कि बालिग़ होने पर ताहिर और ज़ुहरा का ब्याह नहीं किया गया तो वजीर और सुल्तान अपनी संतानों को खो बैठेंगे।

हालांकि इस स्थिति में उनकी संतानों की यशगान युगों युगों तक बखाना जाएगा। बहरहाल लगता यही है कि, ताहिर और ज़ुहरा की जोड़ी असमता का शिकार हुई और उन्हें असमय ही अपने प्राण गवाना पड़े। हम ये कह सकते हैं कि, इस आख्यान में प्रेमी युगल के एक नहीं हो पाने का कारण धार्मिक विषमता नहीं थी। बल्कि आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक असमानता थी। अगर हम ध्यान दें, तो आशीषित फल से संतान होने के अनेकों उद्धरण भारत में भी सुनाई देंगे, पढ़े जाएंगे, कहे जाते हैं। मोटे तौर पर यह कथा आशीष की सांसारिक विफलता की कथा है। जहां पर असमानता, ईश्वरीय आशीष को धता बता देती है और आशीष को मृत्यु के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प दिखाई नहीं देता, लेकिन कथा के नायक और नायिका की युगों युगों तक प्रसिद्धि का आश्वासन यह कहता है कि, दैहिक रूप से ना मिल सके जोड़े, परलोक या भू-लोक में अनंत काल तक अपने प्रेम के लिए चीन्हे जाएंगे। कहते हैं कि ताहिर और ज़ुहरा की कब्रें कोन्या में है, जहां फिलहाल एक म्यूजियम भी है जो इन दोनों के दु:खद अंत की अनंत कथा कहता है।

इरोस और साइके

मुद्दतों पहले की बात है जब साइके अपनी दो बहनों की तुलना में छोटी थी लेकिन वह बेहद खूबसूरत थी और नश्वर मनुष्यों के दरम्यान ऐसे दिखाई देती जैसे कोई देवी। लोग उसकी ख़ूबसूरती को देखने महल में आया करते और उसकी प्रशंसा यहां तक की, पूजा भी करते। वे लोग कहते कि, प्रेम और सौंदर्य की देवी अफ़रोडाइट भी साइके की तुलना में कुछ नहीं है। उन्होंने अफ़रोडाइट के मंदिरों के बजाय साइके के महल के चक्कर लगाना शुरू कर दिए थे, अतः अफ़रोडाइट के मंदिरों की वेदियों की राख ठंडी पड़ने लगी थी तथा कोई भी मूर्तिकार अफ़रोडाइट की मूर्ति नहीं बनाना चाहता था और सभी लोग यह विश्वास करने लगे थे कि, राजा की बेटी साइके अद्भुत है। देवी अफ़रोडाइट इस स्थिति से नाराज थी और उन्होंने अपने पुत्र इरोस से कहा, तुम जाओ और अपनी शक्ति के प्रयोग से उस छोटी, तुच्छ लड़की से प्रेम करो, इरोस अपनी मां के कहने से ऐसा करने के लिए तैयार तो हो गया, लेकिन वह स्वयं भी साइके की मोहब्बत में गिरफ्तार हो गया और उसने तय किया कि, वह अपनी मां को कुछ नहीं बताएगा।

इधर साइके को आश्चर्य होता कि, सभी पुरुष उससे प्यार करने के बजाय, उसकी प्रशंसा और पूजा करने में ही प्रसन्न बने रहते हैं। वे साइके को देखने आते और किसी अन्य लड़की से विवाह कर लेते, यहां तक कि, साइके की दोनों बड़ी बहनों का विवाह भी शानदार तरीके से संपन्न हुआ जबकि, वो दोनों साइके की तुलना में साधारण शक्ल सूरत की मालिक थीं। साइके हमेशा उदास और अकेली रहती, उसे लगता कि, कोई भी पुरुष उसे पत्नी के रूप में नहीं चाहेगा, बल्कि केवल उसकी तारीफ ही करता रहेगा। साइके की इस मनः स्थिति से उसके माता-पिता अत्यंत

चिंतित हो गए थे। साइके के पिता, देवता अपोलो से परामर्श करना चाहते थे कि, उन्हें साइके के लिए अच्छे पति की खोज के लिए, क्या क्या करना चाहिए। उस समय हुई आकाशवाणी के अनुसार अपोलो ने कहा कि, साइके को पहाड़ की चोटी पर ले जाकर अकेला छोड़ दिया जाए। जहां वह रहे और फिर उसके लिए पति स्वरूप चुना गया, पंखों वाला भयानक सांप जो देवताओं से भी अधिक शक्तिशाली था, आकर साइके को अपनी पत्नी बतौर ले जाए।

साइके के पिता के लिए यह अत्यंत निराशाजनक स्थिति थी और वह दु:खी मन से, रोती हुई साइके को पहाड़ की चोटी पर ले गए, जहां उसे असहाय और भाग्य के भरोसे छोड़ दिया और स्वयं अपने महल में शोक संतप्त कैदी के समान रहने लगे। साइके ठंडी सर्द काली रात में रोते हुए प्रतीक्षा करती रही, तभी हवा का एक नरम झोंका, उस तक पहुंचा उसे लगा कि कोई उसे हवा में उड़ा कर ले जा रहा है, पहाड़ी चट्टान के ऊपर से, फूलों भरे घास के मैदान में तब साइके ने अपना दर्द भुलाने और सोने की पूरी कोशिश की। तभी वह झरने में बहते हुए पानी की आवाज सुनकर सतर्क हो गई और उसने अपनी आंखें खोलीं तो देखा कि, वह एक शानदार महल में है। जिसमें सोने चांदी के स्तंभ और बड़े कीमती पत्थरों वाला फर्श है। जिसे देखने से यह लग रहा था कि, वह देवताओं के लिए निर्मित किसी भवन में है, तभी साइके को सुनाई दिया महल में तुम्हारा स्वागत है। अंदर आओ डरो मत, स्नान करो। हम तुम्हारे लिए रात्रि कालीन भोजन का प्रबंध करेंगे साइके ने इतने स्वादिष्ट व्यंजनों का स्वाद कभी नहीं चखा था। उसे अपने चारों तरफ मधुर संगीत सुनाई दे रहा था। वह सारा दिन अकेली थी, लेकिन उसे अंदाज़ था कि, उसका पति रात को उसके पास आएगा, रात में उसने महसूस किया कि, उसका पति उसके कानों में फुसफुसा रहा है। उसे यह विश्वास हो गया कि, यह कोई सांप या राक्षस नहीं बल्कि उसे प्यार करने वाला पति है, जिसकी उसे हमेशा से कामना थी।

अगले कई दिन आनंदमय थे लेकिन साइके को इस बात का दुख

था कि, वो रात में अपने पति को देख नहीं पाती और दिन भर अकेली रहते हुए, उकताने लगती, उसे अपने परिवार की याद आती कि, वे लोग उसका शोक मना रहे होंगे जबकि वह जीवित है और खुश है। वो चाहती थी कि, कम से कम उसकी सगी बहनें इस महल में आयें और लौटकर उसके माता-पिता को बताएं कि, साइके बहुत प्रसन्न है, उसने अपने पति से अपनी इच्छा प्रकट की, तो उसने कहा कि, मैं तुम्हारी बहनों को यहां आने तो दूंगा लेकिन तुम्हें सावधान कर रहा हूं कि, उन्हें अपने ऊपर हावी मत होने देना। अगर वे लोग तुम पर हाबी हो जाएंगी तो मेरे और तुम्हारे संबंधों को खत्म कर देंगी। साइके ने कहा मैं ध्यान रखूंगी। अगले दिन उसकी दोनों बहनें हवा के झोंके के साथ उसके पास आई और वे एक दूसरे को देख कर बहुत खुश हुईं। उसकी दोनों बहने महल के खजाने को देखकर आश्चर्यचकित थी और रात के समय अद्भुत संगीत और मदिरा का आनंद लेते हुए वह अपनी छोटी बहन के भाग्य से ईर्ष्या करने लगी। उन्हें जिज्ञासा थी कि, साइके का पति कैसा होगा? उन्होंने उसके व्यवसाय और रंग रूप के बारे में जानना चाहा तो साइके ने कहा कि, वह एक शिकारी है।

लेकिन साइके की दोनों बहनों को यह विश्वास नहीं हुआ कि, एक साधारण शिकारी इतना अमीर भी हो सकता है। उन्होंने सोचा कि, वह या तो राजकुमार होगा अथवा देवता। वे दोनों जानती थीं कि साइके की तुलना में उनके पास धन संपदा और सुख आदि कुछ भी नहीं है अतः ईर्ष्यालु होकर उन्होंने साइके को बर्बाद करने की एक योजना बनाई। उन्होंने विदाई के दिन साइके से कहा कि, उसका पति निश्चित रूप से एक भयानक सांप होगा जैसा कि, आकाशवाणी में बताया गया था। उन्होंने कहा वह तुम्हें इसलिए नहीं दिखाई देता कि, तुम उसे देखोगी तो तुम्हें उससे घृणा हो जाएगी। प्यारी साइके, तुम उस भयानक सांप के साथ कैसे सो सकती हो? उस दिन के बाद साइके हमेशा सोचती कि, उसका पति उसे दिखता क्यों नहीं है? उसका रहस्य क्या है? उसने अपने जीवन के बारे में मुझे क्यों नहीं बताया? अगर वह दिन के उजाले में नहीं दिखना

चाहता तो जब रात में वह गहरी नींद में होगा तो मैं उसे देखने के लिए एक मोमबत्ती जला दूंगी और अगर वह सांप हुआ तो उसे मार डालूंगी और अगर इंसान हुआ तो मैं खुशी से उसके साथ सो जाऊंगी।

एक रात जब उसका पति सुकून की नींद सो रहा था तो उसने हिम्मत करके मोमबत्ती जलाई और उसके पैर की उंगलियों की ओर से उसके चेहरे के पास जा पहुंची। उसे एक गहरी राहत हुई, क्योंकि वह बेहद खूबसूरत आदमी था, जिसे देखकर साइके अपने पागलपन पर लज्जित होकर अपने घुटनों पर गिर गई और उसने देवताओं को धन्यवाद दिया, लेकिन झुकते समय मोमबत्ती की एक बूंद उस खूबसूरत युवक की पीठ पर जा गिरी और वह दर्द से कराहते हुए उठा। उसने रोशनी देखी और वह साइके के अविश्वास का सामना करते हुए, एक भी शब्द बोले बिना अपने शयन कक्ष से बाहर चला गया साइके उसके पीछे भागी, लेकिन वह उसे देख नहीं सकती थी और उसके दिल की आवाज सुनकर दुखी थी कि, प्यार भरोसे के बिना जीवित नहीं रहता। वह अगले कई दिनों तक रोती रही वह चाहती थी कि, पति के लिए अपने प्रेम को सिद्ध करे।

चूंकि साइके को कुछ पता नहीं था, तो यह जानने के लिए कि, क्या करना उचित होगा, वो अफरोडाइट के मंदिर जा पहुंची और उसने प्रार्थना की कि, अफरोडाइट साइके के पति को साइके के पास वापस लाने में, उसकी मदद करें, अफ़रोडाइट के मन में साइके के प्रति ईर्ष्या अभी भी शेष थी और वह उसका बदला चाहती थीं, इसलिए उसने साइके से कहा कि, उसे पूरी तरह से विश्वास होना चाहिए कि, साइके उसके पुत्र के लिए उपयुक्त पत्नी है। इसके लिए साइके को तीन चुनौतियां पूरी करनी होंगी, यदि वो इनमें से किसी एक में भी विफल रही तो इरोस हमेशा हमेशा के लिए उससे दूर हो जाएगा। साइके इस बात पर सहमत हो गई, तो अफरोडाइट उसे एक पहाड़ी पर ले गई और उसने गेहूं, खसखस, बाजरा और अन्य कई छोटे-बड़े बीजों का एक ढेर दिखाया और

कहा कि, अगर तुम दोपहर तक इन बीजों को अलग अलग कर दोगी तो ठीक है, वरना मैं तुम्हें इरोस को फिर कभी देखने नहीं दूंगी।

यह एक कठिन काम था जिसे देखकर साइके की आंखों में आंसू भर आए, उसी समय चीटियों का एक समूह वहां से गुजर रहा था, उन्होंने साइके को निराश देखकर कहा, चलो उसकी मदद करते हैं और चीटियों ने कड़ी मेहनत के बाद सारे बीजों को अलग-अलग करके छोटे-छोटे ढेर बना दिए हालांकि अफ़रोडाइट यह देखकर बहुत नाराज हुई और उसने कहा कि तुमने यह काम खुद नहीं किया है, इसलिए तुम बिना खाना खाए सख्त जमीन पर अपना समय गुज़ारो। अफ़रोडाइट यह सोच रही थी कि, अगर साइके लंबे समय तक मेहनत करती रहेगी तो अफ़रोडाइट की सुंदरता को चुनौती देने वाला कोई नहीं होगा और उसने यही करने का निर्णय लिया। इस दरम्यान उसने अपने पुत्र इरोस को उसके कक्ष से बाहर नहीं आने दिया, जहां वह साइके के विश्वासघात का शोक मना रहा था।

अगली सुबह अफ़रोडाइट साइके के लिए एक नया काम लाई, अब साइके को एक झरने का गन्दा और काला पानी, एक बोतल में भरना था। साइके ने महसूस किया कि झरने की सभी चट्टाने फिसलन भरी थी और वहां बहुत तेज पानी बहता था इसलिए उस जगह पर पैदल नहीं जाया जा सकता। उसे निराश और दुखी देखकर एक चील ने साइके की मदद की और झरने का काला पानी भरकर बोतल साइके को वापस दे दिया। इस पर अफरोडाइट फिर से नाराज हुई और उसने कहा कि, तुमने यह काम किसी और की मदद से किया है। इसलिए मैं तुम्हें एक मौका और दूंगी कि, तुम अपने आप को सिद्ध कर सको। अबकी बार अफरोडाइट ने साइके को एक संदूक दिया, जिसे उसे पाताल लोक में ले जाना पड़ा जहां मृतकों की रानी पर्सेफोन, संदूक में अपनी सुन्दरता का एक अंश डाल देती।

साइके पाताल लोक की ओर गई, जहां उसे नाव से एक किनारे से दूसरे किनारे की ओर जाना था तो घनघोर अंधेरे में नाविक में उसकी मदद

की और साइके जल्द ही पर्सेफोन के सामने मौजूद थी, जिसने संदूक में अपनी सुंदरता एक अंश डाल दिया और साइके संदूक को लेकर अफरोडाइट के पास वापस आ गई, जिसे देखकर अफरोडाइट बहुत गुस्सा हुई और उसने चिल्लाते हुए कहा कि, वह हमेशा साइके को अपना गुलाम बना कर रखेगी और कभी यहां से जाने नहीं देगी। इसी समय उन सारे देवताओं को जो अफ़रोडाइट की गलत कार्यवाही को देख रहे थे, बहुत बुरा लगा और उन्होंने साइके की मदद करने की गरज से, इरोस को सब कुछ बताने के लिए हेर्मेस देव को भेजा।

हेर्मेस देव ने इरोस को बताया कि, उसकी पत्नी ने कौन-कौन से कष्ट सहे हैं यह सुनकर, इरोस के मन में पत्नी के विश्वासघात का जो दुःख था वह दूर हुआ और उसने अपने कमरे से बाहर आकर देखा कि साइके अफ़रोडाइट के बागीचे में निढ़ाल पड़ी हुई थी। इसके बाद इरोस और साइके अपने प्यारे से महल में एक साथ रहते हैं। जहां रंगीन और खुशबूदार फूलों की क्यारियां हैं हालांकि साइके ने इरोस को इस बात के लिए राजी किया कि, वह अपनी मां अफरोडाइट को इस बात के लिए क्षमा कर दे कि, उसने साइके को प्रताड़ित किया और दुःख दिए, कालांतर में उन दोनों की शादी के समय देवता जियूस ने साइके को अमृत पिला कर अमर बना दिया, अब अफ़रोडाइट भी खुश थी कि, साइके अपने पति के साथ स्वर्ग में रह रही थी और पृथ्वी के सारे पुरुष साइके को भूलकर फिर से देवी अफ़रोडाइट की पूजा कर रहे थे...

यह आख्यान प्रथम दृष्टयः भारत के कामदेव और रति जैसे युगल का बोध कराता है। इस आख्यान में इरोस एक देवी पुत्र हैं और साइके नश्वर देह धारी राजा की पुत्री है, जो तीनों बहनों में सबसे छोटी है। उसकी दोनों बहने सौंदर्य के मुकाबले में साइके का पासंग भी नहीं है। लेकिन राजा को उनका विवाह करने में कोई असुविधा नहीं होती, असल में साइके बेहद खूबसूरत है और उस राज्य के अधिकांश युवा, महल आकर उसके सौंदर्य की प्रशंसा करते हैं किन्तु उनके व्यवहार से उपासना

जैसे भाव प्रकटित होते हैं। यही तथ्य साइके को असुविधा में डालता है कि, उसके प्रशंसक उसके पास आते हैं किंतु उससे प्रेम के बजाए उपासना या स्तुति जैसा भाव प्रकट कर लौट जाते हैं। इसलिए साइके का ख्याल है कि, उसे बेहतर पति जो कि उसे अटूट प्रेम करे, कैसे प्राप्त होगा? वह उदास रहती है और उसके माता-पिता भी उसकी चिंता में घुले रहते हैं।

साइके के माता पिता, देवता अपोलो से मिलकर साइके के ब्याह की चिंता करते हैं, किंतु आकाशवाणी से यह तथ्य प्रकट होता है कि, साइके जैसी परम सुंदरी का ब्याह, किसी उड़ने वाले भयानक सर्प से होना सुनिश्चित है। अगर हम गौर करें तो भारतीय कथाओं में भी आकाशवाणी का उल्लेख अक्सर भविष्य कथन के लिए किया जाता है, जैसा कि साइके के संदर्भ में दिखाई देता है। देवता अपोलो की सलाह के अनुसार माता पिता साइके के ब्याह की चिंता करते हुए उसे पहाड़ की चोटी पर छोड़ देते हैं, ताकि उसका राक्षसनुमा सर्प पति, जोकि देवताओं से भी अधिक शक्तिशाली है, उसे अपनी पत्नी बनाकर ले जाए। यहां पर यह विषयान्तर करना उचित होगा कि, मनुष्य और देवताओं में, नश्वरता और अमरता का बोध, असल में यथार्थ परक ना भी हो, तो भी यह संकेत देता है कि, कथित देवताओं का जन्मदाता स्वयं कल्पनाशील मनुष्य है और वो ही स्वयं की नश्वरता का उदघोष भी करता है।

इस कथा में साइके नश्वर युवती है। भूलोक में लोग उसके सौंदर्य की ख्याति के चलते प्रेम और सौंदर्य की देवी अफ़रोडाइट की उपासना करना भूल जाते हैं, यहां तक कि, अफ़रोडाइट के मंदिर में यज्ञ की वेदियां सूनी हो गईं लगती हैं और मूर्तिकार साइके की तुलना में देवी अफ़रोडाइट की मूर्तियां बनाना बंद कर देते हैं। बस यह तथ्य देवी अफ़रोडाइट को नागवार गुजरता है कि, धरती की तुच्छ प्राणी साइके अपनी खूबसूरती के कारण देवी अफरोडाइट पर भारी पड़ जाए और धरती के लोग देवी अफरोडाइट की उपासना बंद कर दें, साइके को सबक सिखाने की गरज

से अफ़रोडाइट अपने पुत्र इरोस को धरती पर भेजती है किंतु वह स्वयं ही साइके के मोहपाश में बंध जाता है और अपनी मां को इस तथ्य से अनभिज्ञ रखना तय करता है। कहना उचित होगा कि, देवी पुत्र इरोस, अमर देवता, इरोस, नश्वर युवती साइके के प्रेम में विवश हो जाता है।

इस कथा में देवी अफरोडाइट का व्यक्तित्व साधारण मनुष्य के जैसा है, वह साइके से ईर्ष्या करती है और उसे समाप्त करने या नीचा दिखाने का कोई अवसर नहीं छोड़ती, जबकि उसका यह कृत्य, देवताओं की गरिमा अथवा महिमा के अनुरूप नहीं है। भले ही कथा के अंत में यह ज्ञात होता है कि, अफ़रोडाइट, साइके को अपनी बहू के रूप में स्वीकार कर लेती है। क्योंकि साइके, देवता जियूस की कृपा से अमरत्व प्राप्त कर लेती है। असल में यह अमरत्व, साइके के कष्टों और देवी अफरोडाइट के गरिमाहीन व्यवहार का प्रतिसाद है, जिसे ब्याह के तोहफे की शक्ल में दिया गया है, अमर हो गई साइके को धरती के लोग भूलकर पुनः अफ़रोडाइट की उपासना करने लगते हैं। किंतु कथा का यह अंश अजीब और विरोधाभासी है कि, अफ़रोडाइट प्रेम और सौंदर्य की देवी है, किन्तु वह साइके से घृणा करती है, ईर्ष्या रखती है।

इस आख्यान में अफ़रोडाइट का व्यवहार कमोबेश साइके की बड़ी बहनों जैसा है जोकि, अपनी छोटी बहन के सुखी और प्रेम पूर्ण जीवन से ईर्ष्यालु होकर साइके और इरोस के बीच संबंध टूटने का कारण बनती हैं। अगर हम चाहें तो यह भी मान सकते हैं कि नश्वर देह धारी स्त्री या पुरुष अगर अपना धैर्य ना खोयें तो वे भी अमरत्व को प्राप्त कर सकते हैं। अफ़रोडाइट और साइके के प्रकरण में अफ़रोडाइट एक क्रूर स्त्री के तौर पर नजर आती है किंतु साइके एक आज्ञाकारिणी और धीरज ना खोने वाली युवती का उद्धरण पेश करती है। इसी दरम्यान साइके की मदद चीटियां, चील और नाविक करते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि, बेहतर इंसान की मदद चीटियों जैसे तुच्छ जीव, चील जैसे उड़न दक्ष परिंदे और नदी में गंतव्य तक पहुंचाने वाले नाविक अपरिहार्य रूप से करते हैं।

असल में इरोस, जोकि प्रेम और लालसा का देवता है, प्रेम में नि:शर्त पारस्परिक विश्वास की कामना करता है और उसकी यह कामना, बड़ी बहनों के द्वारा उकसाई गई साइके के व्यवहार से आहत हो जाती है, अतः वह साइके से मुंह फेर लेता है, भले ही बाद में देवताओं की कृपा से उसे सत्य का ज्ञान हो जाता है और वह पुनः साइके के साथ प्रेमासक्त जीवन व्यतीत करने लगता है। जहां वह और साइके दोनों ही देव तुल्य है।

अल्कियोनी और सेइक्स

सेइक्स, ट्रेचिस का राजा था और अल्कियोनी उसकी खूबसूरत पत्नी। उनके सौंदर्य पर देवता भी मुग्ध थे और जन सामान्य भी। अपने सौंदर्य के प्रति लोगों के रुझान को देखते हुए वे दोनों स्वयं को जिउस और हेरा की तरह से समझने लग गए थे। जिसके कारण जिउस उन पर बहुत नाराज हुआ और उसने उन दोनों को दंडित करने के बारे में सोचा। असल में सेइक्स इयोसफरस का पुत्र था जबकि उसकी पत्नी अल्कियोनी, इनरेट की पुत्री थी तथा उसके पिता इयोलिया के राजा थे। वे दोनों परस्पर प्रेम लीन रहते। वे दोनों जिउस के कहर से बचने की चिंता करने के बजाए स्वयं के सौंदर्य पर और एक दूसरे की प्रेम पर आत्ममुग्धता की सीमा विश्वास करते थे। एक दिन सेइक्स ने अपने भाई डेंडीलायन को खो दिया जो कि बेहद साहसी और स्वभाव से बेहद कठोर था। डेंडीलायन की एक खूबसूरत बेटी थी, जिसका नाम चियोनी था, वह इतनी मोहक थी कि, देवता भी उसके प्रेम में पड़ गए थे।

कहते हैं कि, चियोनी ने जुड़वा बच्चों को जन्म दिया, जिनमें से एक देवता हेमीज और दूसरा देवता अपोलो की संतान था। गौरतलब बात यह है कि, चियोनी को देवताओं ने ये महसूस कराया कि, वो विश्व की सबसे अधिक सुंदर महिला है। यहां तक कि, देवी आर्टेमिस से भी सुंदर। इस दावे को जानकर देवी आर्टेमिस ने चियोनी की जीभ पर एक तीर चलाया और उसे मार डाला। डेंडीलायन अपनी बेटी के अंतिम संस्कार में फूट फूट कर रोया, हालांकि उसके भाई सेइक्स ने उसे बहुत सांत्वना दी, लेकिन उसने अपनी पुत्री की चिता पर कूदकर जान देने की चेष्टा की और कम से कम तीन मौकों पर सेइक्स ने उसकी आत्मघाती कोशिश को नाकाम किया। आत्महत्या के चौथे प्रयास में डेंडीलायन बहुत तेज गति से दौड़ते

हुए माउंट पर्नासेस की चोटी से कूद पड़ा पर उसके जमीन पर गिरने से पहले ही अपोलो ने उसे बाज के रूप में बदल दिया।

इस तरह से सेइक्स ने अपने भाई और भतीजी को खो दिया था और अगले कई दिनों तक, उनके शोक में लगा रहा। इस चिंता काल में और कुछ अपशकुनों को ध्यान में रखकर सेइक्स ने डेल्फी में आकाशवाणी जैसे परामर्श या सुझाव लेने के बारे में सोचा। असल में अल्कियोनी नहीं चाहती थी कि, उसका पति, उसके भाई की मृत्यु के समय क्लारोस जाए, क्योंकि उसे मालूम था कि, समुद्र का पानी बेहद खतरनाक है। उसे यह भी मालूम था कि, मौसम के हालात बेहद खराब रहने वाले हैं, इसलिए उसने कहा कि उसका पति उसे भी अपने साथ ले जाए लेकिन सेइक्स, पत्नी के आंसुओं और उसकी चिंता के बावजूद राजधानी छोड़कर जाने के लिए तैयार था, उसने कोशिश की, कि वह अपनी पत्नी को यह आश्वासन दे कर बाहर जाये कि, वह सुरक्षित लौटेगा और फिर उसने अपने पिता की शपथ लेते हुए, पत्नी से कहा कि, वह दो चंद्रमास में अपनी यात्रा पूरी करके सुरक्षित लौट आएगा। इसके बाद सेइक्स ने अपनी खतरनाक यात्रा की शुरुआत की।

जब अल्कियोनी ने उसे जहाज पर बैठे हुए देखा तो वह फिर से रो पड़ी और उसने आंसुओं से भरी हुई आंखों के साथ क्षितिज को तब तक निहारा जब तक कि, उसके पति का जहाज एक बिंदु में परिवर्तित होकर अदृश्य नहीं हो गया। यात्रा के प्रारंभ में समुद्री मौसम अनुकूल था और जहाज धीमी गति से आगे बढ़ रहा था, लेकिन रात को लहरें ऊंची उठने लगीं और मध्यम हवाएं, भयंकर तूफान में बदल गई, फिर जहाज डगमगाने लगा और समुद्र का पानी जहाज में घुसना शुरू हो गया। जहाज के नाविक कंटेनर की तलाश में इधर-उधर हाथ पैर मारने लगे ताकि वे जहाज से पानी बाहर निकाल सकें। जहाज का कप्तान जोर से चिल्लाया, लेकिन तूफान के शोर में उसकी आवाज दब गई, जल्दी ही जहाज डूबने लगा, उसमें बड़ी मात्रा में पानी घुस गया था और उसे

बचाया नहीं जा सकता था, तभी एक विशाल लहर जहाज से टकराई और उसने अधिकांश नाविकों को समुद्र के तल पर भेज दिया।

सेइक्स को लगा अब वह डूब जाएगा, लेकिन उसे खुशी भी थी, कि वह अपनी प्यारी पत्नी को साथ नहीं लाया और वो सुरक्षित होगी, तभी उसने सोचा कि वह अपनी मृत्यु से पूर्व अपनी भूमि ट्रेचिस के किनारों को नहीं देख पाएगा। वह अपनी खूबसूरत पत्नी के अलावा किसी और के बारे में नहीं सोच रहा था और वह देवताओं से प्रार्थना कर रहा था कि, मेरा अंत आ गया है तो देवता मेरे शरीर को, मेरी मृत्यु के पश्चात इस तरह से सुरक्षित रखें कि, अल्कियोनी, शव को प्राप्त कर सके, अंततः सेइक्स डूब गया और उसके पिता इयोसफरस उसको बचाने के लिए कुछ नहीं कर सके। अल्कियोनी अपने पति की वापसी का बेसब्री से इंतजार करती रही, यहां तक कि दो चंद्रमास भी पूरे हो गए, किंतु पति वापस घर नहीं लौटा, उसने अपने पति के लिए नए कपड़े भी सिल लिए थे और पति की सुरक्षा के लिए सभी देवताओं से प्रार्थना भी की थी, यहां तक कि, जिस देवी हेरा को उसने नाराज किया था, उसके मंदिर में जाकर बलि भी चढ़ाई थी।

देवी हेरा अल्कियोनी की दु:खद स्थिति से विचलित हो गई और उसने अपने दूत आइरिस को नींद के देवता हिप्नोस की तलाश के लिए भेजा, जिसका उद्देश्य यह था कि, हिप्नोस सेइक्स से मिलती-जुलती आकृति, अल्कियोनी की ओर भेजें और उसे बताएं कि सेइक्स की मृत्यु हो चुकी है। लेकिन हिप्नोस ने अपने बेटे मार्फियस को अल्कियोनी के पास भेजा जो कि एक असाधारण शिल्पकार और भिन्न मानवीय रूपों के निर्मिति कर्ता के रूप में जाने जाते थे। उन्होंने अपने आपको सेइक्स के रूप में बदला यहां तक कि, उसकी आवाज और लहजे की नकल की और ट्रेचिस में आकर अल्कियोनी के पास खड़े हो गए। उन्होंने अल्कियोनी के सपने में सेइक्स के भीगे बालों और दाढ़ी वाले रूप में अवतरित होते हुए, अल्कियोनी को यह सूचना दी कि मेरा निधन हो गया है।

यह खबर मिलते ही अल्कियोनी जाग गई और अपने पति की निर्जीव देह को ढूंढने के लिए समुद्र तट पर जा पहुंची। पति की मृत देह को लेकर अल्कियोनी ने कई दिनों तक शोक मनाया और उसे परलोक में भेजने के लिए उसका उचित रूप से अंतिम संस्कार किया। उसे यह महसूस हो रहा था कि, वह सेइक्स के बिना जी नहीं सकती, अतः उसने अपने पति के साथ पुनर्मिलन की उम्मीद के साथ खुद भी समुद्र में डूब कर आत्महत्या कर ली। इस युगल के प्रेम को देखते हुए देवता जिउस ने अपना निर्णय बदला और इन दोनों प्रेमियों को किंगफिशर के रूप में बदल दिया। तब से लेकर आज तक अल्कियोनी के पिता दो सप्ताह तक समुद्र को शांत रखते हैं, ताकि उनकी पुत्री इस समय घोंसला बनाकर अंडे दे सके। इन दोनों सप्ताहों को अल्कियोनी दिनों के रूप में जाना जाता है क्योंकि, अल्कियोनी के पिता समुद्र और उसकी हवाओं को स्थिर रखकर अपनी पुत्री को शिकार का मौका भी देते हैं।

यह समय शांति और स्थिरता का समय है, जहां अल्कियोनी और सेइक्स की प्रेम कथा समुद्र के शांत स्वभाव के दरमियान अभिव्यक्त होती है। यह शाश्वत प्रेम के लिए देवताओं का उपहार है। अल्कियोनी चाहती थी कि, सेइक्स अपने भाई की मृत्यु के नाम पर समुद्र पार नहीं जाए लेकिन उसके पति ने उसकी बात नहीं मानी और अंततः काल के गाल में समा गया यद्यपि अल्कियोनी भी अपने अटूट प्रेम के चलते अपने पति सहित किंगफिशर परिंदों के रूप में परिवर्तित हो गई और यह प्रेम युगों युगों के लिए अमर हो गया।

यह आख्यान ग्रीक मूल का आख्यान है। जहां सेइक्स एवं अल्कियोनी अभिजात्य, राज परिवारों के पुत्र और पुत्री हैं और उनका परस्पर विवाह हुआ है। वे दोनों बेहद खूबसूरत है और जन सामान्य के अतिरिक्त देवी देवता भी उनके सौंदर्य से अभिभूत हैं। अतः यह कथा नवदंपत्ति के प्रणय की कथा है, जिसमें विवाह से पूर्व के घटनाक्रम का कोई उल्लेख नहीं मिलता। बहरहाल सौंदर्य की प्रशंसा ने पति पत्नी को

इतना विवेकहीन कर दिया कि, वह दोनों स्वयं को देवता जिउस और देवी हेरा के समतुल्य समझने लगे। इस कथा के अनुसार, प्रणय जीवन के समानांतर, सेइक्स के भाई और भतीजी की मृत्यु, एक समुद्रपारीय महाप्रवास की परिस्थिति निर्मित करती है और जहां सेइक्स का जहाज डूब जाता है तथा सेइक्स की मृत्यु हो जाती है। संभव है कि, समुद्र का तूफ़ान प्रचंड था। जिसके सम्मुख सेइक्स के जहाज की तकनीकी निर्बलता और नाविकों की अनुभव हीनता इस संकट से निपटने में नाकाफी रही हो।

सेइक्स ने अपने पारिवारिक शोक के समय अपनी पत्नी के इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया था कि, पत्नी को भी, शोक संतप्त परिवार के पास जाना चाहिए। बहरहाल इस कथा में महत्वपूर्ण अंश यह है कि, पति सेइक्स के निधन को अल्कियोनी, हिप्नोस देवता के पुत्र मार्फियस के माध्यम से जान पाती है, हो सकता है कि, यह केवल एक स्वप्न मात्र था, जिसे प्रतीकात्मक रूप से पति के निधन की सूचना देने वाले देवता मार्फियस से जोड़ दिया गया है। स्वप्न में अपने पति की मृत्यु के संकेत मात्र से शोकाकुल होकर अल्कियोनी समुद्र तट पर जा पहुंचती है और वहां अपने पति की मृत देह को बरामद करती है। वह अगले कई दिनों तक शोक संतप्त रहती है और अंततः अपने पति के बिना जीवन के निर्वाह की संभावना को शून्य मानते हुए स्वयं भी समुद्र में डूब कर अपने जान दे देती है। इस तरह से अल्कियोनी जो अपने पति के साथ ससुराल पक्ष के शोक परिवार में जाना चाहती थी, जो अपने पति का इंतजार कर रही थी, जिसने अपने पति की वापसी की उम्मीद में पति के लिए नए कपड़े सिल रखे थे, वह अपने पति की मुक्ति के लिए तत्कालीन समाज के नियमानुसार कर्मकांड करती है और पति से पुनर्मिलन की आकांक्षा में अपने प्राण त्याग देती है।

इस कथा में अल्कियोनी का प्रेम, पति के परलोक सिधारने के बावजूद कम नहीं होता अतः यह घटना प्रेम को अमर कर देती है। अल्कियोनी अपने पति की महाप्रवासीय अनुपस्थिति के चलते बेचैन है

और वह सभी देवी देवताओं से उसकी सुरक्षा की याचना करती है, यहां तक कि, जिस देवी हेरा को उसने रुष्ट कर दिया था, उसके मंदिर में जाकर वह अपने पति की सुरक्षा के लिए बलि चढ़ाती हैं। कहने का आशय यह है कि, अल्कियोनी में अपने पति की सुरक्षा के नाम पर ही सही, पर विनम्रता का भाव है, जिसके चलते वह हेरा जैसी असंतुष्ट देवी को प्रसन्न करने के लिए, हेरा के मंदिर जाती है और बलि चढ़ा कर अपने पति की सुरक्षा की कामना करती है। प्रेम का उत्थान और पतन, वास्तव में विनम्रता और घमंड पर निर्भर करता है चूंकि अल्कियोनी अपने अहंकार को छोड़, विनम्रता का मार्ग अपनाती है अतः उसका प्रेम महत्वपूर्ण हो जाता है। कथा में अल्कियोनी से इतर सेइक्स की भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण है। वह अपने भाई और भतीजी की मृत्यु के समय समुद्री यात्रा के लिए अपनी पत्नी को साथ नहीं ले जाना चाहता और उसे हर तरह से आश्वस्त करता है कि वह जल्द ही सुरक्षित घर लौट आएगा, यद्यपि ऐसा होता नहीं है।

यह उल्लेखनीय है कि सेइक्स शब्द का प्रयोग किंगफिशर प्रजाति के परिंदों के लिए किया जाता है, अतः कथा के अंतिम हिस्से में जब यह उल्लेख मिलता है कि, दिवंगत पति पत्नी को किंगफिशर बना दिया गया है, तब सेइक्स नाम को किंगफिशर से जोड़कर देखना उचित प्रतीत होता है। सेइक्स अपने भाई और भतीजी की मृत्यु उपरान्त की चिंताओं के शमन के लिए दैवीय परामर्श चाहता है, किंतु उसे ऐसा करने का अवसर नहीं मिलता। वह जानता है कि तूफान के आगे उसका जहाज टिक नहीं पाएगा और वह जल्द ही डूब जाएगा, तब उसे दो ही बातें याद आती हैं एक यह कि, वह देवताओं से प्रार्थना करें कि, उसकी मृत देह उसके देश के समुद्र तट तक पहुंचा दी जाए ताकि उसकी पत्नी उसे प्राप्त कर सके। दूसरा यह कि, वो जानता है कि, उसकी मृत्यु सुनिश्चित है किंतु उसे एक सुख की अनुभूति भी है कि, उसने अपनी पत्नी को घर पर छोड़कर ठीक ही किया है, क्योंकि जहाज में डूबते समय उसकी मृत्यु भले ही हो जाए लेकिन उसकी पत्नी, सुरक्षित रहेगी। असल में यही भाव प्रेम की

पराकाष्ठा है।

कथा में सेइक्स के भाई डेंडीलायन और उसकी भतीजी चियोनी की मृत्यु का उल्लेख मिलता है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि अमर देवताओं का व्यवहार, नश्वर मनुष्यों के समान ही होता है। वे प्रणय करते हैं। वासना लीन रहते हैं। ईर्ष्या करते हैं और कुपित हो जाते हैं, किंतु उपासना किए जाने के उपरांत, अनुग्रह भी प्रदान करते हैं। इस कथा में सेइक्स की सुंदर भतीजी चियोनी के जुड़वा पुत्रों को, दो भिन्न देवताओं की संतान बताया गया है। स्पष्टतः यह देवताओं की यौन पिपासा का एक उद्धरण है, जहां पर वे एक ही स्त्री से सहवास करते हैं और उसकी संतान के पिता हो जाते हैं, भले ही उसे, अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार नहीं करते। चियोनी के सौंदर्य की प्रशंसा ने देवी आर्टेमिस को इतना क्रुद्ध कर दिया था कि, वह चियोनी की असमय मृत्यु का कारण बन गई। पुत्री की मृत्यु से आहत पिता डेंडीलायन आत्महत्या करने के लिए पहाड़ की चोटी पर से छलांग लगा देता है हालांकि देवता अपोलो जो उसकी पुत्री के एक पुत्र का पिता भी है, डेंडीलायन को बाज पक्षी के रूप में परिवर्तित कर उसका जीवन सुरक्षित कर देता है।

चियोनी और डेंडीलायन की मृत्यु से आहत सेइक्स चाहता है कि, वह देवताओं का अनुग्रह प्राप्त करे, परन्तु ऐसा संभव नहीं होता क्योंकि वह स्वयं भी समुद्र में डूब जाता है। उल्लेखनीय है कि, देवताओं का व्यवहार उसके प्रति तब बदलता है जब उसकी मृत्यु हो जाती है। कथा के अनुसार सेइक्स की मृत्यु के उपरांत देवता जिउस को अपने उस निर्णय पर पछतावा होता है, जहां पर वह सेइक्स और अल्कियोनी को दंडित करना चाहता था क्योंकि वे दोनों धरती पर स्वयं को जिउस और हेरा की तरह से प्रस्तुत कर रहे थे। बहरहाल कथा के अंतिम हिस्से में हेरा, अल्कियोनी पर और जिउस, सेइक्स तथा अल्कियोनी, दोनों पर कृपा करते हैं और इन्हें किंगफिशर परिंदों के रूप में बदल देते हैं, ताकि वे दोनों अपने परिवर्तित शरीर के साथ, एक दूसरे के साथ नवजीवन व्यतीत कर

सकें। यहां पर अल्कियोनी के पिता, साल में एक बार, समुद्र के उग्र स्वभाव को शांत रखने के लिए उत्तरदाई ठहराए जाते हैं और जिन दो सप्ताहों में किंगफिशर परिंदे घोंसला बनाते तथा अंडे देते हैं। तब समुद्र शांत रहता है और कथा कहती है कि ये दिन, अल्कियोनी दिन हैं...

अफ़रोडाइट और नेरीटिस

कहते हैं कि अफ़रोडाइट को नेरीटिस से प्रेम था और नेरीटिस, ओकेनोस की पुत्री डोरिस और समुद्र के देवता नेरेस की संतान था। उसका जन्म पचास पुत्रियों के पश्चात हुआ था, किंतु वह दुनिया में सर्वाधिक सुंदर युवकों में गिना गया, यहां तक कि उसे देवताओं से भी अधिक सुंदर माना गया। प्रेम के आरंभिक समय में अफ़रोडाइट, नेरीटिस के साथ समुद्र में ही रहकर, सुख और प्रेम पूर्वक जीवन व्यतीत करती थी, किंतु समस्त देवताओं के पिता जिउस ने अफ़रोडाइट को देवलोक में निवास के योग्य मानते हुए आमंत्रित किया तो वह इस गौरवबोध का परित्याग नहीं कर सकी और देवलोक जा पहुंची, वह चाहती थी कि, नेरीटिस भी उसके साथ देवलोक जाए किंतु नेरीटिस अपनी बहनों और माता-पिता को छोड़कर देवलोक नहीं जाना चाहता था, जिसके कारण से अफ़रोडाइट उस पर अत्यधिक नाराज हुई और उसने, उससे वह उपहार छीन लिया, जो उसने नेरीटिस के लिए चुना था यानि कि नेरीटिस के पास पंख उगाने की क्षमता थी।

यह एक तरह से अफ़रोडाइट का उपहार था, जिसे अफ़रोडाइट ने, नेरीटिस के इस इंकार के साथ कि, वह अपनी बहनों और पिता के साथ समुद्र में ही रहेगा, छीन लिया था। नेरीटिस, अफ़रोडाइट का पहला प्यार था और उसने अफ़रोडाइट के साथ देवलोक जाने से इंकार कर दिया था। जिससे नाराज अफ़रोडाइट ने नेरीटिस को शंख के रूप में बदल दिया। यह प्रेम में चोट खाकर, बदले की भावना जैसा कृत्य था जो कि, अफ़रोडाइट ने नेरीटिस के साथ किया। अब नेरीटिस एक सर्पिलाकार खोल जैसा शंख है, जो कि आकार में छोटा होने के बावजूद बेहद खूबसूरत है। नेरीटिस,

परिवार के सानिध्य में रहने के लिए तथा देवलोक और प्रेम का परित्याग करने के कारण शंख हो गया, जबकि उसे, समुद्र के देवता का पुत्र होने के नाते स्वयं भी समुद्र का देवता माना गया है।

अफ़रोडाइट का पहला, प्रेम समुद्र के देवता नेरेस के पुत्र नेरीटस को संबोधित है, और यह प्रकरण तब का है, जबकि देवताओं के पिता जिउस ने अफ़रोडाइट को देवलोक में रहने के लिए आमंत्रित नहीं किया था। प्रकरण की विशिष्ट बात यह है कि, समुद्र के देवता नेरीटिस जोकि अपनी पचास बहनों के बाद उत्पन्न इक्यावनवीं संतान था। देवलोक जाने के लिए आतुर प्रेयसी अफ़रोडाइट के साथ देवलोक जाने के स्थान पर भूलोक में ही बने रहना श्रेयस्कर समझता है। वह अपने माता-पिता और बहनों के लिए समुद्र को छोड़कर देवलोक नहीं जाना चाहता। प्रेमी का यह व्यवहार अफ़रोडाइट को पसंद नहीं आया और उसने नेरीटस से पंख उगाने का उपहार छीन लिया।

उसे एक खोखले शंख के रूप में बदल दिया। यह प्रसंग प्रतीकात्मक रूप से अद्भुत है कि, अपने प्रेमी को असंतुष्ट होने की स्थिति में अफ़रोडाइट ने उपहार स्वरूप दिए गए पंख छीन कर, जैसे कि, असफल और अतृप्त प्रेम का बदला चुकाया हो। सुंदर प्रेमी के शारीरिक सौष्ठव और व्यक्तित्व को खोखले शंख के रूप में तब्दील कर देने से यह स्पष्ट हो जाता है कि, अफ़रोडाइट अपने प्रेमी के व्यवहार से किस कदर क्षुब्ध थी और उसने अपने तिरस्कार के दंड स्वरूप नेरीटस, खोखलापन दे दिया।

अफ़रोडाइट और हेफ़िस्टोस

हेफ़िस्टोस को उसकी मां देवी हेरा ने देवलोक से नीचे फेंक दिया था, क्योंकि देवी, अपंग पुत्र के जन्म से लज्जित महसूस कर रही थी। धरती पर फेंके जाने के समय हेफ़िस्टोस को थेटिस और यूरिनोम द्वारा बचाया गया और ओकेनोस नदी के किनारे एक गुफा में रख दिया गया, जहां वह एक शानदार लोहार के रूप में विकसित हुआ, लेकिन उसे इस बात का दुख था कि, अपंग होने के कारण उसकी मां हेरा ने उसे देवलोक से धरती पर बेसहारा फेंक दिया था। यह एक तरह से, उसकी हत्या के जैसा व्यवहार था चूंकि वह एक कुशल लोहार हो गया था तो उसने अपनी मां हेरा के लिए कई उपहारों के साथ एक स्वर्ण सिंहासन भी भेजा और जैसे ही देवी हेरा उस सिंहासन पर बैठी वह बेड़ियों में जकड़ गई और उसकी मुक्ति संभव ना रही। यह देखकर देव पिता जिउस ने अपनी पत्नी हेरा को बचाने के लिए अन्य देवताओं से सहायता मांगी और अफ़रोडाइट को देवलोक की व्यवस्था को बनाए रखने के लिए, हेफ़िस्टोस से विवाह करने के लिए राजी कर लिया। हेफ़िस्टोस ने रानी हेरा को उपहार में दिए गए, सिंहासन के बंदी के तौर पर दंड दे ही दिया था, किंतु वह उसका इस्तेमाल अपने हित में करना चाहता था। अतः उसने संकेतों में देवलोक को यह संदेश दिया कि अगर देवता, अफ़रोडाइट के साथ उसके ब्याह को राजी हो जायें तो वह अपनी मां हेरा को स्वेच्छा से रिहा कर देगा और देवताओं ने उसकी यह शर्त मान ली।

उसे नशे की हालत में देवताओं के सम्मुख लाया गया और कहा गया कि अगर वह अपनी मां को स्वतंत्र कर देता है, तो वह जो चाहेगा, देव लोक उसे देगा। उसने देव पिता जिउस से यह आश्वासन मांगा कि,

यदि वो रानी हेरा को मुक्त कर देता है तो उसका ब्याह अफ़रोडाइट से कर दिया जाएगा। बस यही स्थिति थी कि, जिउस ने अपनी पत्नी हेरा की मुक्ति के लिए अफ़रोडाइट से सहायता मांगी और इस ब्याह के लिए अनिच्छुक, अफ़रोडाइट, देवलोक की व्यवस्था के नाम पर हेफ़िस्टोस से ब्याह करने के लिए राजी हो गई, हालांकि वह उससे प्रेम नहीं करती थी किंतु देवलोक की रानी और जिउस की पत्नी की सिंहासन में बंदी रहने जैसी स्थिति उसे भी स्वीकार नहीं थी, अतः उसने इस विवाह को स्वीकार कर लिया। हेफ़िस्टोस ने अपनी सगाई के समय एक विशाल, सुंदर, सुनहरा प्याला अपनी होने वाली दुल्हन अफ़रोडाइट को उपहार स्वरूप दिया था। उन दिनों युद्ध का देवता एरेस भी अफ़रोडाइट से विवाह करना चाहता था, किंतु देवताओं की वचनबद्धता के चलते वह हेफ़िस्टोस की तुलना में पिछड़ गया था।

उसके सेनापति डीमोस और फोबोस तथा युद्ध के दिन के सहायक किदोइमोस यह जानते थे कि, एरेस की तुलना में हेफ़िस्टोस, अफ़रोडाइट से विवाह का अग्रणी दावेदार है और वह युद्ध के देवता एरेस से इसलिए नहीं डरता है, क्योंकि उसके साथ जिउस और अन्य देवताओं की वचनबद्धता मौजूद है। शादी के उपरांत अफ़रोडाइट के उस महल में, जिसे अपंग शिल्पी हेफ़िस्टोस ने स्वयं बनाया था, प्रवेश करने से पूर्व वह, जिउस के माध्यम से अफ़रोडाइट को पत्नी के रूप में स्वीकार करता है। अफ़रोडाइट इच्छा की देवी थी, तो वह विधवा महिलाओं की मदद के लिए महान शिल्पी हेफ़िस्टोस को खुश करने के लिए, मादकता युक्त प्रणय लीला प्रारंभ करती है। उसमें उत्तेजना है और पुराने दिनों के प्रेम तथा सहवास की स्मृतियां हैं। अतः हेफ़िस्टोस को उत्तेजित करते और संतुष्ट करते हुए वह चाहती है कि, हेफ़िस्टोस विधवा महिलाओं की मदद के लिए कुछ प्रभावपूर्ण सहायता करे, हालांकि हेफ़िस्टोस, काम क्रीडा के उपरांत, यानि कि, जिस इच्छा के लिए वह वर्षों से तड़प रहा था, उसके पूरा होते ही पत्नी के सीने में सिर रखकर सुखदायक नींद में डूब गया और फिर लगातार, दिन प्रति दिन ऐसा ही होता रहा। उसे यह कभी भी स्मरण

नहीं रहा कि उसकी पत्नी, सहवास के अतिरिक्त भी उससे कुछ और सार्थक व्यवहार भी चाहती है। अतः यह ब्याह सहवास के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था। जहां हेफ़िस्टोस केवल सुख लेता है किंतु उस सुख से परे अपनी पत्नी की इच्छाओं का सम्मान नहीं करता।

अफ़रोडाइट हेफ़िस्टोस को प्रेम तो नहीं करती किंतु देवलोक की व्यवस्था के नाम पर उससे अपने विवाह और तदनुसार शारीरिक संबंधों के लिए सहमत हो जाती है, भले ही इन संबंधों की पृष्ठभूमि में, देवता जिउस की पत्नी देवी हेरा को उसके अपंग पुत्र हेफ़िस्टोस की बदले की भावना से बचा लेने का ख्याल भी रहा हो। वह इस अनचाहे विवाह के समय युद्ध के देवता एरेस को चाहती थी, किंतु देवलोक के व्यवस्थागत कारणों से, उसने महान शिल्पी हेफ़िस्टोस से ब्याह कर लिया। हेफ़िस्टोस इस ब्याह से प्रथम दृष्टया संतुष्ट था और उसे सहवास के अतिरिक्त और कुछ सूझ भी नहीं रहा था, लेकिन अफ़रोडाइट इस समय में भी देवता एरेस से अपने प्रेम संबंध, यहां तक कि, शारीरिक संबंध बनाए हुई थी, जोकि देवलोक में चर्चा का विषय रहे और कालांतर में हेफ़िस्टोस ने इस ब्याह को, दहेज में दिए गए अपने उपहारों को वापस लेकर और व्यभिचारी एरेस को देवलोक में जलील करके, संबंध विच्छेद में बदल दिया, किंतु यह एक दर्दनाक कथा है, जिसमें हेफ़िस्टोस की मां हेरा, अपंग बच्चे के रूप में पैदा हुए हेफ़िस्टोस को देवलोक से धरती लोक पर बेसहारा फेंक देती है। जिसे अन्य व्यक्तियों द्वारा जीवन दिया जाता है, जो गुफा में रहते हुए लोहा और अन्य धातुओं के शिल्पकार के रूप में दक्ष हुआ।

कालांतर में उसे शिल्पियों का देवता मान लिया गया, वह जन्म के समय अपनी मां हेरा के अपमानजनक व्यवहार का बदला चुकाना चाहता था और उस समय सौंदर्य की देवी अफरोडाइट यानि वीनस को अपनी पत्नी के रूप में भी प्राप्त करना चाहता था। उसने कुशल शिल्पी के तौर पर एक योजना बनाकर, अपनी मां को एक सिंहासन भेंट किया, जिसमें

बैठते ही उसकी मां उसकी योजना का शिकार हो गई और लौह बंधनों में बंध गई, जिनसे मुक्त होना, तभी संभव था, जब हेफ़िस्टोस इस बात के लिए राजी होता, और हुआ भी यही। हेफ़िस्टोस की योजना के मुताबिक देवताओं ने उस से अनुरोध किया कि, वह देवी हेरा को मुक्त करने की एवज में जो भी चाहेगा, देवलोक उसे देने के लिए सहमत होगा, यहां तक कि उसके पिता जिउस भी अपनी पत्नी हेरा को बंधन मुक्त कराने के लिए उसकी मांग मान लेने पर सहमत हो गए। अतः एक दिन उसे देवलोक लाया जाता है, जहाँ वह अफ़रोडाइट के साथ ब्याह की मांग करता है और कहता है कि, इसके बाद ही वह अपना तिरस्कार करने वाली मां हेरा को बंधन मुक्त करेगा।

देवताओं और जिउस के दबाव में अफ़रोडाइट, हेफ़िस्टोस से ब्याह करने के लिए राजी हो जाती है। जिसने अफरोडाइट लिए अनेक उपहार तैयार किए हुए थे और एक शानदार महल भी, हालांकि उस महल में उसके सुखदाई, सहवास का प्रसंग तो मिलता है, लेकिन अफ़रोडाइट और एरेस के विवाहेत्तर संबंधों का घटनाक्रम भी सार्वजानिक रूप से प्रकटित हो जाता है। इससे दुखी होकर अफ़रोडाइट का परित्याग करने से पूर्व हेफ़िस्टोस, एरेस को बंदी बना लेता है और अफ़रोडाइट तथा एरेस के विवाहेत्तर संबंधों के अपमान के बदले में, विवाह के समय दिए गए सभी उपहारों को वापस मांग लेता है और अपने पिता जिउस को यह भी कहता है कि, उनका आशीर्वाद निष्फल हुआ है, क्योंकि उन्होंने उसे ऐसी पत्नी दी थी जोकि वैवाहिक संबंधों के बाहर अपने प्रेमी एरेस के साथ रंगरेलियां मना रही थी। तो यह स्पष्ट होता है कि यह कथा अपंग शिल्पी हेफ़िस्टोस की योजना की आधी सफलता और आधी असफलता कथा है, जिसमें वह अपनी मां से बदला लेता है, किंतु अफ़रोडाइट की बेवफाई को बर्दाश्त नहीं कर पाता और उसका परित्याग कर देता है।

कथा में अफ़रोडाइट से उसके प्रेम प्रसंग को मौलिक रूप से शैया सुख के साथ, जोड़कर कहा गया है, क्योंकि इसी समय अफ़रोडाइट तन

मन से अपने प्रेमी एरेस के प्रति भी समर्पित हो गई थी। अतः यह कथा अनैतिक विवाहेत्तर संबंधों के समानांतर पति से सुखद सहवास की, कथा है, जिसका अंत दु:खद है।

अफ़रोडाइट और एरेस

प्रेम संबंधों में नेरीटिस को खो चुकी, अफ़रोडाइट ने युद्ध के देवता एरेस से टूट कर प्यार किया, यहां तक कि, देवताओं के संकट समय में देवी हेरा को बचाने के लिए उसे, उसकी अनिच्छा के बावजूद हेरा के पुत्र अपंग हेफ़िस्टोस से ब्याह करना पड़ा, तब भी वह एरेस को चाहती थी। हुआ यह कि, एक दिन एरेस युद्ध के मैदान से एक मजबूत भाला लेकर आया और अफ़रोडाइट के दिव्य पुत्र इरोस के नन्हें हथियार पर हास परिहास करने लगा। तब इरोस ने एरेस से कहा कि आप मेरे भाले को लेकर देखें, यह भी भारी है और इसे आजमायें। दिव्य बालक के मुंह से ऐसा सुनते हुए एरेस ने उसका भाला अपने हाथों में लिया और कहा, अरे यह तो मेरे भाले से भी अधिक भारी है, इसे मुझसे वापस ले लो। इसे तुम ही रखो। एरेस के इस तरह व्यवहार ने अफ़रोडाइट के मन में एरेस के प्रति रूमानियत का बीज बो दिया। लेकिन अफ़रोडाइट एरेस साथ प्रणय संबंधों को धरातल पर भी नहीं ला पाई और उससे पहले उसे, देवताओं की रानी और जिउस की पत्नी हेरा की सुरक्षा और मुक्ति के लिए, हेफ़िस्टोस से ब्याह करना पड़ा, यूं तो अफ़रोडाइट और हेफ़िस्टोस के दरम्यान औपचारिक रूप से वैवाहिक संबंध था लेकिन सभी देवता जानते थे कि, अफ़रोडाइट एरेस से प्रेम करती थी और उसने हेफ़िस्टोस से देवलोक की व्यवस्था बनाए रखने के लिए मजबूरन ब्याह कर लिया है।

देवलोक की व्यवस्था के नाम पर अफरोडाइट ने भले ही हेफ़िस्टोस से ब्याह कर लिया और उसके साथ पत्नी की तरह से यौन संबंध भी बनाए और उसे यह एहसास भी कराया कि, वो जिन सुखों के लिए वर्षों से तरसा है, उन सुखों की अनुभूति उसे अफरोडाइट के माध्यम से हो रही

है, लेकिन अफ़रोडाइट के मन में विवाह से पहले भी एरेस का प्रेम प्रथम था और ब्याह के बाद भी बना रहा। वह गुप्त रूप से एरेस के साथ अपने संबंधों को बनाए रख रही थी। शुरू में हेफ़िस्टोस को पता नहीं चला, लेकिन बाद में अनेकों देवताओं ने देखा कि अफ़रोडाइट और एरेस, प्रेम के नाम पर कामुकता की तमाम हदें पार कर रहे हैं, जबकि अफ़रोडाइट का पति हेफ़िस्टोस शिल्पियों का देवता है। उसने अफ़रोडाइट से आधिकारिक रूप से ब्याह किया और यह सोचा कि, उसके ब्याह के चलते एरेस उससे पिछड़ गया है, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। कहते हैं कि, एरेस और अफ़रोडाइट के यौन आलिंगन ने हरमोनिया को जन्म दिया, लेकिन अफ़रोडाइट के विवाहेत्तर संबंधों के उजागर हो जाने से अफ़रोडाइट और हेफ़िस्टोस के बीच ब्याह के लंबे चलने की संभावनाएं खत्म हो गई थी।

हुआ यह कि, शिल्पी देव हेफ़िस्टोस ने उन दोनों को अपनी शिल्प कला के जरिए रंगे हाथों पकड़ लिया था फिर उसने अपने पिता जिउस को चिल्लाकर कहा कि देखो, यह तुम्हारा आशीर्वाद है, जो अफ़रोडाइट का ब्याह मुझसे हुआ है, किंतु वह युद्ध के देवता एरेस के साथ रंगरेलियां मना रही है। आओ पिता। तुम देखो। अब मुझे अफरोडाइट के साथ आगे का जीवन व्यतीत नहीं करना है। हेफ़िस्टोस, जिउस से कहता है कि, देखो यह तुम्हारा उपहार है। जिसमें अफ़रोडाइट मेरे लिए समर्पित नहीं है, क्योंकि मैं जन्म से अपंग हूं और वह विनाशकारी एरेस, सुंदर और स्वस्थ है, तो मेरी पत्नी का समर्पण उसके लिए है। वह मुझसे ब्याह कर चुकी है, इसके बावजूद उसने मेरी सहनशीलता का उपहास किया है और मेरे होते हुए भी एरेस से विवाहेत्तर संबंध बनाये हैं। मेरा अपंग होना, मेरा अपना दोष नहीं है बल्कि यह मेरे माता-पिता का दोष है। काश उन्होंने मुझे कभी जन्म ही ना दिया होता। अब सभी देवता कहें कि, इन दोनों प्रेमियों को, मेरे ही बिस्तर पर गले लगते देख कर मेरा मन कितना व्याकुल हो जाता होगा?

अफ़रोडाइट की इच्छा मेरे साथ विवाह संबंधों के स्वस्थ निर्वहन की नहीं है, अतः मैं अफ़रोडाइट से मुक्ति चाहता हूं और दुष्ट एरेस को मेरी जंजीरें, मेरे बंधन, तब तक जकड़ कर रखेंगे जब तक कि, मेरे पिता जिउस, मुझे उन सभी उपहारों को वापस नहीं दिला देते जो मैंने अफ़रोडाइट को ब्याह के समय दिए थे। वो कहता है कि, अफ़रोडाइट के पास सुंदरता है लेकिन शर्म की कोई भावना नहीं है। हेफ़िस्टोस रोता भी है और चिल्लाता भी। यह पहला अवसर था जबकि सामर्थ्यवान देवता एरेस को अफ़रोडाइट के शिल्पी पति ने बंधनों में बांध दिया था और सार्वजनिक रूप से उन दोनों की भर्त्सना की थी। बहरहाल एरेस और अफ़रोडाइट के विवाहेत्तर संबंधों ने अफ़रोडाइट और हेफ़िस्टोस के बीच वैवाहिक संबंधों के, परित्यक्त संबंधों में बदलने की परिस्थितियां पैदा कर दीं। हेफ़िस्टोस से तलाक हो जाने के पश्चात, अफ़रोडाइट पूरी तरह से एरेस को समर्पित हो गई थी, किंतु एरेस और अफरोडाइट के बच्चों को यह कहा जाता था कि, आप सब, अफ़रोडाइट के क्रूर बच्चे हैं, जिनका पिता एरेस है। अफ़रोडाइट के बिस्तर का साथी एरेस। जिसके लिए अफ़रोडाइट ने अपने पति से गद्दारी की।

हालांकि अफ़रोडाइट और एरेस के संबंधों के दरम्यान इस तरह की निंदा और कानाफूसियों की कोई जगह नहीं थी और उनका प्रेम, सभी देवताओं को मुंह चिढाने जैसा बना रहा। कहते हैं कि, एक बार देव लोक जैसे रमणीय और शांत स्थल पर अफ़रोडाइट अपने पति एरेस के कठोर आलिंगन के दौरान बेहोश हो गई थी। एरेस खयाल था कि, अफ़रोडाइट से उसको, उसके जैसे सामर्थ्यवान बच्चे मिलेंगे, लेकिन ऐसा हुआ नहीं।

अफ़रोडाइट, नेरीटिस से प्रेम संबंध टूटने के उपरांत, युद्ध के देवता एरेस से प्रेम करने लगी। भले ही इस अवधि में उसे देवलोक की व्यवस्था-जन्य कारणों से महान शिल्पी हेफिस्टोस से ब्याह करना पड़ा, किंतु उसने एरेस से अपने प्रेम संबंधों का परित्याग नहीं किया और वैवाहिक वर्जनाओं के उल्लंघन के कारण एरेस और उसकी बहुत बदनामी

भी हुई, क्योंकि हेफिस्टोस ने, एरेस को अफ़रोडाइट से विवाहेत्तर संबंध को रखने की सजा बतौर बंदी बना लिया था और वह बड़ी मुश्किल से इन बंधनों से मुक्त हो पाया था। एरेस को अफ़रोडाइट का मुख्य प्रेम माना जाता है, हालांकि इस प्रेम की शुरुआत कुछ इस तरह से हुई कि वह, अफ़रोडाइट के दिव्य पुत्र इरोस के साथ हास परिहास करते हुए, उसके भाले को अपने भाले से बेहतर बताता है, तभी अफ़रोडाइट के मन में एरेस के प्रति रोमान का भाव पल्लवित होता है। संभव है कि, एरेस का युद्ध का देवता होना अथवा सामर्थ्यशाली और सुन्दर होना भी इसकी पृष्ठभूमि में निहित कारक हो।

बहरहाल एरेस, अफ़रोडाइट के प्रेम में, देवत्व की सारी हदों को पार करते हुए, हेफिस्टोस और अफ़रोडाइट के वैवाहिक जीवन को बर्बाद कर देता है, यद्यपि इस कृत्य में एरेस के जितना ही, अफ़रोडाइट को भी दोषी माना जाना चाहिए, हेफिस्टोस से वैवाहिक संबंधों के विच्छेद के उपरांत अफ़रोडाइट और एरेस निर्बाध रूप से प्रणय संबंधों में लीन हो गए, लेकिन हेफिस्टोस और अफरोडाइट के प्रकरण में हुई बदनामी के उपरांत, उन दोनों के प्रेम संबंधों की परिणति के रूप में जिन बच्चों ने जन्म लिया वे एरेस द्वारा, चाहे गए, सुंदर और स्वस्थ बच्चे नहीं थे, बल्कि देवलोक में उनका उपहास उड़ाया जाता और कहा जाता कि तुम लोग, मर्यादाहीन अफरोडाइट की संतान हो, तुम्हारा पिता एरेस है जो, अफ़रोडाइट की कामुकता का साथी है। लेकिन अफ़रोडाइट और एरेस, इस तरह की निंदा, कानाफूसियों और बदनामियों को नज़र अंदाज़ करते हुए, अपने प्रेम संबंधों को जीते रहे...

अफ़रोडाइट और हेमीज

एक समय था, जब हेमीज, अफ़रोडाइट के सौन्दर्य पर आसक्त हो गया और वह उससे एकतरफा प्यार करने लगा, लेकिन अफ़रोडाइट ने उसे कोई भाव नहीं दिया तो उसने स्वयं को बहुत अपमानित महसूस किया और निराश हो गया। हेमीज की प्रणय आकांक्षा की असफलता को देखते हुए, जिउस ने उस पर दया की और जब अफ़रोडाइट अचेलस नदी में नहा रही थी तो उसने अपने, बाज को भेजकर उसकी जूतियां उठवा लीं और उन्हें हेमीज को दे दिया फिर अफ़रोडाइट अपनी जूतियों की तलाश में, जब हेमीज के पास पहुंची तो स्वयं के लिए, उसके प्यार को देखते हुए, उसकी इच्छाओं का सम्मान करने की बात अफ़रोडाइट के मन में आई। बहरहाल यह पारस्परिक प्रेम नहीं था बल्कि हेमीज के कब्जे से अपनी जूतियां पाने की शर्त पर अफ़रोडाइट का समर्पण था।

कालांतर में अफ़रोडाइट और हेमीज के सहवास की परिणति के रूप में हेर्मेफ्रोडिटस का जन्म हुआ जोकि, दुनियां में सबसे अधिक सुंदर था और जिसे इडा पर्वत की गुफाओं में नाइड्स ने पाला था। कहते हैं कि, लगभग पांच साल की उम्र में उसने पहली बार अपने माता पिता को देखा। उसके बाद हेर्मेफ्रोडिटस ने इडा पर्वत को छोड़ दिया। उसे पर्वतों और अजीब अजीब तरह की भूमि और स्थलों को घूमने का शौक था।

यह आश्चर्य की बात है कि, देवता है हेमीज, अफ़रोडाइट के सौंदर्य पर आसक्त हो गया था और उससे नितांत एकपक्षीय प्रेम करने लगा था, लेकिन अफ़रोडाइट ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया, तो वह निराश हो गया और उसे अपमान की अनुभूति हुई, हालांकि इस प्रकरण में देवताओं के राजा जिउस ने देवता हेमीज के ऊपर दया करते हुए,

अफ़रोडाइट के स्नान के समय, बाज को भेजकर, उसकी जूतियां चोरी करवा लीं और उन्हें हेमीज को दे दिया, जिनकी वापसी के नाम पर, हेमीज ने अफ़रोडाइट के सामने प्रेम की शर्त रखी और अफ़रोडाइट ने उस शर्त के सामने समर्पण कर दिया।

अगर हम कहना चाहे कि, यह प्रकरण देवता जिउस के समर्थन के साथ, अफ़रोडाइट को ब्लैकमेल करने का प्रकरण है ना कि द्विपक्षीय प्रेम का, तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी, अतः हम देवी और देवताओं के मध्य स्वैच्छिक प्रेम के अतिरिक्त भयादोहन करने के उपरांत किए गए प्रेम अथवा सहवास को देवताओं के चारित्रिक पतन के लक्षणों के रूप में स्वीकार कर सकते हैं। इस प्रेम से, केवल शारीरिक संबंधों के संकेत मिलते हैं, जिनके फलस्वरूप देवता हेमीज के पुत्र हेर्मेफ्रोडिटस का जन्म होता है। निश्चित रूप से यह प्रेम कम, ब्लैकमेल और सहवास अधिक था।

अफ़रोडाइट और पोसीडॉन

पोसीडॉन समुद्र का देवता है, उसे अक्सर धरती का पालनहार भी कहा गया है, जिसके साथ अफ़रोडाइट के अनधिकृत प्रणय प्रसंग की संक्षिप्त सी कथा भी कही गई है। हुआ यह कि एरेस और अफ़रोडाइट द्वारा, हेफ़िस्टोस से बेवफाई के प्रकरण में पोसीडॉन द्वारा एरेस और अफरोडाइट का समर्थन किए जाने के कारण से वे दोनों, पोसीडॉन के प्रति कृतज्ञ थे। उस समय पोसीडॉन ने हेफ़िस्टोस द्वारा एरेस को बंदी बना लेने और बेड़ियों में जकड़ देने के पश्चात, हेफ़िस्टोस से यह अनुरोध किया था कि, आप दुनिया के महानतम शिल्पी हैं और मैं आपसे विनती करता हूं कि, एरेस को जाने दो, उसे मुक्त कर दो और आपको, उससे जो भी मुआवजा चाहिए होगा, मैं आपसे वादा करता हूं कि, एरेस उसका भुगतान करेगा और यह भुगतान सभी देवताओं की उपस्थिति में होगा, किंतु हेफ़िस्टोस ने कहा कि पालनहार पोसीडॉन, मुझसे यह मत कहो, विश्वासहीन लोगों के लिए वचन, विश्वासहीन वचन ही होते हैं।

अगर एरेस मेरी जंजीरों के बंधन से मुक्त होकर चला गया तो मैं क्या करूंगा? तो पोसीडॉन कहता है कि, हे शिल्पी देवता अगर एरेस बंधन मुक्त होने के पश्चात अपने दंड को चुकाने से इंकार करता है तो, उसका दंड मैं स्वयं ही भर दूंगा और यह भुगतान मेरे द्वारा किया जाएगा। तब हेफ़िस्टोस ने कहा कि, ठीक है मैं आपके कहने से, आप पर विश्वास करते हुए एरेस को मुक्त कर देता हूं। इस प्रकार से पोसीडॉन के कहने से हेफ़िस्टोस ने बंदी एरेस को बंधन मुक्त कर दिया और अवैध संबंधों के लिए कलंकित एरेस तथा अफ़रोडाइट, वहां से चले गए लेकिन उन्होंने पोसीडॉन के इस उपकार को कभी विस्मृत नहीं किया और वे व्यभिचार में

पकड़े जाने तथा बंदी बनाए जाने के उपरांत, पोसीडॉन के समर्थन के लिए सदैव कृतज्ञ बने रहे। कहते हैं कि, उस समय एरेस और अफ़रोडाइट के व्यभिचारी संबंधों में समर्थन के कारण अफ़रोडाइट ने पोसीडॉन से प्रेम किया और उसने पोसीडॉन की दो पुत्रियों को जन्म भी दिया जो कि, रोडोस और हेरोफिलोस थी।

देव शिल्पी हेफिस्टोस और अफ़रोडाइट के वैवाहिक संबंधों के समानांतर, एरेस और अफ़रोडाइट के अनैतिक संबंधों के कारण, हेफिस्टोस का वैवाहिक जीवन ध्वस्त हो गया था और देवलोक में इस प्रकरण की सार्वजनिक रूप से चर्चा होने लगी थी अतः हेफिस्टोस ने एरेस को देवलोक में ही अपनी शिल्प विद्या के जरिए बंदी बना लिया था और उसे बंधन मुक्त करने से मना कर दिया था, क्योंकि वह अपने वैवाहिक जीवन को नष्ट करने के लिए तथा अपनी पत्नी अफ़रोडाइट के साथ अनैतिक संबंध रखने के लिए, एरेस को दंडित और अपमानित करना चाहता था। इस समय पोसीडॉन जो समुद्र का देवता है और जिसे धरती का पालनहार भी कहा गया है, उसने एरेस की मुक्ति के लिए हेफिस्टोस से बारम्बार अनुरोध किया कि, वह एरेस को मुक्त कर दे और जब हेफिस्टोस कहा कि, अगर एरेस मुक्ति के पश्चात, मुआवजे के भुगतान से मुकर गया तो क्या होगा?

तब पोसीडॉन ने एरेस का समर्थन करते हुए कहा कि, उस स्थिति में, मैं स्वयं उस मुआवजे का भुगतान करूंगा और फिर पोसीडॉन के हस्तक्षेप से हेफिस्टोस ने एरेस को बंधन मुक्त कर दिया। तदुपरांत एरेस तथा अफरोडाइट अपने नवागत जीवन को एक साथ व्यतीत करने के लिए तैयार हो गए, क्योंकि इस समय तक अफ़रोडाइट और हेफिस्टोस का सम्बन्ध विच्छेद हो चुका था। इस प्रकरण में अफ़रोडाइट और एरेस, पोसीडॉन के व्यवहार से खुश और कृतज्ञ थे। बस यही एक जगह है, जहाँ पर अफ़रोडाइट और एरेस, पोसीडॉन के उपकार को भूले नहीं, कालांतर में पोसीडॉन के समर्थन के बदले, अफ़रोडाइट ने पोसीडॉन से प्रेम संबंध

स्थापित किए और दो पुत्रियों को जन्म दिया, जिनका नाम रोडोस और हेरोफिलोस था। यानि कि, अफरोडाइट ने असमय में पोसीडॉन के समर्थन और उपकार का बदला प्रेम से चुकाया।

अगर हम गौर करें, तो विवाहेत्तर संबंधों में पकड़े जाने के उपरांत जो अपमानजनक स्थितियां एरेस और अफरोडाइट के समक्ष थी, उनके निवारण के लिए पोसीडॉन की भूमिका महत्वपूर्ण थी और इस भूमिका के चलते अफ़रोडाइट ने पोसीडॉन के साथ प्रेम संबंध स्थापित किए जिनका मुख्य आधार यौनिकता थी...

अफ़रोडाइट और डायोनिसस

डायोनिसस शराब के देवता हैं, जिनके साथ अफरोडाइट का संक्षिप्त सा प्रेम प्रसंग रहा है। कहते हैं डायोनिसस, देवता जिउस और शेल नाम की नश्वर महिला की संतान है। इस प्रसंग में जिउस की पत्नी देवी हेरा को संदेह था, अतः उसने डायोनिसस की मां को अत्यधिक प्रताड़ित किया, किन्तु देवता जिउस ने अपनी पीड़ित प्रेमिका को अपनी ही जांघ की त्वचा से सिलाई करके तब तक बचाए रखा जब तक कि, डायोनिसस का जन्म नहीं हो गया। कालांतर में डायोनिसस को शराब के देवता के रूप में मान्य किया गया। डायोनिसस की प्रसिद्धि, राजा मिडोस को सब कुछ स्वर्ण के रूप में बदलने की शक्ति प्रदान करने के प्रकरण में है। जहां पर मिडोस गलती से अपनी पुत्री को भी स्वर्ण में बदल देता है, तब डायोनिसस का यह वरदान अभिशाप में बदल गया था।

डायोनिसस बेहद खूबसूरत देवता था कदाचित इसीलिए अफरोडाइट उस से प्रभावित हुई होगी और इसके फलस्वरूप उनके पांच बच्चों होने का कथन भी प्रचलित है। यह माना जाता है कि शराब के संपर्क में आये पुरुष अत्यधिक उत्तेजित हो जाते है और प्रेम तथा शारीरिक संबंधों के प्रति आकर्षित हो जाते है।

कथा के अनुसार, डायोनिसस शराब का देवता है जोकि, देवों के राजा जिउस और एक नश्वर महिला शैल की संतान है, चूंकि इस प्रेम प्रसंग की भनक जिउस की पत्नी हेरा को थी, अतः उसने डायोनिसस की मां को अत्यधिक प्रताड़ित किया हालाँकि उसके जीवन की रक्षा स्वयं जिउस ने उस समय तक की, जब तक कि, डायोनिसस का जन्म नहीं हो गया। डायोनिसस शराब के देवता होने के नाते उत्तेजना और मादकता का

देव भी हैं। यह मान्यता है कि, शराब के संपर्क में आया, पुरुष उत्तेजित होकर प्रेम और शारीरिक संबंधों के प्रति आकर्षित हो जाता है। अतः प्रतीत होता है कि डायोनिसस शराब का देवता होने के नाते अफ़रोडाइट के प्रति आकर्षित हो गया होगा। इस प्रेम प्रसंग में उन दोनों के शारीरिक संबंधों का परिणाम पांच संतानों का जन्म भी है।

बहरहाल डायोनिसस, अफ़रोडाइट से प्रेम संबंध से कहीं अधिक इस बात के लिए विख्यात है कि, उसने राजा मिडोस को हर चीज को स्वर्ण में बदलने की शक्ति प्रदान की थी और गलती से राजा, अपनी पुत्री को भी स्वर्ण में बदल बैठा था, तो यह वरदान वास्तव में अभिशाप सिद्ध हो गया था। हम यह मान सकते हैं कि वरदान की पृष्ठभूमि में देवता की मद्य जनित विवेक हीनता भी रही होगी...

अफ़रोडाइट और एडोनिस

एडोनिस एक दरख्त से पैदा हुआ बच्चा था, जिसकी मां को अपने पिता के क्रोध से बचने के लिए भागना पड़ा था, क्योंकि उसकी मां और उसके दादा के बीच अनैतिक संबंध थे, जिसके कारण से एडोनिस की मां गर्भवती हो गई थी, लेकिन एडोनिस के नाना इस बात से अत्यंत कुपित थे और अपनी पुत्री की जान लेना चाहते थे। वे चाहते थे कि, एडोनिस की मां और उसके ससुर की कलंक कथा को मृत्यु दंड देकर समाप्त कर दिया जाए, इसीलिए एडोनिस की मां अपनी जान बचाती हुई भागती फिरती रही, इस संकट काल में देवी अफ़रोडाइट ने एडोनिस की मां को एक दरख्त में बदल दिया, जिससे कुछ समय बाद एडोनिस का जन्म हुआ। बड़ा होकर वह नश्वर संसार में एक बेहद खूबसूरत युवा बन गया। जिससे अफ़रोडाइट को प्यार हुआ और पाताल लोक की रानी पर्सेफोन भी उसके प्रेम में पड़ गई, हालांकि पर्सेफोन ने एडोनिस का पालन पोषण भी किया था।

एडोनिस, सांसारिक रूप से साइप्रस का राजकुमार था और उससे प्रेम के नाम पर देवी अफ़रोडाइट और पाताल लोक की रानी पर्सेफोन एक दूसरे से युद्ध करने जा रही थीं। यह युद्ध एडोनिस को प्रेमी बतौर पाने का युद्ध था, किंतु देवता जिउस ने इस युद्ध की संभावना को समाप्त कर दिया और उसने यह व्यवस्था दी कि, एडोनिस साल का एक तिहाई समय अफ़रोडाइट के साथ और दूसरा तिहाई समय पर्सेफोन के साथ बिताएगा और तीसरा तिहाई समय वह जिसे चाहे, उसके साथ व्यतीत कर सकता है। एडोनिस ने देवता जिउस के द्वारा दी गई व्यवस्था के अंतर्गत सबसे पहला कालखंड देवी अफ़रोडाइट के साथ बिताया। उसे अफ़रोडाइट के

एकमात्र नश्वर प्रेमी के रूप में जाना जाता है। कहते हैं कि, जंगली सुअर के हमले से एडोनिस की मृत्यु हो गई, तो देवी अफ़रोडाइट ने उसे अपने हाथों में उठाकर अत्यंत शोक मनाया और चीख चीख कर रोई। जब उसके आंसू एडोनिस के खून से मिल गए तो उसने एडोनिस को एनीमोन का फूल बना दिया।

यह कथा दो कारणों से महत्वपूर्ण है। एक तो यह कि, एडोनिस, नश्वर मनुष्य था और साइप्रस का राजा भी, कहते हैं कि, एडोनिस के दादा और उसकी मां के मध्य अनैतिक संबंध थे, जिन्हें ससुर और बहु के संबंधों का नाम भी दिया जा सकता है। दूसरा यह कि, एडोनिस के नाना इन अनैतिक संबंधों से अत्यधिक कुपित थे और अपनी पुत्री को मृत्युदंड देना चाहते थे। कुल मिलाकर एडोनिस की मां अपनी जान बचाती हुई बहगम भाग कर रही थी, तब प्रेम और लालसा की देवी अफरोडाइट ने एडोनिस की मां को एक दरख़्त में बदल दिया। जिससे कुछ समय बाद एडोनिस का जन्म हुआ। हमें यह मान लेना चाहिए कि, एडोनिस अपने दादा और अपनी मां की संतान था, भले ही प्रतीकात्मक तौर पर उसे दरख़्त से पैदा हुआ बताया गया है। कथा से पता चलता है कि, युवा एडोनिस बेहद खूबसूरत था और दो देवियों के मध्य ईर्ष्या और वैमनस्य का कारण बन गया था।

हुआ यह कि, देवी अफ़रोडाइट उसे पसंद करने लगी थी और उसी समय पाताल लोक की रानी पर्सेफोन भी उस से प्रेम करने लगी, हालांकि पर्सेफोन ने एडोनिस का पालन-पोषण किया था, इस नाते वह एडोनिस की पालक मां मानी जायेगी, किंतु इस कथा में, सभी तरह की नैतिकताओं का घनघोर उल्लंघन किया जाना स्पष्ट होता है। ससुर का बहु से अनैतिक संबंध, दादा के पुत्र के तौर पर एडोनिस का जन्म और जन्म के पश्चात युवा होने पर उसकी मां की रक्षक देवी अफ़रोडाइट और पाताल लोक की रानी पर्सेफोन, जोकि, उसकी पालक मां भी कहीं जाएगी, का एडोनिस के प्रति आकर्षण किसी भी तरह से उचित नहीं कहा जा सकता।

इस प्रकरण में देवी पर्सेफोन और अफरोडाइट के मध्य युद्ध होने की संभावना थी, जिसे देवताओं के राजा जिउस ने एक व्यवस्था के तहत समाप्त कर दिया, उसने कहा कि एडोनिस, वर्ष का एक तिहाई समय अफ़रोडाइट के साथ और दूसरा तिहाई समय रानी पर्सेफोन के साथ बिताएगा, इसके अतिरिक्त बचा हुआ, एक तिहाई समय जिसके साथ चाहे व्यतीत कर सकता है।

अतः यह कथा, बहुस्त्रीगामिता की कथा भी है, जिसे देवों के राजा जिउस का समर्थन प्राप्त है। संबंधों में अनैतिकता का घालमेल होते हुए भी, यह कथा अनश्वर देवियों और नश्वर मनुष्य के मध्य प्रणय का महत्वपूर्ण उदाहरण है, जिसका समापन, जंगली शूकर के हमले से घायल एडोनिस की मृत्यु के पश्चात् एडोनिस के रक्त और अफरोडाइट के आंसुओं के मिल जाने और एडोनिस के एनीमोन का फूल बन जाने पर होता है, वैसे भी वो एक दरख़्त से पैदा हुआ था...

अफ़रोडाइट और जिउस

अफ़रोडाइट के जीवन में प्रणय प्रसंगों की कमी नहीं थी। उसकी सुंदरता अक्सर देवताओं के लिए आसक्ति का कारण बन जाया करती। कहते हैं कि, एक बार देवताओं के राजा जिउस ने क्रिपोस द्वीप पर अफ़रोडाइट के साथ बलात्कार करने की कोशिश की थी, लेकिन अफ़रोडाइट उस समय किसी प्रकार से जिउस के इस प्रयास से बच गई थी। जिउस, अफ़रोडाइट को पाने के लिए तरस रहा था, भले ही वह उसे प्राप्त नहीं हो रही थी, तब जिउस ने जमीन पर अपने बीज बिखेर दिये। शुरू में अफ़रोडाइट देवता जिउस से बचकर भागती रही और वह उसे पकड़ नहीं सका, लेकिन जिउस के द्वारा धरती पर की गई प्रेम वर्षा से अफ़रोडाइट बच नहीं सकी और बाद में उसने स्वेच्छा से जिउस के साथ शारीरिक संबंध बनाए हालांकि जिउस की पत्नी हेरा, इस प्रेम प्रसंग से अत्यंत क्रुद्ध और ईर्ष्यालु हो गई थी और उसने अफ़रोडाइट के पेट पर हाथ रखकर, उसकी सभी संतानों को कुरूपता का श्राप दिया, इसलिए जिउस और अफ़रोडाइट का बच्चा प्रियापोस, बेहद बदसूरत हुआ। इस बच्चे को जन्म के बाद अफ़रोडाइट ने एक पहाड़ पर फेंक दिया था। जिसे एक चरवाहे द्वारा उठाया गया, लेकिन चरवाहे ने देखा कि, बच्चे के पृष्ठान्ग पर गुप्तांग उग रहे थे और बच्चा बेहद कुरूप, मांस के लोथड़े जैसा था। यह एक आश्चर्यजनक घटना थी जोकि, देवी हेरा के क्रोध और ईर्ष्या की परिणति मानी जायेगी।

अफ़रोडाइट ने देवलोक की व्यवस्था बनाए रखने के लिए जिउस, जोकि देवताओं का राजा और पिता तुल्य है, के अपंग पुत्र शिल्पी देव हेफिस्टोस के साथ वैवाहिक संबंध स्वीकार कर लिया था, जबकि, उस

समय वह एरेस से प्रेम करती थी, लेकिन उसने, जिउस की पत्नी, और जन्म के फ़ौरन बाद अपने अपंग पुत्र हेफिस्टोस का वितृष्णा पूर्ण परित्याग करने वाली मां हेरा को, हेफिस्टोस के बंधनों से मुक्त कराने के लिए, इस बेमेल वैवाहिक संबंध के लिए, हां कर दी थी, भले ही यह संबंध अधिक समय तक नहीं चला क्योंकि अफरोडाइट, एरेस के साथ अनैतिक संबंध रखने के आरोप में पकड़ी गई थी। इसके बाद जिउस ने देवता हेमीज को अफ़रोडाइट से एकतरफा प्रेम करने और असफल रह जाने के समय दया करते हुए, अफ़रोडाइट की जूतियां, चोरी करवाईं और हेमीज को सौंप दीं ताकि वह अफ़रोडाइट का भयादोहन करते हुए अफ़रोडाइट से दैहिक संबंध बना सके।

यह अजीब सी स्थिति है कि, देवलोक की व्यवस्था और अपनी पत्नी हेरा की मुक्ति के नाम पर, अपने अपंग पुत्र से अफरोडाइट का ब्याह करा देना और देवता हेमीज के, अफ़रोडाइट से भयादोहन के आधार पर बनने वाले, दैहिक संबंधों का समर्थक बनना, देवों के राजा जिउस के अनैतिक कृत्य थे, किंतु जिउस स्वयं भी, अफ़रोडाइट के प्रति आकर्षित था और उसने अफ़रोडाइट के साथ बलात्कार करने की चेष्टा भी की थी, यद्यपि अफ़रोडाइट उसके इस प्रयास से सुरक्षित बच निकली थी। यह बेहद गंभीर बात है कि, जिउस, अफ़रोडाइट के प्रति आसक्त हुआ और यह आसक्ति बलात्कार की सीमा तक जा पहुंची और जब अफ़रोडाइट वहां से बचकर भाग निकली तो जिउस ने धरती पर अपने आत्म के बीज बिखेर दिए, जिनके सम्मोहन और प्रेम वर्षा से अफ़रोडाइट बच नहीं सकी। फिर उसने कालांतर में जिउस के साथ स्वेच्छा से दैहिक संबंध बना लिए, जिसके कारणवश जिउस की पत्नी देवी हेरा अत्यंत क्रुद्ध हुई और ईर्ष्या से भर गई।

हेरा ने अफ़रोडाइट के पेट पर हाथ रखते हुए उसकी सभी संतानों को कुरूपता का श्राप दे दिया था, जिसके फलस्वरूप जिउस और अफरोडाइट का बच्चा, प्रियापोस बेहद कुरूप और मांस के लोथड़े की

तरह से पैदा हुआ, जिसे अफ़रोडाइट ने देवलोक से धरती लोक के एक पहाड़ के ऊपर फेंक दिया। इस कथा से यह स्पष्ट होता है कि, देवताओं का राजा जिउस भी अफ़रोडाइट को पाने के लिए देह बल का प्रयोग करता है और सफल नहीं होने पर सम्मोहन के माध्यम से उसके साथ सहवास के संबंध स्थापित करने में सफल हो जाता है, भले ही उसकी पत्नी हेरा ने उन दोनो की संतान को कुरूपता का श्राप दे दिया था। सो इस कथा में, देवता जिउस की, सौंदर्य के प्रति आसक्ति और आसक्ति के चरमोत्कर्ष के रूप में, देह संसर्ग के उपरान्त, उसकी पत्नी हेरा की ईर्ष्या का प्रदर्शन देखने को मिलता है, किंतु कथा में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि, अपंग शिल्पी देव हेफिस्टोस से ब्याह करते ही, अफ़रोडाइट उसकी पुत्र वधु हो गई थी फिर भी उसने अपनी पुत्र वधु से प्रेम संबंध स्थापित किए और एक बच्चे का पिता भी बना। वह ना केवल देवताओं का राजा था बल्कि अफ़रोडाइट के लिए ससुर होकर पिता तुल्य भी था, लेकिन उसने येन केन प्रकारेण दैहिक संसर्ग का मार्ग चुना...

ये सारे आख्यान देवी अफ़रोडाइट को संबोधित हैं जो लालसा, सुंदरता, प्रसन्नता, प्रेम और प्रजनन की देवी है, जोकि अपने अनिद्य सौंदर्य के चलते विख्यात रही है। इस देवी के साथ अनेकों प्रेम कथाएं जुड़ी हुई हैं, अनेकों देवताओं के से लेकर नश्वर मनुष्य तक उसके अल्पावधि अथवा दीर्घाकालिक यौन संबंध रहे हैं। आमतौर पर अफ़रोडाइट को युद्ध के देवता सेरेस की पत्नी माना जाता है, लेकिन उसके प्रेम संबंधों की भरमार से ऐसा लगता है कि, ग्रीक देवी देवताओं को सौंदर्यप्रिय, प्रजननशील और सहवास के उत्सुक, यहां तक कि बलात्कार की चेष्टा करने वाले देवताओं के रूप में भी स्वीकार किया जा सकता है। कुल मिलाकर इन कहानियों से कुछ स्पष्ट संकेत मिलते हैं, मिसाल के तौर पर यह कि, ब्रह्माण्ड में जीवन दो तरह का है, एक धरती पर नश्वर मनुष्यों का जीवन और दूसरे देवलोक तथा पाताल लोक में अमरत्व प्राप्त देवी देवताओं का जीवन।

इसके इतर इन कथाओं से यह संकेत भी मिलते भी हैं कि, प्रेम और यौन संबंधों के सामान्य अथवा असामान्य प्रारूपों में देवता और देवियां, नश्वर मनुष्यों की तरह की लालसाएं रखते हैं और जीवन जीते हैं। देवी देवताओं और साधारण मनुष्यों में यौनिक लोलुपताओं, सह जीवन, वैवाहिक प्रणय सम्बन्ध अथवा विवाहेत्तर अनैतिक सम्बन्ध बहु-पुरुष/देव या बहु-स्त्री/देवी गामिता का साम्य देखने से, यह भी प्रतीत होता है कि जैसे देवी देवता, मुनष्यों की मानस संताने हैं और वे मनुष्यों से भिन्न हो ही नहीं सकते। अमरत्व प्राप्त देवी देवताओं में मनुष्यों की तरह से वर्जनाओं के उल्लंघन या जीवन संगी से प्रणय संबंधों में धोखेबाजी के वृत्तांत बहुतायत से कहे गए हैं। अतः देवत्व का कल्पना लोक, मनुष्यों के वास्तविक भूलोक से मिलता जुलता है। कामुकता इन दोनों लोकों की प्राथमिक वरीयता है, सो इन कथाओं में मनुष्यों का हस्तक्षेप स्पष्टतः परिलक्षित है।

हेडेस और पर्सेफोन

कहते हैं कि, पाताल लोक के देवता हेडेस को प्रकृति की देवी डेमेटर की पुत्री पर्सेफोन को देखते ही प्यार हो गया था और उसने अपने भाई, देवलोक के राजा जिउस से सहायता की मांग की और यह तय हुआ कि, वह पर्सेफोन का सुनियोजित अपहरण करेंगे। अपहरण के बाद पर्सेफोन को, पाताल लोक ले जाया गया और हेडेस ने उसे अपनी पत्नी बना लिया हालांकि पर्सेफोन शुरू में बहुत दुखी थी, लेकिन कालांतर में उसे हेडेस से प्रेम हो गया। हुआ ये कि, एक सुबह देवी डेमेटर धरती पर उतरी, उसने अपनी पुत्री पर्सेफोन को खेलने के लिए नेरीडस और नायड, सायन आदि के साथ खेलने छोड़ दिया, जोकि नदियों, झरनों और झीलों के मीठे पानी की अप्सराएं थीं। डेमेटर धरती पर अपनी फसलों की देखभाल करने में व्यस्त हो गई, जब, पर्सेफोन अप्सराओं के साथ खेलने में व्यस्त थी, तभी उसका ध्यान घाटी के सुगंधित पीले फूलों, नार्सिसस की ओर चला गया और उसने कहा कि, अप्सराएं उसके साथ घाटी तक चले, लेकिन अप्सराएं, अगर अपने मीठे पानी के स्रोत को छोड़कर जातीं तो उनकी मृत्यु हो जाती।

पर्सेफोन ने इन फूलों को तोड़ने की बहुत कोशिश की, जिससे उसकी शक्ति क्षीण होने लगी लेकिन नार्सिसस का फूल, अत्यधिक बल लगाने के बाद टूटा और उसका तना फिर भी धरती पर बना रहा, अचानक उसने देखा कि, तने की आकृति बढ़ने लगी है और उसमें एक छेद जैसा प्रकट हुआ, जिसे देखकर वह डर गई। अचानक उसे धरती पर एक विशाल छेद दिखाई दिया, जिसमें से घोड़ों के रथ की आवाज आई। उसने पाया कि, हेडेस उसका अपहरण करना चाहता है, उसकी चीख पुकार सुनकर, अप्सरा नायड और सायन ने उसे बचाने की कोशिश की,

किंतु पाताल लोक के देवता हेडेस के सामने उनका कोई मुकाबला नहीं था। अपनी सखि पर्सेफोन के अपहरण का दुख मनाते हुए सायन के आंसू बहने लगे। जब पर्सेफोन की मां डेमेटर उस स्थान पर वापस पहुंची, जहां उसने अपनी पुत्री को छोड़ा था, तो अप्सराओं ने रोते हुए पर्सेफोन के अपहरण का हाल कहा, लेकिन वे लोग साफ साफ यह नहीं बता पाईं कि, पर्सेफोन को कौन ले गया। डेमेटर ने क्रोध में आकर सभी अप्सराओं को बदसूरत और क्रूर किस्म की महिला बनने का श्राप दे दिया, हालांकि सायन के रुदन से वह प्रभावित थी, इसलिए उसने सायन को नदी के रूप में बहने का वरदान दिया।

इसके बाद डेमेटर पागलों की तरह से अपनी पुत्री को ढूंढने लगी, उसके हाथों में एक मशाल थी और वह पूरी पृथ्वी पर नौ लंबे दिन और नौ लंबी रात लगातार घूमती रही। अंत में उसकी भेंट जादू टोने और आत्माओं के देवता हैकेट से हुई, जिसने उसे सूर्य देव हेलिओस से मदद मांगने को कहा। हेलिओस ने डेमेटर को बताया कि, किस तरह से हेडेस ने पर्सेफोन को पाताल लोक में खींच लिया है। डेमेटर ने हेडेस से अनुरोध किया कि, वह जवान पर्सेफोन को पाताल लोक में ना रखे, बल्कि उसे धरती पर रहने के लिए वापस भेज दे, जिसने अपने भाई जिउस से चर्चा की और यह तय किया कि पर्सेफोन शुरू के छह माह तक धरती पर रहेगी और बाकी के छै माह पाताल लोक में। लिए गए निर्णय के अनुसार पर्सेफोन को अनार के बीज खाने के लिए कहा गया, जिसके अनुसार उसे छै माह के लिए, पाताल लोक में लौटने की शर्त को मानना था और शेष समय अपनी मां डेमेटर के साथ व्यतीत कर सकती थी। बहरहाल जब भी पर्सेफोन पाताल लोक को छोड़कर धरती पर आती है तो यह समय धरती पर वसंत का समय होता है और जब वापस पाताल लोक चली जाती है तो, उस समय धरती पर सर्दी की ऋतु होती है। पर्सेफोन का वापस आना ग्रीस राष्ट्र में महान उत्सव के अवसर देता है और यह भी कहता है कि, पर्सेफोन को जिउस और हेडेस की शर्तों के अनुसार, छै माह हेडेस की रानी की तरह से पाताल लोक में बिताना है...

यह ग्रीक की अद्भुत कथा है, जिसके अनुसार पर्सेफोन प्रकृति की देवी डेमेटर की पुत्री है जो, धरती पर हरियाली और फसलों की देख रेख करने वाली देवी है। जब वह अपनी पुत्री को लेकर धरती पर आती है तो अपनी फसलों के निरीक्षण के समय अपनी पुत्री को मीठे पानी की अप्सराओं के हवाले कर के काम से चली जाती है और अपहरण का सारा घटनाक्रम उसकी अनुपस्थिति में घटता है। यह एक पक्षीय प्रेम है। पाताल लोक का देवता, अपनी तुष्टि के लिए पर्सेफोन का अपहरण करता है और पर्सेफोन पाताल लोक पर जाने तथा अपहरण और विवाह हो जाने के, लंबे समय के बाद हेडेस से प्रेम कर पाती है। नि:संदेह ये ब्याह हो जाने के उपरांत का प्रेम है। जो शुरुआती दौर में केवल हेडेस का प्रेम था। हेडेस ने अपने प्रेम के लिए, अपने भाई देवता जिउस से मदद ली और वे दोनों, इस अपहरण के मुख्य षडयंत्रकारी थे, जबकि, पर्सेफोन की धरती वापसी के समय वे दोनों, निर्णायक भी बन गए कि, पर्सेफोन अपनी मां के पास केवल छै माह रह सकेगी और उसे अगले छै माह अपने पति हेडेस के साथ गुजारना होंगे।

अपहरण के समय कमनीय अप्सराएं शक्तिशाली हेडेस का मुकाबला करके पर्सेफोन को बचा नहीं सकीं और वे यह संकेत देने में भी असफल रहीं कि, पर्सेफोन का अपहरण किसने किया? केवल सायन ही ऐसी अप्सरा थी जो, हेडेस से मुकाबला तो नहीं कर सकी, लेकिन वह अपनी जिम्मेदारी में असफल रहने के कारण शोकाकुल रही। अतः उसके आंसुओं का एक नदी के रूप में बदल जाने का कथन शानदार है, जबकि अन्य अप्सराओं को क्रूर तथा बदसूरत स्त्रियों के तौर पर जीवन गुजारने का श्राप मिलता है। एक उल्लेखनीय कथन यह भी है कि वे, पर्सेफोन की मदद के लिए, उसके साथ फूलों की घाटी पर नहीं गईं थी, क्योंकि उनके जीवन का स्रोत मीठा जल था, जिससे दूर जाने पर स्वयं उनकी मृत्यु का संकट उनके सामने खड़ा हो जाता, बहरहाल उन्होंने, अपनी मृत्यु तो टाल दी, लेकिन क्रूर और बदसूरत स्त्रियों का जीवन जीने के लिए अभिशापित हो गई।

जहां पर्सेफोन की मां पूरी धरती पर मशाल की नन्ही रोशनी में अपनी पुत्री को ढूंढती फिरती है। वहीं उसे जादू टोने के देवता के माध्यम से असीमित रोशनी के देवता सूर्य की मदद मिलती है। यद्यपि वो अपनी पुत्री की, धरती पर शत प्रतिशत वापसी तो नहीं करवा पाती, लेकिन धरती और पाताल के बीच यानि कि, धरती के सामान्य नागरिकों और पर्सीफोन के पति देवता हेडेस, के बीच समय को दो हिस्सों में जरूर बांट पाती है। पर्सेफोन का धरती पर आगमन, वसंत ऋतु और त्योहारों का समय है, जबकि धरती से उसकी विदाई के उपरान्त पाताल लोक यानि कि, प्रतीकात्मक रूप अन्धकार के देवता हेडेस के साथ गुजारने का काल, धरती पर शीत ऋतु का समय है...

आर्फियस और यूरीडाइस

आर्फियस और यूरीडाइस में मोहब्बत थी यूरीडाइस जो कि, एक सुंदर अप्सरा थी। आर्फियस, अपोलो का पुत्र था और स्वयं अपोलो ने उसे वाद्य यंत्र बजाने, विशेषकर वीणा वादन की शिक्षा दी थी। आर्फियस का संगीत लोगों को मंत्रमुग्ध कर देता था और लोग चाहते थे कि, वे इसे लगातार सुनते ही रहें। यूरीडाइस भी आर्फियस की दीवानी थी और फिर उन दोनों ने ब्याह कर लिया और एक साथ खुशी से जिंदगी बिताने लगे, लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। यूरीडाइस की सुंदरता से प्रभावित होकर एरिसस्टियस नाम के चरवाहे ने उसे बहकाने की कोशिश की, जिससे यूरीडाइस, बेहद नाराज हुई और उसने इसका आक्रामक तथा नकारात्मक जवाब दिया। जब वह वहां से वापस निकल रही थी तो उस जगह पर उसे एक सांप ने काट लिया परिणामस्वरूप यूरीडाइस की मृत्यु हो गई। अपनी पत्नी की मृत्यु से आर्फियस हताश, निराश और दुखी हो गया। उसने पाताल लोक के देवता हेडेस से प्रार्थना की कि, वो उसका संगीत सुन लें। उसके संगीत को सुनकर हेडेस आनंद से भर गए और उन्होंने आर्फियस से पूछा तुम क्या चाहते हो?

आर्फियस ने कहा कि वह अपनी पत्नी यूरीडाइस को जीवित धरती पर ले जाना चाहता है। हेडेस उसके संगीत से मंत्रमुग्ध थे, अतः उन्होंने एक शर्त रखते हुए कहा कि, पाताल लोक से धरती तक जाते हुए तुम मुड़कर नहीं देखोगे तो यूरीडाइस तुम्हारे साथ धरती लोक पर चली जाएगी, लेकिन आर्फियस अपनी पत्नी को देखने का लोभ संवरण नहीं कर सका और उसने बीच रास्ते में ही मुड़कर यूरीडाइस को देखने की भूल कर दी, इसलिए हेडेस की शर्त के अनुसार वह अपनी दिवंगत पत्नी को

पाताल लोक से धरती पर नहीं ला सका। उसे अकेले ही धरती पर लौटना पड़ा। उसने एक बार फिर से वीणा वादन किया ताकि, वह दिव्य संगीत के माध्यम से अपनी पत्नी के साथ जुड़ सके। अपनी पत्नी को धरती पर वापस नहीं ला पाने और उसकी असामयिक मृत्यु से आर्फियस इतना दुखी था कि, उसने कसम खाई कि अब वह कभी भी, किसी से प्रेम नहीं करेगा।

यह कथा कुलीन परिवारों, विशेषकर देवता और अप्सराओं के संयोग का उदघाटन करती है, लेकिन यह भी स्पष्ट करती है कि, अप्सराओं की मृत्यु हो सकती है और उन्हें मृत्यु के उपरांत, पाताल लोक जाना पड़ सकता है। इस आख्यान से स्पष्ट होता है कि, आर्फियस और यूरीडाइस का प्रेम उन्हें पति-पत्नी के रूप में एक दूसरे के साथ जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित करता है, किंतु सुंदर यूरीडाइस के प्रति आकर्षित चरवाहा, उसे बहकाने का यत्न करता है, जिससे नाराज होकर वह नकारात्मक प्रक्रिया देती है, किंतु घर वापस लौटते समय सांप के काट लेने से उसकी मृत्यु हो जाती है। अपनी पत्नी की असामयिक मृत्यु से आर्फियस दुखी है और चाहता है कि, वह अपनी पत्नी को पाताल लोक से धरती पर वापस लाये। इसके लिए वह अपने दिव्य संगीत के माध्यम से पाताल लोक के देवता हेडेस को प्रसन्न करता है और उनसे वरदान प्राप्त करता है कि, यूरीडाइस उसके साथ धरती पर वापस जा सकती है, बशर्ते पाताल लोक से धरती लोक के रास्ते के दरम्यान ऑर्फियस अपनी पत्नी की ओर मुड़कर नहीं देखे, लेकिन यह आख्यान इन दोनों के गहन आकर्षण की बात कहता है, तो ऑर्फियस अपना लोभ संवरण नहीं कर पाता और रास्ते में ही अपनी पत्नी की ओर मुड़ कर देख लेता है, जिसकी परिणति यह होती है कि, हेडेस की शर्त भंग हो जाती है और यूरीडाइस की धरती लोक पर वापसी का प्रकरण समाप्त हो जाता है।

अपनी पत्नी के वियोग में धरती पर ऑर्फियस अपने संगीत की साधना करता है और लोग उससे मंत्रमुग्ध होते रहते हैं, लेकिन वो यह

सौगंध लेता है कि, अब जीवन में किसी अन्य स्त्री से प्रेम नहीं करेगा। यह कथा सौंदर्य और संगीत निपुणता के पारस्परिक आकर्षण की कथा है, जहां प्रेम, दांपत्य जीवन में प्रवेश तो करता है, किंतु परपुरुष के हस्तक्षेप के कारण, संयोग ऐसा बनता है कि, सौंदर्य अपना जीवन खो बैठता है और मृत्यु लोक जा पहुंचता है। संगीत की दक्षता यह प्रयास करती है कि, सौंदर्य को जीवित ही पाताल लोक से धरती पर वापस ला सके, किंतु प्रबल आकर्षण, शर्तों की बाध्यता नहीं मानता और यही, ऑर्फियस और यूरीडाइस के प्रकरण में हुआ कि, शर्त भंग होने के कारण यूरीडाइस जीवित धरती पर नहीं लौट सकी, अंततः ऑर्फियस अपनी पत्नी के प्रति अपनी वफादारी का सबूत देता है और यह शपथ लेता है कि, वह यूरीडाइस के बाद किसी अन्य स्त्री से प्रेम नहीं करेगा। यह कथा दु:खद तो है किंतु इस कथा से यह भी स्पष्ट होता है कि, प्रेम हो, प्रेम की परिणति, दांपत्य जीवन के रूप में भी हो, लेकिन पारस्परिक वफादारी जीवित रहे, भले ही जीवन संगी सामने मौजूद हो अथवा नहीं...

पिरामस और थिस्बे

पिरामस और थिस्बे पड़ोसी थे और बचपन से ही एक दूसरे को जानते थे, हालांकि उनके परिवारों में दुश्मनी थी और उन दोनों परिवारों ने अहाते के बीच में एक दीवार खड़ी कर दी थी, ताकि वे एक दूसरे के संपर्क में ना रहें। बहरहाल पिरामस और थिस्बे बचपन से ही, एक दूसरे के प्रति आकर्षित थे और जवान होते होते, उनका आकर्षण, प्रेम में बदल गया। वे एक दूसरे के साथ इशारों में बात करते, लेकिन किसी सार्वजनिक स्थान पर बात करने से डरते, क्योंकि उनकी जग हंसाई का खतरा था। उन्हीं दिनों, उनके कस्बे में एक हल्का सा भूकंप आया, जिसकी वजह से उनके घर की विभाजन रेखा पर खड़ी दीवार में एक हल्की सी दरार पैदा हो गई, जिसमें एक नन्हा सा छेद भी था। भूकंप भले ही प्राकृतिक आपदा था, लेकिन इन दोनों प्रेमियों के लिए संपर्क का द्वार खोल गया। उन्होंने दीवार के छेद का इस्तेमाल आपसी बातचीत के लिए किया। वे जानते थे कि, उनके परिवार एक दूसरे के लिए नफरत के भाव रखते हैं, इसलिए उन्हें यह पक्का पता था कि, दोनों परिवार उनके प्रेम संबंध को किसी भी तरह से स्वीकार नहीं करेंगे, इसलिए उनके दरम्यान जो भी बातचीत थी, वह छुप छुपाकर थी और परिजनों को इस बात का जरा भी अंदेशा नहीं था, कि पिरामस और थिस्बे एक दूसरे से प्यार करने लगे हैं।

जल्द ही उन दोनों को यह एहसास हो गया कि, पारिवारिक दुश्मनी के चलते उनका विवाह संभव नहीं है, अतः उन्होंने भागकर शादी करने की ठान ली। उन्होंने तय किया कि, कस्बे की सीमा रेखा पर बह रही नदी को एक सुनिश्चित समय में पार करके वो, एक दूसरे के साथ, कहीं दूर पलायन कर जाएंगे और ब्याह कर लेंगे, उन्हें यह भी उम्मीद थी कि, विवाह के बाद जैसे-जैसे समय बीतेगा, उनके परिजन, उनके संबंधों को

स्वीकार कर लेंगे, बस इसी उम्मीद के सहारे उन दोनों ने किसी से बताए बिना पलायन करने की योजना बना ली। अब हुआ यह कि थिस्बे तयशुदा दिन को, नदी के किनारे पहुंच गई, उसने सबसे छुपने के लिए अपने सिर पर एक बड़ा सा आंचल डाला हुआ था, तभी उसने देखा कि, एक शेरनी जोकि शिकार करके नदी में पानी पीने आई थी और जिसके पंजे और मुंह पर खून लगा हुआ था। उसे देखकर थिस्बे, डर गई और छुपने के लिए पास की गुफा में भागी। उसकी बदहवासी के चलते, उसका आंचल वहीं पर गिर गया और पानी पीकर लौट रही शेरनी ने उस आंचल को देख कर उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया, जिससे आंचल के टुकड़ों पर खून के दाग लग गए फिर थोड़ी देर बाद, शेरनी उकता कर जंगल में वापस चली गई।

इसी दौरान पिरामस वहां पहुंचा और आंचल के खून लगे टुकड़े देखकर वह स्तब्ध रह गया। उसे कुछ सूझा ही नहीं, उसे लगा, कि किसी जंगली जानवर ने थिस्बे के प्राण ले लिए हैं और उसकी निशानी बतौर आंचल तार तार होकर, जेमीन पर पर पड़ा हुआ है। वह बहुत दुखी था और घटनाक्रम के लिए स्वयं को जिम्मेदार मान रहा था, क्योंकि वह थिस्बे के मुकाबले, वहां पर देर से पहुंचा था। उसने अपनी ही तलवार से आत्महत्या कर ली। उसे लगा कि, मृत्यु के बाद वो अपनी प्रेयसी के पास पहुंच जाएगा। तभी निरापद समय जानकर थिस्बे भी गुफा से बाहर आई और उसने देखा पिरामस मर चुका है। वह गहन दुख और अवसाद से घिर गई। उसे अपने आंचल के टुकड़े और प्रेमी की मृत देह के सिवा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। उसने तय किया कि, यदि नियति को यही मंजूर है, तो यही सही। उसने देवताओं से प्रार्थना की, कि, उन दोनों के परिजन मृत्यु के उपरांत उन्हें क्षमा कर दें और दुश्मनी भुलाकर एक ही कब्र में दफन कर दें।

इसके बाद उसने खुद भी पिरामस की तलवार से आत्महत्या कर ली। दोनों प्रेमियों के शव जिस दरख़्त के नीचे गिरे थे, उसमें सफेद फल लगते थे, लेकिन प्रेमियों के खून से उसकी जड़ें लाल हो गई और उसमें

लाल रंग के फल आने लगे। कालांतर में, इस दरख्त को शहतूत के नाम से जाना गया। प्रेमियों की मृत्यु के बाद उनके परिजनों को आघात पहुंचा और उन्होंने पारस्परिक शत्रुता को भुला कर पिरामस और थिस्बे के मृत शरीर को एक ही कब्र में दफना दिया तथा अपने घरों के बीच की दीवार तोड़ दी। उन्होंने तय किया कि, प्रेमी युगल की मृत देह, जिस वृक्ष के नीचे मौजूद थी। वे उसे सदा जीवित रखेंगे।

यह आख्यान, पड़ोस में रहने वाले, किंतु दिलों में दूरियां बनाए हुए दो परिवारों के, मासूम बच्चों से जवान हो चुके और एक दूसरे के प्रति अनुरक्त हो गए, जोड़े की कथा कहता है। उन युवाओं को समाज की निंदा का भय है और अपने परिवार के लोगों से यह उम्मीद नहीं है कि, वह परस्पर समझौता करते हुए उन दोनों को क्षमा कर देंगे। बहरहाल प्रकृति ने उनके ऊपर एक उपकार किया कि, दुश्मन परिवारों के दरम्यान जो दीवार बनी हुई थी, उसमें आई दरार और उस दरार में मौजूद एक नन्हे से छेद ने उन्हें पारस्परिक संवाद का अवसर दिया। दोनों बहुत दिनों तक छुप-छुपकर मिलते रहे। संकेतों में बात करते किंतु अपने परिवार और समाज से भयभीत बने रहे। उन्होंने तय किया कि, उन्हें अपने प्रेम को ब्याह की दिशा में ले जाना चाहिए और इसके लिए उन्होंने सह पलायन का मार्ग खोजा। कथा कहती है कि, सह पलायन की पृष्ठभूमि में एक नन्हीं सी उम्मीद की किरण भी छुपी थी कि, शायद उनके परिजन ब्याह के पश्चात उन्हें और उनके संबंध को स्वीकार कर लेंगे और पारस्परिक शत्रुता का त्याग कर देंगे।

उन्होंने यह तय किया कि, शहर के छोर से बहती हुई नदी को पार करके, वे अपना लक्ष्य पूरा करेंगे और एक निश्चित समय पर दोनों ने नदी के तट पर मिलने का वादा किया, लेकिन निर्धारित दिन, थिस्बे समय से थोड़ा पहले नदी तट पर पहुंच गई। उसने अपनी पहचान छुपाने के लिए, अपने ऊपर एक आंचल डाल रखा था। यह माना जाना चाहिए कि, उनका प्रेम भी इसी तरह से अदृश्य था, जिसकी जानकारी समाज और

परिवार को नहीं थी, यानि कि, उनके प्रेम पर भी एक आंचल पड़ा हुआ था। नदी के तट पर शेरनी को देखकर थिस्बे डर जाती है और अपनी जान बचाने के लिए पास की गुफा में छुप जाती है। इसी आपा धापी में उसका आंचल वहां पर छूट जाता है, जिससे, पानी पीने के बाद लौट रही शेरनी, खिलवाड़ करती है और अपने खून आलूदा मुंह और पंजों से, उस आंचल के टुकड़े-टुकड़े कर देती है तथा उकताकर जंगल वापस लौट जाती है। उसी समय पिरामस नदी के तट पर पहुंचता है और अपनी प्रेमिका का आंचल देख कर गहन अवसाद से घिर जाता है।

वह सोचता है कि, यह उसकी भूल थी कि, वह अपनी प्रेमिका से पहले तट पर नहीं पहुंचा और उसकी देरी की वजह से उसकी प्रेमिका को अपने प्राणों की आहुति देना पड़ी। उसमें एक अपराध गहरा गया था कि, अपनी प्रेमिका की मृत्यु का कारण वह स्वयं है। वह अपनी प्रेमिका से इतना अधिक प्रेम करता था कि, उसे वहां ना पाकर, उसे कुछ और सूझा ही नहीं, उसने यह भी नहीं सोचा कि, अगर आंचल के खून आलूदा टुकड़े यहां पर हैं, तो थिस्बे की कुछ हड्डियां और मांस के कुछ टुकड़े भी वहां पर होना चाहिए, यानि कि, उसे अपनी प्रेमिका के जीवित होने की संभावना पर भी विचार करना चाहिए था, किंतु वह प्रेम में अंधा, विवेकहीन होने की कहावत को पूरा करने वाला इंसान लगता है। उसने उस वृक्ष के नीचे आत्महत्या कर ली, जहां पर उसकी प्रेमिका के आंचल के टुकड़े बिखरे पड़े थे। कुछ समय बाद उसकी प्रेमिका यह मानकर कि, शेरनी वापस चली गई होगी, गुफा से बाहर निकलती है और देखती है कि उसका प्रेमी उसके खून आलूदा, आंचल के टुकड़ों के पास मृत पड़ा हुआ है।

वह स्तब्ध हो जाती है और गहन दु:ख के क्षण में, देवताओं का आह्वान करती है कि, वह अपने प्रेमी के बिना जीवित नहीं रहना चाहती, अतः देवता आशीष दें कि, उन दोनों की मृत्यु के बाद उनके परिजनों की शत्रुता समाप्त हो जाए और उन दोनों को एक ही कब्र में दफना दिया

जाए। हुआ भी यही, कि, उनकी मृत्यु की खबर पाते ही, उनके परिजन अत्यंत विचलित हो गए और उन्होंने पिरामस और थिस्बे को एक ही कब्र में दफना दिया तथा उस दरख़्त को जीवित रखने की बात अपने मन में ठान ली, क्योंकि उनकी जवान संतानों का खून उस दरख़्त की जड़ों में समा गया था और वे उसका रक्षण भी अपने बच्चों की तरह से करना चाहते थे। उन्होंने उस पेड़ को जीवित रखने और अपने घरों के बीच की दीवार को नष्ट करने की बात तय कर ली। हमें इस कथा के दु:खांत होने का प्रमाण मिलता है, किंतु इस कथा का प्रेमी जोड़ा, सबसे छुपकर अपने प्रेम को पाना चाहता था। वे दोनों छुपकर नदी तट पर पहुंचे थे।

जहां उन्हें समझने बूझने का अवसर भी नहीं मिला और अपने प्राण त्यागना पड़े, जिसके कारणवश सफेद फलों वाला वृक्ष लाल फलों वाले वृक्ष में कायांतरित हुआ और उनका अप्रकट प्रेम सब पर प्रकट हो गया। उस प्रेम ने परिवारों की दुश्मनी को खत्म कर दिया। यह कथा इस अर्थ में अप्रकट प्रेम होने पर शत्रुता के जीवित रहने और प्रेम के प्रकट होने पर शत्रुता के मर जाने की कथा है। यहां प्रकृति उस जोड़े की आहुति लेती है और एक फल लदे पेड़ के रूप में, उनके जीवन का प्रतीक बन कर अस्तित्वमान बनी रहती है। यही नहीं, शिकारी शेरनी और देवतागण इस घटनाक्रम के मुख्य किन्तु प्रतीकात्मक किरदार हैं। जिन्होंने प्रेमियों की मृत्यु को दुश्मनी की मृत्यु के रूप में बदल कर रख दिया...

पोसीडॉन और एम्फीट्राईटी

पोसीडॉन पाताल लोक का देवता है, जो कभी किसी भी बात पर नाराज और खुश हो सकता है। यह उसके मूड पर निर्भर है कि, धरती पर कब सुनामी या भूकंप आ जाए। देवलोक का राजा जिउस उसका भाई है, जिसे फ़िक्र थी, कि किस प्रकार से पोसीडॉन को शांत और खुशहाल रखा जाए। उसने सोचा अगर पोसीडॉन का विवाह कर दिया जाए तो इससे उसके स्वभाव में फर्क पड़ेगा। उसने समुद्र के देवता नेरेस से कहा कि, वो अपनी पुत्रियों में से किसी एक का ब्याह पोसीडॉन के साथ कर दे। नेरेस, जिउस के इस प्रस्ताव से बेहद प्रसन्न हुआ। संयोगवश पोसीडॉन ने नेरेस की एक पुत्री एम्फीट्राईटी को समुद्र में नाचते गाते, अठखेलियां करते हुए देखा था। वो उस पर मुग्ध हो गया था फिर उसने सोचा कि, उसे अप्सरा एम्फीट्राईटी से ब्याह करना चाहिए, एम्फीट्राईटी से ब्याह की उत्सुकता वश उसने हडबडी से काम लिया।

बहरहाल जिउस और नेरेस द्वारा संयुक्त रूप से तय समय पर नेरेस की सभी पुत्रियां पोसीडॉन के सामने उपस्थित हुईं, लेकिन पोसीडॉन ने कहा वो एम्फीट्राईटी से ब्याह करेगा। एम्फीट्राईटी उसके व्यवहार को लेकर पहले भी खुश नहीं थी, उसने पोसीडॉन से ब्याह करने से साफ़ इनकार कर दिया और समुद्र की असीम गहराई में छुप गयी। पोसीडॉन, एम्फीट्राईटी की अस्वीकृति से बेहद नाराज था और उसने समुद्र के चप्पे चप्पे की खोज करवाई, लेकिन एम्फीट्राईटी, उसे कहीं नहीं मिली, इधर देवता जिउस भी एम्फीट्राईटी की मां से कहता है कि, वो अपनी पुत्री को ढूंढ निकाले। इस घटना के बाद पोसीडॉन का गुस्सा तो बढ़ रहा था, लेकिन वो हतोत्साहित नहीं हुआ। उसने अपनी सबसे वफादार डालफिन

को एम्फीट्राईटी को खोजने और समझा बुझा कर वापस लाने के लिए भेजा।

डालफिन ने एम्फीट्राईटी को खोज निकाला और उसे समझाया कि, पोसीडॉन बुरा देवता नहीं है और वो एम्फीट्राईटी को अत्यधिक प्रेम करता है। उसने यह भी कहा कि, देवता जिउस और एम्फीट्राईटी के पालक इस ब्याह के लिए सहमत हैं। अंततः डालफिन की मेहनत रंग लाई और एम्फीट्राईटी, पोसीडॉन से ब्याह के लिए राजी होकर वापस आ गयी। पोसीडॉन अपनी वफादार डालफिन के इस कारनामे से अत्यधिक प्रसन्न था, इसलिए, नेपच्यून ग्रह की हैसियत से, उसने डालफिन की छवि को अपने नक्षत्र मंडल में स्थान दिया, फिर एम्फीट्राईटी और पोसीडॉन का ब्याह हुआ। वे सुख पूर्वक समय व्यतीत करने लगे। इस ब्याह से समुद्र देवता, प्रशासित क्षेत्र में शांति हुई और पाताल लोक के देवता का स्वभाव भी अस्थिर न रहा, कालांतर में उन्हें अपने प्रणय जीवन का फल भी मिला। एक पुत्र ट्राईटन और दूसरी पुत्री रोड्स।

यह आख्यान, अन्धकार यानि कि, पाताल लोक के देवता की स्वभावगत उग्रता की ओर संकेत करता है, जोकि प्रेम के अभाव में अस्थिर चित्त है, गुस्सैल है। किसी युवा पुरुष अथवा देवता के अस्थिर चित्त की शांति का एक उपाय इस कथा से प्रकटित होता है कि, एकाकी युवा, देवता को प्रेम में होना चाहिए, अस्तु उसका ब्याह कर दिया जाए। देवता जिउस ने सोचा कि, स्त्रियों का सानिध्य, सहवास, बीमार को शिफा देता है, तो उसने ये उपाय अपने क्रोधी भाई के लिए आजमाया। निःसंदेह बात बात पर क्रोधित होना एक बीमारी ही है, जिससे व्यवस्था असंतुलित होती है, चाहे वह धरती की हो, समुद्र अथवा देवलोक की। पोसीडॉन की मनःअशांति को दर्शाने के लिए, समुद्र और धरती में सुनामी तथा भूकंप के प्रातीतिक संकेत दिए गए हैं। आख्यान कहता है कि, अगर देवता अशांत है तो समुद्र और धरती भी अशांत रहेंगे। अतः स्त्रियां और उनका प्रेम, देवलोक, पाताल लोक, धरती में जल थल या फिर देवताओं

के चित्त में व्यापित, अशांति का निवारण कर सकता है, यह तथ्य देवता के राजा जिउस भी मानते हैं।

कथा प्रकट रूप में कहती है कि, भाई अपने भाई की चिंता करता है, लेकिन उसका अप्रकट निहितार्थ भी है कि, देवताओं के राजा जिउस को अपने भाई के साथ ही साथ, व्यवस्थाजन्य चिंता भी है क्योंकि, पोसीडॉन के व्यवहार से धरती और समुद्र में अव्यवस्था, हिंसा और अस्थिरता फैल रही थी। वो पाताल लोक का प्रभारी देव है अतः उसकी चिकित्सा अपरिहार्य है। कथनाशय यह है कि, स्त्रियों के सानिध्य से वंचित होना, उनके प्रेम से दूरी, देवताओं को भी अयाचित असंतुलन देती है जोकि, उनके और सृष्टि के स्वास्थ्य के लिए कदापि उचित नहीं है। मोटे तौर पर हम यह स्वीकार कर सकते हैं कि, सृष्टि, धरती, नश्वर मनुष्य और अनश्वर देवता, सभी में, स्त्रियां तथा उनका प्रेम पूर्णता का अपरिहार्य तत्व है। स्त्रियों के बिना सब जग अधूरा है, व्यर्थ है, कदाचित पागलपन है। कथा कहती है कि, डालफिन, जोकि, एक बुद्धिमान जीव है, एम्फीट्राईटी को समझाती है कि, देवता और स्वयं उसके परिजन क्या चाहते हैं, पोसीडॉन की अस्थिरता, व्यग्रता, उग्रता का मूल कारण क्या है?

डालफिन का समझाना, उसका बुद्धि कौशल है, एम्फीट्राईटी का समझ जाना उसकी परिपक्वता है, जो कारणों, समस्या, के निवारण में, उसकी भूमिका के महत्व को रेखांकित करती है। पोसीडॉन, डालफिन के उपकार के बदले में, उसे नक्षत्र मंडल में स्थाई जगह देता है, क्रोध और अशांति से, व्यवस्था की मुक्ति के, व्यवहारिक समर्थन के लिए, एक तरह से अमरत्व देता है। ये ब्याह देवता और अप्सरा के अमरत्व का गठबंधन है, लेकिन डालफिन ने व्यवस्था के स्वास्थ्य लाभ के लिए, कोशिश की और अमरता अर्जित कर ली है, सो कथा सार यह भी है कि, कोई नश्वर जीव अगर चाहे तो, अमरत्व को हासिल कर सकता है और स्त्रियां, देवियां, कायनात का मूल एवं संतुलनकारी तत्व हैं। अगर सब कुछ शुभ और निरंतर है, तो उनका प्रेम, इसके लिए उत्तरदाई है। धरती, पाताल या

देवलोक में। ट्राईटन, रोड्स के रूप में या फिर, आख्यानों को कहने वाले, असंख्य जन समुदायों की शक्ल में...

हीरो और लिएंडर

देवी अफ़रोडाइट की पुजारी के रूप में हीरो, ऊंची पहाडी पर स्थित अफरोडाइट के मंदिर में रहती थी और देवी अफरोडाइट की पूजा अर्चना किया करती थी। चूंकि यह मंदिर समुद्री खाड़ी, गलियारे के ऊपर की पहाड़ी पर था, जहां से, रात के अंधियारे में भटके हुए समुद्र यात्रियों के लिए मंदिर की रौशनी, सही रास्ता, दिखाने के काम आया करती। अफ़रोडाइट की पुजारी होने के नाते हीरो, किसी पुरुष के साथ प्रेम संबंध नहीं रख सकती थी। पुरुषों से सम्बन्ध उसके लिए वर्जित था। उस मंदिर के निकट के समुद्री गलियारे के दूसरे छोर पर लिएंडर नाम का सुदर्शन युवक रहता था। उसने एक दिन हीरो को देखा और उसके प्रेम में मुब्तिला हो गया। उसने अपने वाक् चातुर्य से हीरो के हृदय में अपने प्रेम के बीज बो दिए।

लिएंडर की मुहब्बत में गिरफ्तार पुजारिन हीरो, हर रात में रोशनी किया करती ताकि उसका प्रियतम लिएंडर, खाड़ी में तैर कर उसके पास रात गुजारने के लिए आ जाए, किंतु एक रात बहुत भयंकर तूफान आया। तेज हवाओं ने मंदिर की रोशनी को बुझा दिया। लिएंडर उस रात हीरो तक पहुंचा ही नहीं। क्योंकि समुद्र की प्रचंड लहरों और तेज हवाओं के कारण, रास्ता भटक गया और डूब कर मर गया गया। अगली सुबह हीरो ने अपने प्रेमी को समुद्र में मृत देखा तो वह अवसाद में घिर गई। उसने ऊंची पहाड़ी से कूदकर आत्महत्या कर ली और बाद में उन दोनों के मृत शरीर एक दूसरे के आलिंगन में पाए गए, इसके बाद उन्हें एक साथ दफना दिया गया।

यह कथा अजीब है, जहां देवी अफ़रोडाइट, अपने प्रेम और सहवास

के एक से अधिक प्रकरणों के लिए कुख्यात या विख्यात रही है। वहीं उसकी पुजारिन हीरो को पुरुषों के सानिध्य से वंचित किया गया। हीरो को देवी के मंदिर में केवल देवी की पूजा अर्चना करना थी। मंदिर पहाड़ की ऊंचाई पर बना हुआ था, जिसके नीचे, समुद्री खाड़ी थी। रात के समय में मंदिर की रोशनी से, समुद्र में भटके हुए मुसाफिर अपनी मंजिलें पा जाते, लेकिन हीरो को अपनी आराध्य देवी की तरह से प्रेम करने या पुरुष के सानिध्य में रहने की वर्जना थी। हमें इस तरह के निषेध, अन्य परम्परागत रूढ़ीवादी धार्मिक समुदायों में भी देखने को मिलते हैं और कोई आश्चर्य नहीं कि, इन समुदायों में यौन कुंठाओं के कारण यौन अपराधों की भरमार दिखाई देती है। यौन जीवन मनुष्य की दिन प्रति दिन की अपरिहार्यता है, यदि उसका निषेध किया जाए तो उसके दुष्परिणाम भी देखने को मिलते हैं।

स्त्रियों तथा बच्चों के विरुद्ध यौन हिंसा में लिप्त, धार्मिक नेतृत्व कर्ताओं के हजारों प्रकरण, आज भी हमें, पूरी दुनिया में देखने को मिलते हैं। जहां सुधारवादी धार्मिक संप्रदायों की तुलना में परंपरागत धार्मिक संप्रदाय में लागू की गयी, कथित यौन वर्जनाओं के अधिकतर परिणाम यौन अपराधों के रूप में परिलक्षित होते हैं। इस कथा में पुजारी महिला है और उसे खाड़ी के उस पार रहने वाले सुदर्शन युवक से मोहब्बत हो गई है, किंतु वह दिन के समय, इस मोहब्बत को सार्वजानिक रूप से स्वीकार नहीं कर सकती, क्योंकि उस पर वर्जनायें आरोपित हैं कि, वह पुरुषों के सानिध्य में नहीं रहेगी, अस्तु हीरो रात के समय में अपने प्रेमी को मंदिर की रोशनी के माध्यम से रास्ता दिखाती है और प्रेमी उस समुद्री गलियारे को तैर कर पार करने का जोखिम उठाता है और अपनी प्रेयसी तक पहुंचता है। वो रात अपनी प्रेमिका के साथ गुजारता है और भोर होते ही अपने निवास स्थान में वापस चला जाता है।

बहरहाल जिस तरह से मनुष्यों में प्रेम और यौन संबंध, अपरिहार्य होते हैं, उसी तरह से विशाल समुद्रों और धरती में शान्ति तथा तूफानों का

आना भी अपरिहार्यता है। हीरो का प्रेमी लिएंडर इस अपरिहार्यता के चलते, उस रात मंदिर तक नहीं पहुंच पाता और प्रकृति के कोप का शिकार हो जाता है। उसकी प्रेमिका अगली सुबह, समुद्री गलियारे में उसकी लाश देखकर, स्वयं भी आत्महत्या कर लेती है। उन्हें बाद में एक ही कब्र में दफन कर दिया जाता है। कथा से यह तथ्य भी स्पष्ट होता है कि, अंधकार और वर्जनायें अक्सर, समुदायों को, मनुष्यों को, प्रेमियों को, सहज जीवन जीने नहीं देती...

ट्रिस्टन और इसोल्डा

इसोल्डा आयरलैंड की राजकुमारी है। उसके सौंदर्य की चर्चा दूर-दूर तक फ़ैली हुई है जबकि ट्रिस्टन, कार्नवाल के राजा मार्क की बहन का पुत्र है। ट्रिस्टन के बचपन में ही उसके माता पिता की मृत्यु हो गई थी और अपने मामा मार्क के राज्य में पालन पोषण के दौरान वह एक बेहतर तलवारबाज और वीणा वादक संगीतकार बन गया था। एक बार कॉर्नवाल, आयरलैंड के प्रति अपनी निष्ठा जताने के लिए लगान के रूप में युवक और युवतियों को आयरलैंड भेजता है, लेकिन वहां पर चर्चा होती है कि, अगर आयरलैंड के राजा के बहनोई मोरहॉल्ट को कोई कुश्ती में हरा सकता है तो इस लगान को देने की आवश्यकता नहीं होगी। ट्रिस्टन, मोर हॉल्ट को हरा देता है किंतु जहर बुझे भाले से स्वयं भी घायल हो जाता है और उसे मरने के लिए उस जहाज पर छोड़ दिया जाता है जो तैरते तैरते पुनः आयरलैंड के समुद्र तट पर पहुंच जाता है। जहां उसे शाही महल में एक जादूगर स्त्री मंत्रोपचार के द्वारा ठीक करती है।

इसी दरम्यान ट्रिस्टन को इसोल्डा से प्रेम हो जाता है और जैसे ही इसोल्डा को वह अपनी वास्तविक पहचान बताता है, तो वह जान जाती है कि, उसके चाचा की मृत्यु का कारण ट्रिस्टन है और वह प्रेम के बजाय ट्रिस्टन से नफरत करने लगती है। इसके बाद ट्रिस्टन वापस कार्नवाल लौट जाता है। कुछ समय के बाद राजा मार्क, इसोल्डा से शादी करने का इच्छुक होकर ट्रिस्टन को अपने दूत के बतौर आयरलैंड भेजता है। राजपरिवारों की चर्चा के उपरान्त इसोल्डा और मार्क की शादी तय हो जाती है, तब इसोल्डा की विदाई के समय जादूगरनी, इसोल्डा के साथ एक नौकरानी के हाथों प्रेम औषधि भेजती है। कार्नवाल वापसी के

दौरान, ट्रिस्टन और इसोल्डा को प्यास लगती है और वो दोनों गलती से उस प्रेम औषधि को पी लेते हैं तथा प्रेमपाश में बंध जाते हैं, चूंकि यह भूल, औषधि को रखने वाली नौकरानी बैंजियन के कारण होती है, तो नौकरानी अपने अपराध बोध से पीड़ित होकर, सुहागरात में राजा मार्क के बिस्तर पर इसोल्डा की जगह ले लेती है।

मार्क उसे इसोल्डा समझकर प्रेम करता है, जबकि इसोल्डा, ट्रिस्टन की बाहों में समय बिताने लगती है। मार्क को कुछ समय तक इस धोखे का पता नहीं चलता किंतु जैसे ही वह इस सत्य से परिचित होता है। वो ट्रिस्टन को अपने महल से भगा देता है लेकिन ट्रिस्टन और इसोल्डा गुप्त रूप से मिलते रहते हैं और इस गुप्त मिलन की खबर मिलते ही उन दोनों को जलाकर मार डालने की सजा दी जाती है, किन्तु वे दोनों वहां से भाग जाते हैं और जंगल में छुपकर रहने लगते हैं। जब मार्क को यह खबर मिलती है तो वह उन दोनों की हत्या के लिए उस जगह पहुंचता है, जहां वे दोनों गहरी नींद में सो रहे होते हैं और उनके दरम्यान एक तलवार मौजूद होती है, जिसे देखकर मार्क अपने भांजे ट्रिस्टन के लिए खेद महसूस करता है और इसोल्डा की अंगुली पर सांकेतिक रूप से अपनी अंगूठी को बदलते हुए माफ कर देता है तथा उन दोनों के बीच अपनी तलवार भी रख देता है।

नींद से जागने के बाद वो दोनों मार्क की दया से प्रभावित होकर दरबार में लौटते हैं। मार्क इसोल्डा का स्वागत तो करता है, लेकिन ट्रिस्टन को कार्नवाल से निष्कासित कर देता है और ट्रिस्टन, ब्रिटनी नाम की जगह पर रहने चला जाता है, जहां वह इसोल्डा के नाम की अन्य महिला से ब्याह कर लेता है, हालांकि वह अपनी नई पत्नी से प्यार नहीं करता और अपनी पूर्व प्रेमिका इसोल्डा के प्रति ही वफादार बना रहता है। आगे घटनाक्रम कुछ इस तरह से घटित होता है कि ट्रिस्टन, एक नए युद्ध में घायल हो जाता है, लेकिन उसका समय पर, कोई इलाज नहीं हो पाता तब उसका एक मित्र कार्नवाल जाकर उसकी पूर्व प्रेमिका इसोल्डा से

कहता है कि ट्रिस्टन मर रहा है और इसोल्डा को आखिरी बार देखना चाहता है। ट्रिस्टन अपने मित्र से कहता है कि, अगर इसोल्डा वापस आ रही हो तो वो अपने जहाज पर सफेद पाल फहरा दे और नहीं तो काला पाल, बदकिस्मती से ट्रिस्टन की पत्नी इसोल्डा इस योजना के बारे में सुन लेती है।

वो अपने पति ट्रिस्टन से झूठ बोलती है कि उसने, उसके मित्र के जहाज पर काला पाल देखा है, यह सुनकर ट्रिस्टन, हृदयाघात से मर जाता है। जब प्रेमिका इसोल्डा, ट्रिस्टन के मित्र के साथ उसके पास पहुंचती है। उसे पता चलता है कि ट्रिस्टन मर चुका है तो वह भी उसके ओंठ पर आखिरी चुम्बन लेते हुए अपने जीवन का परित्याग कर देती है।

ट्रिस्टन बचपन में ही अपने मां-बाप को खो चुका था और उसका पालन पोषण उसके मामा, कार्नवाल के राजा मार्क के यहां हुआ था। जहां वह एक कुशल तलवारबाज और वीणा वादक के रूप में प्रशिक्षित हुआ। मामा के संरक्षण में युवा होने के उपरांत, उसे आयरलैंड राज्य जाना पड़ता है क्योंकि, उसके मामा का राज्य, आयरलैंड को लगान देने वाले, अधीनस्थ राज्य जैसा है। आयरलैंड में, वह मामा के राज्य से अनेकों युवक-युवतियों को बतौर लगान लेकर जाता है, लेकिन वहां पर हुई चर्चा के अनुसार, आयरलैंड का राजा, अपने दिग्गज कुश्ती चैंपियन मोरहॉल्ट, जोकि उसका बहनोई भी है, को कुश्ती में हरा देने की स्थिति में, कार्नवाल की लगान माफी का वचन देता है। कथा के अनुसार ट्रिस्टन को पहले मोरहॉल्ट से और लम्बे समय बाद, किसी अन्य शत्रु से युद्ध लड़ना होता है, जिसमें मोरहॉल्ट को पराजित कर देने के बाद वह अपने मामा के राज्य का लगान तो माफ करवा लेता है, किंतु स्वयं भी विष बुझे भाले से घायल हो जाता है और उसे मरने के लिए, समुद्र में एक जहाज में छोड़ दिया जाता है।

दिलचस्प बात यह है कि जहाज बहते बहते पुनः आयरलैंड के तट पर आ पहुँचता है, जहां उसे, आयरलैंड के शाही महल में चिकित्सा का

लाभ मिलता है और इसोल्डा के साथ सोहबत का मौका भी। वह स्वस्थ तो होता है लेकिन इसोल्डा को, अपना वास्तविक परिचय देने के साथ ही, खो बैठता है, क्योंकि, जैसे ही इसोल्डा यह जानती है कि वो उसके पिता के बहनोई की मृत्यु का कारण है तो वो उससे नफरत करने लगती है। संयोगवश उसे इसोल्डा के साथ, पुनः प्रेम जीवन शुरू करने का अवसर मिलता है, यद्यपि यह अवसर उसके मामा के वैवाहिक जीवन के शुरू होने के साथ जुड़ा हुआ है। कथा मैं यह प्रकरण महत्वपूर्ण है कि एक अधीनस्थ राज्य कार्नवाल के राजा मार्क, बड़े राज्य आयरलैंड की राजकुमारी से ब्याह करने का इच्छुक है। संभवतः इसके राजनीतिक निहितार्थ भी हो सकते हैं। वो अपने भांजे ट्रिस्टन को इस संबंध की शुरुआत के लिए आयरलैंड भेजता है और इसोल्डा के उसके वैवाहिक जीवन पर सहमति बन जाती है।

संयोगवश महिला चिकित्सक के द्वारा दी गई, प्रेम औषधि, राजा मार्क के बजाए ट्रिस्टन और इसोल्डा के मध्य प्रेम का बीज अंकुरित कर देती है। वह नौकरानी जो इसोल्डा के साथ मार्क के पास जा रही थी, अपनी गलती को लेकर अपराध बोध से ग्रस्त है। वह स्वयं को मार्क के सम्मुख समर्पित कर देती है, हालांकि मार्क बाद में यह जान जाता है कि उसके सम्मुख समर्पित स्त्री इसोल्डा नहीं है। वह अपने भांजे और इसोल्डा को अपराधी मानते हुए, अग्नि स्नान के आदेश देता है, लेकिन वे दोनों वहां से बचकर भाग निकलते हैं। इसके उपरान्त राजा मार्क उस जंगल में जहां पहुंचता है, जहां वो दोनों गहरी नींद में सो रहे होते हैं और प्रतीकात्मक रूप से उनके दरम्यान एक तलवार रखी होती है। उन्हें गहरी नींद में देख कर राजा मार्क का हृदय पसीजता है और वह अपनी अंगूठी इसोल्डा की अंगुली में डालकर तथा अपनी तलवार, उन दोनों के मध्य रखकर, उनकी हत्या किए बगैर वापस लौट जाता है।

राजा मार्क की इस सहानुभूति से प्रेरित होकर प्रेमी जोड़ा वापस कार्नवाल लौटता है। आगे ये कथा कहती है कि, मार्क, इसोल्डा के प्रति

अधिक सहृदय हो जाता है किंतु अपने भांजे ट्रिस्टन के प्रति कठोर बना रहता है और उसे देश से निष्कासित कर देता हैं। इसके उपरांत कथा एक निर्णायक मोड़ लेती है, जहां पर ट्रिस्टन अपनी प्रेमिका इसोल्डा के नाम की किसी अन्य स्त्री से विवाह तो कर लेता है लेकिन वह अपनी प्रेमिका को भूलता नहीं है और इसी समय हुए युद्ध के घायल सैनिक की तरह से, उसकी मृत्यु होना सुनिश्चित है, तो उसका मित्र, उसकी प्रेमिका इसोल्डा को यह बताता है कि उसे मृत्यु शैया में पड़े हुए, उसके प्रेमी ट्रिस्टन से मिल लेना चाहिए, यह अंतिम अवसर होगा। मित्र के इसोल्डा के पास जाने के समय ट्रिस्टन ने कहा कि, लौटते समय अगर इसोल्डा साथ हो तो मित्र, जहाज पर सफेद और ना हो तो काला पाल इस्तेमाल करे, जिससे ट्रिस्टन यह जान जाए कि इसोल्डा उससे मिलने आ रही है अथवा नहीं।

लेकिन ट्रिस्टन की पत्नी इसोल्डा इस बातचीत को सुन लेती है और वह ट्रिस्टन से कहती है कि, ब्रिटनी वापसी कर रहे मित्र के जहाज पर काला पाल लहरा रहा है। यह सुनकर घायल ट्रिस्टन हृदयाघात से मर जाता है और उसकी प्रेमिका इसोल्डा जब उस तक वापस पहुंचती है तो उसे, अपने प्रेमी की मृत देह को देखकर अत्यंत दुःख होता है और वो उसके होठों पर चुंबन अंकित करते हुए स्वयं भी मृत्यु का वरण कर लेती है। अंततः यह कथा संबंधों में विश्वासघात, वीरता, प्रेम और नफरत पुनः प्रेम और मृत्यु के दुःखद हालात पर समाप्त हो जाती है।

रुदाबा और ज़ाल

वर्षों पहले पर्सिया में सैम नाम का एक बहादुर योद्धा रहता जोकि संतानहीन था। उसने ईश्वर से प्रार्थना की कि, वह उसे और उसकी सुन्दर पत्नी को संतान का उपहार दे। कुछ अर्से के बाद उसकी पत्नी गर्भवती हो गई और उसने एक पुत्र को जन्म दिया जो स्वस्थ तो था, लेकिन उसकी त्वचा और बालों की रंगत दूध जैसी सफेद थी। जब सैम ने अपने पुत्र को देखा तो उसे ईश्वर के ऊपर बहुत गुस्सा आया। उसे लगा कि, ईश्वर ने उसे पुत्र के बजाये दंड दिया है, इसलिए उसने ज़ाल नामित पुत्र से छुटकारा पाने का निर्णय लिया और उसे अलबुर्ज नाम के पहाड़ की चोटी पर मरने के लिए छोड़ आया। वहां पर सिमोर्घ का नाम का सुंदर, विशाल और बुद्धिमान पक्षी, घोंसला बनाकर रहता था। उसने शिशु ज़ाल को उठाया और अपने घोंसले में ले जाकर अपने चूजों को खिलाने की बात सोची, लेकिन उसे बच्चे की सूरत देखकर, उस पर दया आ गई और उसने ज़ाल को गोद ले लिया और अपने घोंसले में रखकर पालने लगा।

कुछ साल बीते और ज़ाल एक सुंदर युवक बन गया, अलबुर्ज पहाड़ पर जाने वाले लोगों ने उसकी एक झलक देखी थी, जिसकी खबरें सैम तक पहुंची, लेकिन उसने इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। फिर एक रोज उसने सपना देखा कि कोई व्यक्ति उससे कह रहा है कि, तुम्हारे घर एक सुंदर पुत्र का जन्म हुआ है। सैम ने जागते ही बुद्धिमान सलाहकार से अपने सपने का अर्थ पूछा, तब सलाहकार ने बताया कि, दुनिया में सभी तरह के जीव जंतु अपने बच्चों को प्यार करते हैं, चाहे वह कैसे भी दिखते हों, लेकिन तुमने अपने पुत्र को इसलिए छोड़ दिया कि, उसके बाल और त्वचा की रंगत सफेद है। तुम खुद के सफ़ेद बालों को देखो और कहो,

क्या यह पाप है? तब सैम को अपनी मूर्खता का अहसास हुआ और वह अलबुर्ज पहाड़ पर जा पहुंचा, उसने सिमोर्घ से अनुरोध किया कि, वह उसे, उसका पुत्र लौटा दे, हालांकि यह निर्णय उस विशाल पक्षी के लिए दुखदाई था।

सिमोर्घ को लगा कि अपने कृत्य पर पछता रहे, पिता को उसका पुत्र सौंपना ही बेहतर होगा। हालांकि ज़ाल अपने पालक पिता के घर को नहीं छोड़ना चाहता था, लेकिन सिमोर्घ ने उसे तीन पंख देकर विदा किया और कहा कि, अगर तुम्हारा पिता अगर तुम्हें धोखा देता है, तो तुम मेरे पंखों में से, एक को पवित्र अग्नि में डाल देना, मैं तुम्हारे पास पहुंच जाऊंगा। कुछ समय बाद पर्सिया में, ज़ाल को उसके सुडौल शरीर के साथ ही साथ, एक कुशल योद्धा के रूप में विकसित होते हुए देखा गया, जिसकी ख्याति काबुल की राजकुमारी रुदाबा के कानों तक जा पहुंची। ज़ाल के व्यक्तित्व के बारे में सुनकर उसे, ज़ाल से प्यार हो गया और उसने शपथ ली कि, वह ज़ाल से ही ब्याह करेगी। इसके बाद उसने, अपनी नौकरानी को बहुत सारा धन और उपहार देते हुए, एक पत्र दिया, जिसे ज़ाल तक पहुंचाया जाना था। जब ज़ाल ने वो पत्र पढ़ा, तो वह बहुत प्रभावित हुआ, वैसे भी उसने काबुल की राजकुमारी की सुंदरता की बहुत चर्चा सुनी थी, अतः वो स्वयं भी राजकुमारी रुदाबा से प्रेम करने लगा था।

उसने तय किया कि, वह रुदाबा तक पहुंचेगा और उससे मिलेगा। उसे पता चला कि रूदाबा, महल के सबसे ऊपरी कक्ष में रहती है। सबसे छुपते छुपाते वो रुदाबा के महल के नीचे पहुंच गया। कहते हैं कि, ज़ाल को अपने कमरे में लाने के लिए रुदाबा ने अपने लंबे बाल नीचे लटका दिए थे। जिनके सहारे ज़ाल रुदाबा तक पहुंच गया और उसे देख कर, उसने तय किया कि, वह रुदाबा से ही ब्याह करेगा। हालांकि यह काम आसान ना था क्योंकि रुदाबा के पिता मूर्तिपूजक थे और पर्सिया के राजा भी इस विवाह के लिए राजी नहीं थे, वैसे भी काबुल और पर्सिया परस्पर

शत्रु राज्य थे। इसलिए दोनों राज्य हमेशा युद्ध की स्थिति में बने रहते। लेकिन इस मामले को लेकर युद्ध प्रारंभ होने से पहले ही ज्योतिषियों ने ग्रहों की चाल देखी और कहा कि, यह जोड़ी बहुत शानदार होगी और इनके ब्याह का विरोध ना किया जाए, क्योंकि इन दोनों के संयोग से एक अपराजेय पुत्र का जन्म होगा, जोकि दुनिया का सबसे बड़ा योद्धा होगा और उसकी ख्याति, दुश्मनों में दहशत पैदा कर देगी।

बहरहाल दोनों राजा उनके ब्याह के लिए तैयार हो गए और बड़ी धूमधाम से रुदाबा और ज़ाल की शादी कर दी गई। कुछ महीने बाद रुदाबा को प्रसव पीड़ा हुई और लगा कि, वह बच्चे को जन्म देने से पहले ही मर जाएगी। तब ज़ाल को याद आया कि, सिमोर्घ ने उसे पंखों का उपहार दिया था। उसने आग जलाकर, तीन में से एक पंख को आग की लपटों में डाल दिया तो आसमान में तूफ़ान सा छा गया इसके बाद सिमोर्घ ज़ाल के पास पहुंच गया। सिमोर्घ ने दवा बनाने का सामान देते हुए राज्य के चिकित्सकों को जरूरी निर्देश दिए, जिसके जादुई असर से रुदाबा ने एक स्वस्थ पुत्र को जन्म दिया। जिसका नाम रुस्तम रखा गया और जो पर्सिया का सबसे महान योद्धा कहलाया।

यह आख्यान वर्तमान समय में ईरान और अफगानिस्तान के, अतीत कालीन कुलीन वर्ग को संबोधित है और यह कुलीन वर्ग राजतांत्रिक समाज का हिस्सा है, भले ही वो, एक दूसरे का शत्रु है। यह शत्रुता उपासना पद्धति की विभिन्नता पर आधारित है। दोनों कुलीन समुदाय अपने अपने मतानुसार ईश्वर की आराधना पर विश्वास करते हैं। जो उनकी पारस्परिक शत्रुता का कारण है। धर्म पर विश्वास करने वाले इन दोनों अभिजात्य समुदायों में, जादू टोना अथवा ज्योतिषीय परामर्श या धार्मिक दक्षता प्राप्त सलाहकारों की भूमिका महत्वपूर्ण है। कथा के अनुसार नायक, ज़ाल का पिता नि;संतान है और संतान के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है, लेकिन नवजात संतान की शारीरिक एवं केश धवलता, उसे, उसकी अपेक्षा के अनुसार संतुष्टि नहीं देते तथा वो उस ईश्वर से नाराज हो

जाता है, जिसने उसे पुत्र का उपहार दिया है। वह योद्धा है। उसकी पत्नी सुंदर है लेकिन उसमें, अपनी श्वेत त्वचा और केश रचना वाली संतान के, प्रति घृणा का भाव है। वह अपने मनोनुकूल संतान नहीं पाकर दुखी है और अपनी नवजात संतान के नामकरण के साथ ही उसे एक पहाड़ की चोटी पर छोड़ देता है, ताकि उसकी मृत्यु हो जाए।

यह एक कठोर निर्णय है जोकि, राजतांत्रिक समाजों की पहचान है। जहां युद्ध और मृत्यु सामान्य तथा सहज घटना होते हैं। अतः स्वयं के नवजात शिशु को मरने के लिए छोड़ देना, उस कुलीन समुदाय में कोई विशेष घटना नहीं मानी गई होगी, ऐसा प्रतीत होता है। कथा का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है कि, एक बुद्धिमान और विशालकाय परिंदा पहाड़ की चोटी पर अपने चूजों के साथ घोंसला बनाकर रहता है तथा वह नवजात शिशु के प्रति सहानुभूति का भाव रखते हुए उसे गोद ले लेता है। उसे पालता है। कहने का आशय यह है कि, नायक का पिता, मनुष्य होकर भी अपनी संतान का परित्याग केवल इसलिए कर देता है कि, वह देखने में उसकी इच्छाओं के जैसा नहीं है, जबकि परिंदा अपने कुल की तुलना में विजातीय नवजात को गोद लेकर युवा होने तक पालता है। स्पष्ट कथन यह है कि, राजतांत्रिक समाजों में, अभिजात्यों में क्रूरता के अंश बहुतायत से मिलते हैं जबकि अन्य जीव जंतु या परिंदे अपेक्षाकृत सहृदय होते हैं।

कथा के अनुसार नायक को अपने पिता की तरह से बलशाली, युद्ध प्रिय, युद्ध निपुण होना चाहिए। बहरहाल जवान हो चुके नायक के बारे में पर्वतारोहियों से सुन कर, पिता को अपने पूर्व निर्णय पर पछतावा होता है और वह उसे, उसके पालक पिता यानि कि विशालकाय बुद्धिमान परिंदे से वापस मांगने पहुंच जाता है। नायक अपने पिता के व्यवहार के प्रति सशंकित है, किंतु आख्यान में एक दिलचस्प और सांकेतिक कथन यह है कि, पालक पिता पक्षी, नायक को आश्वस्त करता है कि, संकट के समय, याद किए जाने पर, वह उसकी सहायता के लिए अवश्य पहुंचेगा। यानि कि, उसने जिस संतान का पालन पोषण किया है, उसके भविष्य का

संरक्षण भी वह करेगा। इस आशय की घोषणा वह करता है, भले ही कथा में, इस घोषणा की गारंटी के तौर पर, जादुई पंखों का उल्लेख किया गया है, जिन्हें नायक की आश्वस्ति से जोड़कर देखा जाना चाहिए। इसके उपरांत नायक अपने जैविक पिता के साथ रहता तो है, लेकिन उसकी उम्र रूमानियत की उम्र है और उसने काबुल की राजकुमारी रुदाबा के सौंदर्य के विषय में बहुत कुछ सुन रखा है।

वह रुदाबा के प्रति प्रेम का भाव रखता है, लगभग इसी तरह से, उसकी युद्ध कला में दक्षता तथा शारीरिक सौष्ठव के किस्से सुनकर, कथा की नायिका भी, उसके प्रति अनुरक्त है। नायिका और नायक के मध्य एक दूसरे की ख्याति को सुनकर, एक दूसरे के प्रति प्रेम का भाव रखने का संकेत इस कथा में मिलता है। कथा में, नायिका के सौंदर्य के प्रतीक के तौर पर उसके लंबे केशों का उल्लेख किया गया है, जिन्हें वह, नायक को अपने कक्ष तक पहुंचाने के, आशय से नीचे लटका देती है। इस आख्यान का महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि, प्रेम की पहल नायिका स्वयं करती है। वो अपनी सेविका को धन, उपहार आदि देकर, नायक को देने के लिए एक प्रेम पत्र सौंपती है। नायिका की यह पहल कुलीन समाज में महत्वपूर्ण मानी जानी चाहिए। नायक दोनों राज्यों की शत्रुता की परवाह किए बगैर अपनी नायिका से मिलने जा पहुंचता है और दोनों ही अपनी वैवाहिक जिंदगी शुरू करने का निर्णय ले लेते हैं। आरंभिक तौर पर दोनों राज्य इस निर्णय के विरुद्ध हैं, किंतु ज्योतिषीय परामर्श, विरोध के इस निर्णय को बदल कर दोनों राज्यों में सहमति का माहौल बनाता है।

अंततः नायक, नायिका पति, पत्नी हो जाते हैं। भले ही उनकी पैतृक धार्मिक आस्थायें परस्पर भिन्न है, किंतु प्रेम प्रबल है और ज्योतिषीय परामर्श, शत्रुता पर भारी है। लेकिन इस परामर्श का आधार बिंदु, पुनः शारीरिक दक्षता वाले रुस्तम के जन्म पर आधारित है। जो दुनिया का सबसे पराक्रमी योद्धा होने वाला है। अतः ज्योतिषीय परामर्श, प्रेम से अधिक योद्धा के जन्म के मार्ग को प्रशस्त करता दिखाई देता है। कथा के

अंत में उल्लेख है कि, नायिका गर्भवती है और उसे प्रसव के समय में बहुत कष्ट हो रहा है। तब नायक अपने पालक पिता परिंदे को आहूत करता है और उसकी मदद से, चिकित्सा लाभ लेकर नायिका, एक विश्व योद्धा संतान को जन्म देती है। कुल मिलाकर कथा में सौंदर्य, युद्ध की निपुणता तथा कुलीनता को महत्वपूर्ण माना गया है और इसके लिए, राजकुलों की निर्भरता, धार्मिक सलाहकारों पर आधारित है। कथा के नायक नायिका परस्पर प्रेम करते हैं किंतु उनके प्रेम की सफलता का आधार ज्योतिषियों की गणना और विजातीय पालक पिता परिंदे की बुद्धिमत्ता और चिकित्सकीय परामर्श है अन्यथा यह कथा सुखद कथा नहीं हो सकती थी।

मोमल रानो

मोमल राठौर जैसलमेर के लोद्रवा नाम की रियासत की राजकुमारी थी। जिसका शानदार महल काक नदी के किनारे निर्मित था। उसके महल के बारे में यह मशहूर था कि, वहां पर जादुई शक्तियां वास करती हैं। तब मोमल अपनी बहनों, सखियों और सेविकाओं के साथ उस महल में रहती थी। उन्हीं दिनों राणा महेंद्र सोधा सिंध की एक रियासत अमरकोट के युवा महाराज थे। जिनके साहस और शौर्य की प्रशंसा उनके शत्रु भी करते थे। अमरकोट, लोद्रवा से लगभग 100 कोस की दूरी पर होगा। कहते हैं कि, एक बार राणा महेंद्र सोधा अपने युवा बहनोई हमीर के साथ शिकार करते हुए भटक गए और वह काक नदी के किनारे खूबसूरत महल देखकर आश्चर्यचकित हो गए। उन्होंने सोचा कि, इस महल में आराम किया जा सकता है इसलिए इसे अन्दर जाकर देखना चाहिए, तभी महल के अन्दर से आवाज आई कि, एक समय में एक ही आदमी महल के अंदर आ सकता है। चूंकि हमीर बड़े थे, तो अन्दर जाने का पहला अवसर उनके हिस्से आया। जब वह महल में घुसे तो उन्होंने वहां पर एक बाघ और एक सांप को देखा और आशंकित होकर वापस लौट आए। उन्हें लगा कि, महल में जादू है और अंदर चुड़ैलें रहती होंगी।

इसके बाद राणा महेंद्र सोधा महल में घुसे और उन्होंने बाघ को देख कर, उस पर भाला चलाया तो उन्हें पता चला कि वह खाल में भूसा भर के तैयार किया हुआ नकली बाघ था और फिर राणा महल के अंदर जा पहुंचे, तथा खूबसूरत राजकुमारी मोमल को देखकर मुग्ध हो गए। राणा खुद भी एक खूबसूरत युवा थे, तो उन्हें देखकर मोमल भी उन पर आसक्त हो गई और इस तरह से वो दोनों एक दूसरे के इश्क में मुब्तिला हो गए। अब हुआ यह कि, हर शाम राणा एक तेज रफ्तार ऊंट पर

बैठकर अमरकोट से लोद्रवा आया करते और रात भर मोमल के पास रहकर, बड़ी सुबह अमरकोट लौट जाया करते। राणा की पहले भी कई शादियां हो चुकी थीं। जब उनकी रानियों को यह पता चला कि, राणा, रात भर मोमल के पास रहते हैं तो उन्होंने, ईर्ष्यावश उस ऊंट की पैर तोड़वा दिए, जिस पर बैठकर राणा, हर रात मोमल के पास पहुंचते थे। उस शाम राणा ने ऊंट के विकल्प के तौर एक तेज रफ्तार ऊंटनी का प्रबंध किया, लेकिन ऊंटनी लोद्रवा के रास्ते से अपरिचित थी तो उसकी रफ़्तार काम नहीं आई और राणा बहुत देर तक भटकने के बाद ही मोमल के महल में पहुंच पाए।

उस शाम मोमल और उसकी बहन, सखियां और सेविकायें, पुरुष वेश में एक दूसरे के साथ खेल रही थीं, अभिनय कर रही थीं। चूंकि राणा उस रात बहुत देर तक महल में पहुंचे ही नहीं थे। तो मोमल की पुरुष वेशधारी बहन, मोमल के साथ ही सो गई और जैसे ही राणा वहां पहुंचे। उन्होंने किसी पुरुष को मोमल के साथ सोते हुए देखा तो उन्हें गहरा आघात पहुंचा उन्हें लगा कि मोमल बेवफा है और वो वहां से वापस अमरकोट लौट गए। मोमल को सुबह अंदाज हुआ कि, घटना किस तरह से घटी होगी तो वो राणा को मनाने के लिए लोद्रवा से अमरकोट पहुंच गई। राणा को भी लगा कि, मोमल, मासूम हो सकती है, फिर भी वह अपने इश्क का इम्तहान लेना चाहते थे। उन्होंने अपने नौकर के माध्यम से मोमल को ये सन्देश भेजा कि राणा को काले नाग ने डस लिया है और उनकी मृत्यु हो गई है। यह खबर सुनते ही मोमल हृदयाघात से मर गई और मोमल की अयाचित मृत्यु का समाचार पाकर राणा महेंद्र, रेगिस्तान में पागलों की तरह भटकते हुए मर गए।

यह कथा भारत में विभाजन की रेखा खींचे जाने से पहले के सिंध की रियासत अमरकोट के युवा महाराज और जैसलमेर की लोद्रवा रियासत की राजकुमारी मोमल के प्रेम की दु:खांत कथा है। इस कथा को सिंध के सूफी कवि शाह अब्दुल लतीफ भिटाई ने लिखा था और इस कथा के

अनुसार तब की छोटी छोटी रियासतों में या तो जमीन और स्त्रियों को लेकर युद्ध होते थे या संयोगवश ऐसे प्रेम जैसा राणा और मोमल के दरम्यान हुआ। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि, वह समय स्त्री बहुगामिता का समय था और राणा मोमल से प्रेम करने से पहले ही कई पत्नियों का पति था। इसके बावजूद वह मोमल के प्रति आसक्त हुआ इसके बरक्स संभव है कि, मोमल को राणा की पूर्व पत्नियों का संज्ञान ना रहा हो। हालांकि कथा कहती है कि, मोमल प्रथम दृष्टया ही राणा की मोहब्बत में गिरफ्तार हो गई थी। यह अजीब बात है कि, राणा सैकड़ों कोस दूर से एक तेज रफ़्तार ऊंट के भरोसे मोमल के महल पहुंचता और रात भर मोमल के साथ रहता है फिर अलसुबह, अमरकोट लौट जाया करता है।

हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि, नायिका मोमल से उसका रात्रिकालीन सामीप्य, सानिध्य मनः प्रेम के साथ दैहिक भी था, जिसमें अपनी नई नवेली प्रिया के साथ रात बिताना राणा के लिए अपरिहार्य हो गया होगा, भले ही उसके पास पहले से ही कई रानियां थी। जिनके साथ वो अपनी देह की मांग को पहले भी पूरी करता रहा होगा। इसके बावजूद वह अपनी ब्याहता पत्नियों को छोड़कर, एक अन्य खूबसूरत युवती के मोहपाश में बंध गया था, जो कि उसकी ब्याहता पत्नी भी नहीं थी। तो मोमल और राणा की प्रेम कथा, विवाहेत्तर प्रेम की कथा भी है, जहां नायक, नायिका से ब्याह किए, बगैर केवल रात के अंधेरे में उससे मिलता है और भोर होने से पहले अपनी रियासत लौट जाता है। कुछ अर्थों में इस प्रेम को अनैतिक भी माना जा सकता है और नैतिक केवल इस अर्थ में कि, जिसके हाथ में शक्ति होती है, वह कितनी भी स्त्रियों से संबंध रख सकता है, चाहे ब्याह के माध्यम से या बिना ब्याह के। इस कथा में एक आश्चर्यजनक घटना यह हुई कि, राणा अपनी पत्नियों की ईर्ष्या के कारण अपने ऊंट को खो बैठा है और ऊंटनी के माध्यम से लोद्रवा पहुंचने की उसकी कोशिश नाकाम तो नहीं हुई लेकिन भटकाव का शिकार जरूर हो गई। लोद्रवा में राजकुमारी मोमल, उसकी बहन, सखियां और सेविकायें हैं। जो मनोरंजन की गतिविधि के अंतर्गत पुरुषवेश धारण करते हैं।

अभिनय करते हैं। चूंकि वे सब थक कर चूर हो गए हैं और राणा अपने भटकाव के चलते महल में पहुंचा ही नहीं है, तो मोमल और पुरुषवेश धारी युवती का एक साथ सोना, देर से पहुंचे राणा को खटक जाता है क्योंकि प्रेम ने उसकी सोच समझ और बुद्धि हर ली थी।

उसे मोमल से बात करना चाहिए थी, किंतु वह एक दुर्बल मन: प्रेमी की तरह से अपनी प्रियतमा पर अविश्वास कर बैठा और वहां से लौट गया। मोमल ने इस घटनाक्रम को समझ लिया था, इसीलिए वह अपने प्रेमी के राज्य में, उसे मनाने के लिए जा पहुंचती है। लेकिन राणा उसकी मोहब्बत का इंतिहान लेना चाहता है। वो अपने नौकर के माध्यम से मोमल को यह संदेश देता है कि, उसे सांप ने डस लिया है और वह मर गया है। यह सुनकर पूर्ण रूपेण प्रेम समर्पिता, मोमल हृदयाघात से मर जाती है। कदाचित इसके बाद राणा को अपने कथित इम्तहान और शक के बेबुनियाद होने का एहसास हुआ होगा। इसीलिए वह मोमल के लिए रेगिस्तान में भटका और अपने प्राण गंवा दिए। कहते हैं कि, प्रेम को, एक दूसरे पर विश्वास होना चाहिए अन्यथा वह नायक नायिका को हमेशा हमेशा के लिए एक दूसरे से जुदा कर देता है। इस घटना में मोमल तुलनात्मक रूप से निर्दोष प्रतीत होती है और नायक अपनी पुरुषवादी, एकाधिकारवादी शंकालु प्रवृत्ति का शिकार हो गया है अन्यथा वह अपनी प्रियतमा को खोकर स्वयं के लिए मृत्यु के द्वार नहीं खोलता...

सस्सी पुन्नू

सस्सी के जन्म के बाद ज्योतिषियों ने कहा था कि सस्सी जवान होकर, अपने खानदान की इज्जत मिट्टी में मिला देगी। उस वक्त उसकी अजीब-ओ-गरीब मुहब्बत के किस्से से शाही खानदान शर्मसार हो जाएगा। सस्सी के पिता भम्बूर के राजा थे, ज्योतिषियों के कथनानुसार सस्सी को अभिशापित मानकर, उन्होंने सोचा कि सस्सी को मार दिया जाए, बाद में अपने दरबारियों और परिवार के परामर्श से, सस्सी को सोने से भरे संदूक में रखकर सिन्धु नदी में बहा दिया। संयोग से वो संदूक एक धोबी के हाथ लग गया और उसने, मौजूद खूबसूरत बच्ची को अपनी पुत्री की तरह से पालना तय किया। सस्सी जैसे जैसे जवान हुई उसके चन्द्र परी मानिंद हुस्न की ख्याति दूर दूर तक फ़ैल गयी। इसी दरम्यान किसी सौदागर ने भम्बूर के वृद्ध हो चले राजा को धोबी की पुत्री सस्सी की खूबसूरती के किस्से बताये तो उसने धोबी के घर सस्सी से खुद के ब्याह का प्रस्ताव भेज दिया।

ब्याह की बातचीत के दौरान धोबी ने राजा को यह किस्सा बताया कि, वो उसे नदी में बहते हुए एक संदूक में मिली थी। उसने राजा को वो हार भी दिखाया जो, नन्हीं सस्सी ने उस वक्त पहना हुआ था। ताबीजनुमा उस हार को देखकर, राजा बेहद शर्मिन्दा हुआ, उसे याद आ गया कि सस्सी उसकी ही पुत्री है। अब राजा अपने ब्याह के प्रस्ताव को लेकर बहुत लज्जित था। वो अपने कलंकित व्यवहार के प्रायश्चित स्वरूप, अपनी पुत्री को महल वापस लाना चाहता था। लेकिन सस्सी ने महल जाने से साफ़ इनकार कर दिया। वो अपने पालक पिता के परिवार में ही रहना चाहती थी। उसे अपने बचपन में, जैविक पिता द्वारा किया गया व्यवहार

अस्वीकार्य था। बहरहाल राजा ने धोबी के घर को ही एक महल में तब्दील कर दिया ताकि उसकी पुत्री उससे माफ़ कर दे और खुशहाल रहे। एक रोज वहां से गुज़र रहे काफिले में से किसी के पास पुन्नू की तस्वीर थी जिसे देखकर सस्सी अपना दिल हार बैठी वो पुन्नू को पाना चाहती थी।

पुन्नू असल में बलोच था और उसके पिता मीर होथ खान मकरान की छोटी सी रियासत के राजा थे। पुन्नू ने सौदागरों से सस्सी की ख़ूबसूरती के किस्से सुने और वह सस्सी से मिलने उसके घर जा पहुंचा हालांकि उसे यह पता नहीं था कि, सस्सी भी उसे चाहती है। पुन्नू ने जैसे ही सस्सी को देखा। वो उसका दीवाना हो गया। उसने सस्सी से ब्याह के लिए धोबी से मनुहार की। पहले धोबी ने कहा कि पुन्नू को धोबी बनकर उसके ही घर पर रहना होगा। बाद में अपनी पुत्री सस्सी की चाहत का ख्याल कर वो इस रिश्ते के लिए सहमत हो गया। उधर पुन्नू के भाइयों को यह रिश्ता पसंद नहीं था वे शादी में शामिल तो हुए लेकिन उन्होंने पुन्नू को इतनी शराब पिला दी कि, वो बेसुध हो गया और वे लोग उसे लेकर अपने घर वापस चले गए। ये खबर सुनकर परेशान हाल, सस्सी किसी भी सूरत, पुन्नू को पाना चाहती थी सो वो अपने माता पिता के समझाने के बावजूद, पैदल ही पुन्नू को ढूंढने निकल पड़ी।

रेगिस्तान की तपिश में उसके पैर झुलस गए। उसके ओंठ खुश्क थे पर उन पर सिर्फ पुन्नू का नाम था। उसे पुन्नू के घर जाना था पर वो, रास्ता नहीं जानती थी। उसने भेड़ और ऊंट चराने वाले चरवाहे से मदद मांगी पर चरवाहे की नीयत ख़राब हो गयी, सस्सी बड़ी मुश्किल से उससे अपनी जान बचा कर भागी। उसके सामने रेगिस्तान था। आंधियां थीं। भयानक गर्मी थी और भटकाव था। अगर नहीं था तो पुन्नू। उसने ईश्वर से दुआ की कि, मेरा सब्र ख़त्म हुआ। अब और नहीं सह सकती, मेरी जान ले लो। फिर रेगिस्तान उसे लील गया। उधर पुन्नू जब शराब के नशे से आज़ाद हुआ तो पागलों की तरह से सस्सी के गांव की तरफ भागा रास्ते में उसे चरवाहा मिला, उसने पुन्नू को बताया कि, सस्सी रेगिस्तान में दफन हो गयी है। शोकाकुल पुन्नू वहीं ठहर गया, उसकी ज़िन्दगी में अब कोई

आस बाकी नहीं थी। उसने विलाप किया और रेगिस्तान की गर्म रेतीली आंधी उसे भी उसी जगह दफ़न कर गयी।

यह कथा सिंध और बलूचिस्तान की रियासतों की दूरियों को नापती एक दुखांत प्रेम कथा है। जिसे सिंध के सूफी कवि शाह अब्दुल लतीफ भिटाई ने कहा है। कथा के अनुसार सिंध की छोटी सी रियासत भम्बूर का राज परिवार, अंधविश्वास का शिकार है और वह ज्योतिषियों की कथित भविष्यवाणी से परेशान है। वो अपनी नवजात पुत्री को जान से मार देने और नदी में बहा देने में से दूसरा विकल्प चुनता है। संदूक में, सोने के साथ, नन्ही सी पुत्री भी है, जो सिंध नदी में बहती हुई, एक धोबी को मिल जाती है। बच्ची बेहद खूबसूरत है और धोबी उसे पालना चाहता है। विकल्प के तौर पर उसे संदूक में सोना भी मिल गया है। अगर हम सांकेतिक रूप से सोचें तो कथा का पालक पिता, धोबी, धोता है कदाचित पाप दूसरों के। मैल दूसरों का। यहां भी उसने धोया, अंधविश्वास भम्बूर के राजा का। यह एक अजीब सी कथा है, जिसमें बच्ची का नाम सस्सी यानि कि शशि रखा जाता है अर्थात चांद जैसी। वह बच्ची धोबी के घर में पाली जाती है और जवान होते होते, उसके सौंदर्य के चर्चे दूर-दूर तक फैल जाते हैं।

सस्सी के युवा होने तक भम्बूर का राजा जो प्रौढ़ावस्था को पार कर, वृद्धावस्था की दहलीज पर है, लेकिन उसकी यौन पिपासा, उसमें अब भी शेष है। वह धोबी के घर, अपने विवाह का प्रस्ताव भेजता है। चर्चा के दौरान यह जानकर कि, सस्सी उसकी अपनी पुत्री है, जिसे उसने, बचपन में त्याग दिया था। वह शर्मिंदा है। खासकर अपने विवाह के प्रस्ताव को लेकर। वह अपनी पुत्री को वापस भम्बूर ले जाना चाहता है, लेकिन सस्सी अपने पिता के व्यवहार से क्षुब्ध है और शर्मिंदा भी। वह इस प्रस्ताव को ठुकरा देती है और अपने जैविक पिता के बजाये अपने पालक पिता के यहां रहना पसंद करती है। चूंकि भम्बूर का राजा करनी का प्रायश्चित करना चाहता है, तो वह धोबी के घर को एक शानदार महल के

रूप में तब्दील कर देता है, ताकि उसकी पुत्री सुख चैन से रह सके। फिर ये कथा कुछ इस तरह से आगे बढ़ती है कि, धोबी के महल के सामने से सौदागरों के काफिले गुजरते हैं और उनके पास पुन्नू की तस्वीर है, जिसे देखकर सस्सी मुग्ध हो जाती है, वह पुन्नू को पाना चाहती है। पुन्नू जोकि मकरान की रियासत और बलोच मूल का सुंदर युवा है।

पुन्नू को सस्सी के बारे में उड़ती उड़ती खबरें मिली हैं कि, वह बहुत खूबसूरत है। ऐन परियों के जैसी। वह सस्सी को देखने के मकसद से अपनी रियासत से सस्सी के घर जा पहुंचता है और उसे देखकर हतप्रभ रह जाता है। उसके प्यार में सम्मोहित सा। सस्सी, पन्नू से पहले ही प्रेम कर बैठी थी अतः उसे इस रिश्ते से इंकार नहीं था, लेकिन पुन्नू की राजसी पृष्ठभूमि से आशंकित धोबी पुन्नू के ब्याह के प्रस्ताव को स्वीकार करने की शर्त रखता है कि, पुन्नू को धोबी की तरह जीवन व्यतीत करना होगा, लेकिन बाद में वह मान जाता है। हालांकि पुन्नू के भाई इस रिश्ते से नाखुश है कि, पुन्नू एक राजसी परिवार को छोड़कर, एक साधारण से धोबी की पुत्री से ब्याह करे, लेकिन उनके सामने कोई विकल्प नहीं था, तो वे, ब्याह की रस्मों में शामिल होकर पुन्नू को इतनी शराब पिलाते हैं कि, पुन्नू बेसुध हो जाता है और वे मदहोश पुन्नू को वापस मकरान ले जाते हैं, जिससे दुखी सस्सी, पुन्नू को पाने के ख्याल से, उसकी रियासत में जाना चाहती है। वो पुन्नू को ढूंढना चाहती है।

उसके पालक माता-पिता उसे समझाते हैं कि, रास्ते में रेगिस्तान है और बेपनाह कठिनाइयां है। लेकिन सस्सी प्रेम के लिए सारी कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार है। वह रेगिस्तान में झुलसती है। वह प्यासी है। भटकती है। किसी चरवाहे से सहायता की कामना करती है, लेकिन चरवाहा अंततः मर्द है जो भटकती हुई युवती के साथ अपनी यौन लिप्सा को शांत करना चाहता है। सस्सी उससे बचकर तो भाग निकलती है। पर, रेगिस्तान उसका नसीब है। वह भटकते भटकते अपना धीरज खो बैठती है और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि, उसके भटकाव का अंत कर

दे। अब ईश्वर ने उसकी दुआ सुनी या नहीं, कह नहीं सकते पर रेगिस्तान उसकी गुहार सुन लेता है। उधर पन्नू शराब के नशे से जैसे ही होश में आता है। वह सस्सी की तलाश में उसके गांव की तरफ भागता है। उसे राह में मिला एक चरवाहा कहता है कि, सस्सी को रेगिस्तान निगल गया है। हताश और स्तब्ध, पुन्नू अपनी प्रियतमा की रेतीली समाधि में स्वयं भी समाधिस्थ होने निश्चय कर लेता है।

अंततः पुन्नू भी अपने प्रेम को, जलते हुए रेगिस्तान में पा लेता है। गर्म और रेतीली आंधियां उसे, सस्सी के पास दफन कर देती हैं। कथा का सार यह है कि, लड़कियां चाहे कितनी भी खूबसूरत हों, अंधविश्वास उनका जीवन दूभर कर देता है। अगर वे साधारण परिवार की हों, तो कुलीन परिवार उनके रिश्तो को सहज ही स्वीकार नहीं करते। प्रेम के मार्ग में रेत की आंधियां आती है और कदाचित आती ही रहेंगी। इस कथा के इश्क की तपिश, रेगिस्तान की तपिश के इतर, आज दिन तक, चाहने वालों को हौसले देती है, भले ही यह कथा दुःख पर समाप्त हुई हो।

ईस्टर

ईस्टर, प्रेम, कामुकता, राजनीति, सामाजिक न्याय, पर्यावरण, उर्वरता, अन्न भण्डार और युद्ध की देवी है जोकि, मेसोपोटामिया की बहुदेववादी सभ्यता की सर्वाधिक महत्वपूर्ण देवी है। उसे शुक्र तारे की देवी भी कहते हैं। वह चंद्रमा के देवता नन्ना और नरकट, सरकंडों की देवी निंगाल की पुत्री है। देवता के रूप में पूज्य तम्मुज़ से उसका विवाह हुआ था। खूबसूरत और युवा तम्मुज उर्वरता, प्रकृति में नवजीवन, वसंत और चरवाहों का देवता है। शुक्र की देवी और वसंत के देवता के मध्य यह विवाह स्वभाविक था, किन्तु पति तम्मुज़ के साथ आनंदमय समय गुजारते हुए, ईस्टर के दाम्पत्य जीवन में ग्रहण सा लग गया जबकि, उसके पति तम्मुज को डाकुओं ने मार डाला और उसके निधन पर गहन शोक व्यक्त करते हुए जब ईस्टर, पाताल लोक जाती है तो उसे, उसकी बहन देवी इरिश्कगाल द्वारा मार दिया जाता है। ईस्टर और तम्मुज़ के दरम्यान गहरी मुहब्बत तो थी, लेकिन तम्मुज़ के अनुयायियों का मानना था कि, ईस्टर, अपनी बहन इरिश्कगाल के द्वारा मारी नहीं गयी थी बल्कि, वो सहज ही पाताल लोक गयी थी, जहां उसकी युद्ध आकांक्षा, राजनीतिक चातुर्य सह अन्यान्य कारणों से सशंकित, इरिश्कगाल ने उसे बंदी बना लिया था।

ईस्टर लम्बे समय तक बंदिनी की स्थिति में नहीं रहना चाहती थी, इसलिए पाताल लोक से, देव लोक में आने से पहले, अपनी सकुशल वापसी और पुनरुत्थान के नाम पर, अपने पति तम्मुज़ को बलि के रूप में पेश करती है। इन हालात में वह या तो डाकुओं द्वारा मारे गए तम्मुज़ की विधवा है या स्वयं की रिहाई की ख्वाहिश के लिए, अपने पति तम्मुज का बलिदान करने वाली स्त्री। तम्मुज की मृत्यु के फ़ौरन बाद वह

मेसोपोटामिया के नायक तुल्य गिलगमेश से अपने ब्याह की पेशकश करती है, लेकिन गिलगमेश, उसकी बेइज्जती करता हुआ, उससे ब्याह करने से इंकार कर देता है। अपनी बेइज्जती और तिरस्कार से तिलमिलाई हुई ईस्टर, गिलगमेश की हत्या के लिए स्वर्ग के बैल को भेजती है, जिससे गिलगमेश का प्रिय साथी, एन्किडु मारा जाता है। कथानुसार ईस्टर झंझावात की देवी भी है, जिसे प्यार करने में उतना ही आनंद आता है, जितना कि युद्ध करने में, उसके पास सभी महान दिव्य शक्तियां हैं और वह स्वयं को, स्वर्ग के पवित्र सिंहासन के योग्य मानती है।

वो अपने सौंदर्य से अभिभूत करने वाली किन्तु असहमति या क्रोध के समय, भयंकर देवी है, जो सात शेरों पर चढ़कर युद्ध करती है। वह बुद्धिमान भी है और राजनीतिक तौर तरीकों से अपने विरोधियों को पछाड़ने में सक्षम भी। वो जानती है कि, शताब्दियों के बाद दुनिया में उसका वर्चस्व क्षीण हो जाएगा, लेकिन प्रेम की देवी के रूप में वह दुनिया की स्त्रियों और पुरुषों के दिलों और देहों में हमेशा हमेशा राज करेगी। एक सामर्थ्यशील देवी के रूप में मेसोपोटामिया में उसके अनेकों मंदिर हैं, जहां पर पुजारी, विवाह संस्कार के लिए ईस्टर की पूजा करते हैं और संतानहीन लोग, उसका आशीर्वाद लेने आते हैं, भले ही और वो स्वयं एक अच्छी पत्नी सिद्ध नहीं हुई किंतु उसे प्रेम और सहवास की प्रथम देवी माना जाता है। जो तम्मुज़ की मृत्यु के फ़ौरन बाद गिलगमेश से नए तरीके से ब्याह करने तैयार हो जाती है।

यह आख्यान वर्तमान इराक की दजला और फरात नदियों की भूमि पर हजारों साल पहले मौजूद सभ्यता के बहुदेवता वाद की कथा है। जिसकी नायिका ईस्टर, चांद के देवता और धरती पर सरकंडों की देवी की संतान है। वो एक ही समय में भयंकर, युद्ध पिपासु और क्रूर दिखने वाली देवी है तो उसके समानांतर प्रेम, सहवास और उर्वरता की बेहद खूबसूरत देवी है। इस आख्यान से ईस्टर के दैवीय रूपों की विविधता आश्चर्य चकित करती है, जहां वो अपने सुन्दर पति तम्मुज़ से अटूट प्रेम करती है, वहीं

पाताल लोक से अपनी मुक्ति के नाम पर तम्मुज़ की बलि चढाने से भी नहीं चूकती। सामान्य तौर पर यह माना जाता है कि, ईस्टर के पास केवल प्रेम और कामुकता सह उर्वरता मात्र की शक्तियां थीं किन्तु समय के साथ जन मानस में यह विश्वास गहरा गया कि, उसके पास युद्ध, राजनीतिक चातुर्य, पर्यावरण, न्याय और अन्न भंडारण की शक्तियां भी मौजूद हैं। आख्यान से यह धारणा प्रबल होती है कि, प्रेम की देवी कालांतर में युद्ध और संहार की देवी भी बन जाती है। उसके सामर्थ्य का विस्तार मानव जीवन को प्रभावित करने वाले बहुआयामों में दिखाई देने लगता है।

जन समुदाय उसे, प्रथम दृष्टया, प्रेम और संतानों के लिए, पूजता है तथा उसकी अन्यान्य शक्तियों से भयभीत भी रहता है। इस कथा का एक दिलचस्प पहलू ये है कि, प्रेम, सहवास और उर्वरता को लेकर वो ग्रीक देवी अफरोडाइट जैसी दिखती है। अफरोडाइट की तरह से वो भी शुक्र तारे की देवी गोया वीनस है। कथा में देवताओं और देवियों के मध्य ईर्ष्या द्वेष और एक दूसरे को पीछे छोड़कर, ज्यादा से ज्यादा अधिकार पा लेने की होड़ दिखाई देती है, जिसका उदाहरण ये है कि, स्वयं ईस्टर की बहन इरिश्कगाल उससे सशंकित है और उसे सहज मिलन के दौरान बंदी बना लेती है और उसे तब मुक्त करती है, जब वो अपने पति तम्मुज़ के प्राण वहां गिरवी रख देती है। तम्मुज़ से उसे प्रेम था लेकिन तम्मुज़ की याद में विरह के लम्बे समय को गुज़ारने के बजाय, वो दूसरे ब्याह आकांक्षा रखती है और मेसोपोटामिया के नायक गिलगमेश द्वारा उसका प्रणय निवेदन ठुकराए जाने से इतना क्रुद्ध हो जाती है कि, वह उसकी हत्या का प्रयास भी करती है।

स्पष्ट है कि, बतौर देवी उसका व्यक्तित्व, चिंतन और व्यवहार धरती के साधारण नश्वर मनुष्यों के जैसा है, लगभग यही स्थिति इरिश्कगाल की भी है। अतः देवी देवताओं को मनुष्यों की मानस संतान माने जाने में कोई अतिश्योक्ति नहीं है। कम-ओ-बेश यही बात देवी अफरोडाइट के

प्रकरण से भी मुखरित हुई थी। कहने का आशय यह है कि, चाहे ग्रीक देवी देवता हों या मेसोपोटामियाई देवी देवता वे सभी आचरण और चिंतन में नश्वर मनुष्यों से भिन्न नहीं है। इस आख्यान में युद्ध की देवी के रूप में, युद्ध के समय, ईस्टर का रौद्र रूप और सात बड़े शेरों की सवारी का कथन, भारतीय परिदृश्य में सिंहों पर आरूढ़ देवी की छवि से अद्भुत साम्य रखता है। यानि कि मेसोपोटामियाई देवी का उल्लेख भारतीय दृष्टान्तों के जैसा। यह कथा देवी ईस्टर के बढ़ते, सामर्थ्य विस्तार, प्रभाव, समानांतर सुन्दरता और रौद्र रूप, प्रेम और हिंसा, स्वयं की मुक्ति के लिए पति की बलि, दूसरे ब्याह की तत्परता, अवसरवादिता, संसार में अन्न और पर्यावरण की बेहतर स्थिति, जैसे विरोधाभासी, कथनों से भरी पड़ी है।

कहते हैं कि, देवी ईस्टर को यह भान था कि, देर सवेर जनमानस पर उसका प्रभाव, क्षीण होता जाएगा, किन्तु वह प्रेम, कामुकता, उर्वरता और युद्ध प्रियता के हवाले से धरती पर हमेशा मौजूद रहेगी और धरती पर धर्म और संस्कृति को सदैव प्रभावित करती रहेगी। फिलहाल दुनिया के हर छोर में प्रेम है, बलात्कार भी, युद्ध और घृणा सह धर्म और संस्कृति नामित, भयावह पुनरुत्थानवाद भी, जो समय के कैनवास को नूर से बेनूर करता चलता है, और धरती के लोग देखते हैं, मुड़ मुड़ कर...

अखनातन और नेफरटीटी

अखनातन मिस्र के फिरौन शासकों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण किंतु विवादित सम्राट था। उसने अपने समय की सबसे खूबसूरत युवती नेफरटीटी से विवाह किया था। अखनातन और नेफरटीटी के दरम्यान बेहद रूमानियत भरे ताल्लुकात थे। उनके पारस्परिक प्रेम और दैहिक नैकट्य का परिणाम था कि, नेफरटीटी से उसकी छै पुत्रियों का जन्म हुआ। नेफरटीटी और अखनातन में, मिस्र के राजकाज और पदानुक्रम की दृष्टि से लगभग समता का भाव था। अखनातन और नेफरटीटी, मिस्र के सर्वोच्च शासक होते हुए भी, अपने घरेलू कार्य स्वयं करते थे, जैसे भोजन बनाना। इसके इतर उनके शौक में गायन और नृत्य भी सम्मिलित था। कहते हैं कि, अखनातन पर नेफरटीटी का प्रेम सिर चढ़ कर बोलता था। नेफरटीटी मिस्र की सबसे प्रसिद्ध रानी थी। ऐसा लगता है कि, अखनातन अपनी पत्नी को अत्यधिक प्रेम करता था और उसकी पत्नी नेफरटीटी अपनी छै पुत्रियों के ऊपर अत्यधिक अनुरक्त बनी रहती थी।

उसने अपने शासन काल में मिस्र के प्रचलित धर्म में अभूतपूर्व परिवर्तन किया और तत्कालीन देवताओं को हाशिये पर रखते हुए, अपना ध्यान सूर्य देव एटन पर केंद्रित किया और इस धार्मिक सुधार को मिस्र की जनता पर भी लागू कर दिया, जिससे नील नदी के इस देश में खलबली मच गई। अक्सर देखा जाता कि, अखनातन के दिन प्रतिदिन के जीवन में नेफरटीटी को इतनी अधिक स्वायत्तता प्राप्त थी कि, कभी कभी वह सूर्य देव एटन की पूजा के बिना भी, अखनातन को प्रसाद दे दिया करती थी। अखनातन ने तय किया कि, सूर्य देव एटन की पूजा, मिस्र की भावी पीढ़ी की प्रजनन क्षमता और नवजीवन की अवधारणा है। उसके धार्मिक

विचारों से एकेश्वरवाद की झलक मिलती है। अखनातन का मानना था कि, वह राजा के रूप में धरती पर एटन का प्रतिनिधि है और एटन के लिए कार्य करता है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि, उसके इस विचार को नेफरटीटी का समर्थन प्राप्त था।

मुमकिन है कि, अखनातन ने मिस्र में प्रचलित धार्मिक मान्यताओं को इसलिए बदला हो कि, वो शाही परिवार में अपनी प्रिय पत्नी की सर्वोच्चता स्थापित कर सके और उसे अपने समतुल्य होने का दर्जा दे सके क्योंकि, प्राचीन धार्मिक मान्यताओं के साथ चलते हुए ऐसा करना संभव नहीं रहा होगा। बहरहाल इस प्रेम की उम्र अधिक लम्बी नहीं रही क्योंकि अखनातन ने केवल सोलह साल राज किया और अल्पायु में ही उसकी मृत्यु हो गयी। उसकी मृत्यु के बाद, नेफरटीटी को महिला शासक बतौर फिरौन का दर्जा हासिल हो सकता था। लेकिन वह भी जल्द ही अपने पति, अपने प्रेमी अखनातन से जा मिली। नि:संदेह इस कथा का नायक अखनातन अपनी पत्नी को अत्यधिक सम्मान देता था और यही सफल दाम्पत्य जीवन का मूल मन्त्र है।

मिस्र की बागडोर संभालते समय अखनातन और नेफरटीटी की उम्र ज्यादा नहीं थी, लेकिन अखनातन, नेफरटीटी से अत्यधिक प्रेम करता था और उसने अपनी प्रेयसी से ही विवाह किया। वह अपनी पत्नी को इतना ज्यादा प्यार करता था कि, उसके अल्पकालिक राजकाज के दौरान ही उसकी छै पुत्रियों का जन्म हुआ। नि:संदेह अखनातन के इस व्यवहार में प्रेम भी है और कामुकता भी। नेफरटीटी, अखनातन से उत्पन्न हुई संतानों के प्रति अनुरक्त थी और वह उसके द्वारा किये जा रहे, धार्मिक क्रिया कलापों में सुधार की सशक्त समर्थक भी। उन दोनों में पहले अखनातन और बाद में मिस्र की सबसे ज्यादा प्रसिद्ध रानी नेफरटीटी की मृत्यु हुई। संभव है कि, नेफरटीटी अगर चाहती तो मिस्र की महिला फिरौन के रूप में राजपाट संभाल सकती थी। उन दोनों प्रेमियों में सहजता और सरलता का समावेश था। वह अपने दैनिक कार्य स्वयं करते यथा रसोइयों के

बजाय अपना भोजन स्वयं तैयार करते। इसी प्रकार से दरबारी संगीत के स्थान पर अपने ही गीत और नृत्य से लुत्फंदोज़ हुआ करते।

एक सामान्य विचार यह है कि अखनातन, नेफरटीटी से प्यार करता था, वह उसे राजप्रसाद में सर्वोच्च स्थान देकर मिस्र की जनता के मध्य, यह संकेत देना चाहता था कि, नेफरटीटी, उसकी प्रेमिका ही नहीं बल्कि उसकी वैचारिक मान्यताओं की सशक्त समर्थक भी है। कहते हैं कि, उसने नेफरटीटी को सम्मान दिया, प्रेम दिया, जिसकी वह हकदार थी और मुमकिन है कि, इसी धारणा के अंतर्गत उसने प्राचीन मिस्र के प्राचीन धर्म तथा देवी-देवताओं और पुजारियों को हाशिये पर डालते हुए, धार्मिक मान्यताओं में आमूलचूल परिवर्तन कर दिया। उसने स्वयं को एकेश्वरवादी धर्म का उपासक माना, जोकि सूर्य देव एटन की पूजा को प्रधानता देता था। सूर्य देव जो मिस्र की जनता की प्रजनन क्षमता और नवजीवन के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण और एकमेव देवता है और अखनातन स्वयं धरती पर सूर्य देव का प्रतिनिधि है।

उसकी इस धारणा को उसकी पत्नी का समर्थन प्राप्त था और प्रतीत होता है कि, प्राचीनतम धार्मिक मान्यताओं को चोट पहुंचाए बिना तथा लम्बी परंपरा से मौजूद पुजारियों को हाशिये में डाले बिना, वह अपनी पत्नी को राजप्रमुख के समतुल्य सम्मान नहीं दे पाता और ना ही राजसभा में उसकी उपस्थिति को स्थापित कर पाता। अतः उसने अपने प्रेम के लिए, पुरानी धार्मिक मान्यताओं और उसके रूढ़िवादी समर्थकों को किनारे कर दिया ताकि उसकी पत्नी स्वतंत्र रूप से उसके समकक्ष सम्मान पाए। बहरहाल उनका प्रणय जीवन और उनकी सत्ता भले ही अल्पकालिक थी लेकिन प्रेम, अमर हो गया क्योंकि वे एक दूसरे के लिए समादृत और वचनबद्ध थे।

आइसिस और ओसिरिस

ओसिरिस और देवी आईसिस ने सम्राट, साम्राज्ञी के रूप में मिस्र में हुकूमत की थी। ओसिरिस और देवी आईसिस दोनों ही, पृथ्वी के देवता गेब और आकाश की देवी नेट की संतान होने के नाते परस्पर भाई बहन थे, किंतु उन्होंने आपस में ब्याह किया था। हालांकि अपने ही भाई सेठ के साथ कट्टर दुश्मनी के चलते ओसिरिस मारा गया। प्रचलित जनविश्वास कहता है कि, ओसिरिस के सेठ की पत्नी नेफथिस के साथ अनैतिक संबंध थे। नेफथिस जोकि, ओसिरिस की पत्नी देवी आईसिस की बहन थी और इस नाते उसकी भी बहन हुई। इस झगडे का अंत ये हुआ कि, सेठ ने ओसिरिस की हत्या करके, उसके शरीर को टुकड़ों में बांट कर पूरे मिस्र में बिखेर दिया और स्वयं मिस्र का सम्राट बन गया। ओसिरिस की मृत्यु के बाद आईसिस व्याकुल हो गई थी और वह अपने परिवार में, उत्तराधिकारी की कमी को महसूस कर रही थी। ओसिरिस के वारिस की तलाश में आईसिस को सूझा कि, वो देवताओं से प्रार्थना करेगी कि, उसे कम से कम एक संतान होना चाहिए। अपने इस अभियान की सफलता के लिए, वह मिस्र की सेना में शामिल हो गयी और पूरे देश में ओसिरिस की मृत देह के टुकड़े ढूंढती रही। कहते हैं कि, ओसिरिस का लिंग छोड़कर, शरीर के पूरे टुकड़े आईसिस को मिल गए थे।

ओरिसिस के शरीर के टुकड़ों को लेकर आईसिस, मिस्र के देवता अनुबीस और थोथ पास गई, जिन्होंने सभी टुकड़ों को जोड़ दिया और फिर ओसिरिस की लगभग ममीकृत देह से लिपटकर, आईसिस ने देवताओं से यह कामना की कि, उसके और ओरिसिस के एक संतान होना चाहिए। देवताओं के आशीष से इस असंभव तरह की जोड़े बंदी से उनको एक पुत्र की प्राप्ति हुई, जिसका नाम होरस रखा गया और जिसने सेठ से

अपने पिता की हत्या का बदला लिया तथा सेठ की हत्या के बाद, मिस्र का सम्राट बन कर सफलता पूर्वक शासन किया। कहते हैं कि, वास्तव में ओसिरिस, उर्वरता और पुनर्जीवन का देवता था। उसकी मृत्यु के पश्चात भी यह मान्यता प्रचलित रही कि, वह पाताल लोक और वहां के मृतकों का शासक था। जिसने नील नदी की बाढ़ और मिस्र की प्रकृति को नवजीवन दिया था। जनधारणा यह भी है कि, मिस्र का हर एक व्यक्ति ओसिरिस से जुड़ा हुआ था, क्योंकि मान्यता यह थी कि, ओसिरिस से जुड़कर, पुनर्जीवन पाया जा सकता है, अतः ओसिरिस ना केवल मृतकों का राजा था, बल्कि उसे जीवित लोग भी मृत्यु उपरांत जीवन के लिए पूजते रहे...

सामान्यतः भाई बहन के ब्याह को हम अनैतिक मानते हैं, किंतु ओसिरिस और आईसिस जोकि, धरती और आकाश के देवता और देवी की संतान होने के नाते, सगे भाई बहन थे। उन्होंने प्राथमिकता के साथ परस्पर विवाह किया। देवी और देवता की संतान होने के नाते, वे दोनों ना केवल सगे भाई बहन थे, बल्कि देवता और देवी तुल्य भी थे, जैसा कि, कथा के अंत में यह पता चलता है कि, ओसिरिस अपनी मृत्यु के पश्चात् पाताल लोक के देवता के रूप में विख्यात हुआ। उसकी मृत्यु वास्तव में अनैतिक यौन संबंधों के कारण हुई थी। सेठ ओरिसिस का निकट संबंधी था लेकिन उसकी पत्नी से यौनाचार की सजा ओसिरिस को मिली। उसके लिए सेठ के मन में अत्यधिक घृणा थी, इसलिए उसने ओसिरिस के क्षत-विक्षत शरीर के टुकड़े करते हुए पूरे मिस्र में बिखेर दिया था और उसने मिस्र की सत्ता पर अधिकार भी कर लिया था।

दिवंगत ओसिरिस देव पुत्र था, किंतु उसकी मृत्यु हुई, अतः यह मानना कठिन नहीं है कि, अमर कहे जाने वाले देवताओं की हत्या भी हो सकती है, अगर यह कृत्य किसी अन्य देवता के द्वारा किया जाए तो। कथा से स्पष्ट होता है कि, सेठ भी, उसका भाई था। एक तरह से देवपुत्र। जिसके पास ओसिरिस की हत्या करने के लिए, दो कारण मौजूद

थे। एक ओसिरिस का, उसकी पत्नी के साथ अनैतिक संबंध होना और दूसरा मिस्र के शासन पर खुद का कब्जा कायम कर लेना। उसने ओसिरिस की हत्या के पश्चात, उसके अंग, मिस्र के हर छोर पर में बिखेर दिए थे। बदले की आग में झुलस रही, संतानहीन, आईसिस सेना में भर्ती होने के बाद, मृत ओसिरिस की देह के टुकड़े ढूंढती रही। लेकिन उसे, ओसिरिस का लिंग मिला ही नहीं। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि, सेठ ने शरीर के अन्य अंगों की तरह से मिस्र की धरती पर ओसिरिस का लिंग फेंका ही नहीं होगा, क्योंकि वह अपनी पत्नी के साथ ओसिरिस के यौन संबंधों से अत्यधिक क्रुद्ध था।

संभवत इसीलिए उसने, दूसरे अंगों की तरह से, लिंग को फेंका ही नहीं और वह आईसिस को मिला भी नहीं। आगे की कथा यह है कि, ओसिरिस को देवताओं के आशीर्वाद से, टुकड़े टुकड़े हुए शरीर की जगह में, एक ममीकृत शरीर मिलता है, जिसके साथ लिपटकर, आईसिस एक पुत्र की कामना करती है और देवताओं से यह आशीष मांगती है कि, उसे ओसिरिस से ऐसा पुत्र मिले जोकि उसकी हत्या का बदला चुका सके। यह कथन अजीब है कि, मृत देह के संसर्ग से कोई बच्चा पैदा हो जाए। लेकिन यह विश्वास स्वभाविक है कि, ईश्वर की कृपा से सब संभव हो सकता है। बहरहाल आईसिस को पुत्र के रूप में होरस का मिलना और उसका युवा होना, फिर अपने पिता के हत्यारे सेठ की हत्या करना और स्वयं मिस्र का सम्राट बन बैठना, बदले की आग में जलती हुई, आईसिस के संतोष का विषय हो सकता है। ओसिरिस की मृत्यु के पश्चात प्रचलित यह मान्यता है कि, वह पाताल लोक का देवता हुआ और मृतकों का आराध्य होने के साथ ही साथ मिस्र की जीवित जनता का भी आराध्य रहा, क्योंकि वह उर्वरता और पुनर्जीवन का प्रतीक था।

अतः जीवित जनसामान्य अपनी मृत्यु के उपरांत पाताल लोक या मृत्यु लोक में अपने बेहतर जीवन की कामना के अधीन ओसिरिस की पूजा करते थे। यह विचार कि, मृत्यु के उपरांत कोई जीवन है। भारतीय

परंपरा और जनविश्वास से साम्य रखता है। हम यह मान सकते हैं कि, भाई बहनों के अनैतिक संबंध की कल्पना और मान्यता हमारी नहीं है, किंतु मिस्र में इस तरह के संबंधों का प्रचलन सामान्य और सहज था। संतानों की, उत्पत्ति, जीवन और पुनर्जीवन, देवताओं की कृपा पर भी निर्भर होता है, भले ही पति पत्नी दैहिक संसर्ग में लीन ना भी हुए हों तो। यह धारणा हमारे चिंतन और हमारी मान्यताओं के बेहद निकट है। अतः इस कथा को दु:खद कथा मानते हुए, हम हत्या के बदले हत्या और देवताओं की पूजा की अनिवार्यता के तत्व को स्वीकार करते हैं और यह भी मानते हैं कि, ओसिरिस, पुनर्जीवन, उर्वरता और मृत्यु लोक का देवता था, जिसकी संतान ने अपने पिता की मृत्यु का बदला लिया और सिंहासन पर उसका, उत्तराधिकारी बन बैठा, जैसा कि देवी आईसिस यानि, उसकी मां की कामना थी...

तूतनखामन और अनखेसेनामुन

मिस्र में, फिरौनो का युग था जब कि, अनखेसेनामुन के पिता की मृत्यु हो गई थी और उसे अपने पिता से की गयी वचनबद्धता के अनुसार, तूतनखामन से ब्याह करना पड़ा। वो मिस्र की शाही परंपरा में, सबसे बड़ी शहजादी थी और तूतनखामन, उससे उम्र में लगभग दो साल छोटा था। ब्याह के बाद, अनखेसेनामुन के दो बेटियां असयय ही मर गईं। तूतनखामन का शासन काल बेहद संक्षित रहा। उसके शासन का अधिकांश समय, उससे पहले के फिरौन अखनातन के कार्यकाल में लिए गए फैसलों को सुधारने में बीता। खास तौर पर धार्मिक सुधार और केवल, सूर्य देव एटन की पूजा जैसे फैसले से निपटने में, उन दिनों, मिस्र में लगभग अस्थिरता के हालात थे। जनसामान्य और पुजारीगण, मिस्र की पुरानी धार्मिक परम्पराओं की पुनर्बहाली चाहते थे और तूतनखामन को यह करना पड़ा। कहते हैं कि, देवता आमुन की पूजा की पुनर्बहाली के समय में, उसकी पत्नी ने अपना नाम बदल कर अनखेसेनामुन किया था जबकि, पहले उसका नाम अनखेसेनपाटन था।

बहरहाल वो अट्ठारह साल जैसी कम उम्र में स्वर्ग सिधार गया। जिससे अनखेसेनामुन को अत्यंत शोक हुआ, किन्तु उसने वैधव्य को स्वीकार कर लिया और दूसरा ब्याह नहीं किया। उन दिनों में, फिरौन शासकों की अनेकों पत्नियां होना सहज बात थी, लेकिन तूतनखामन ने सिर्फ अनखेसेनामुन से ब्याह किया, जोकि शासकीय परम्परा से इतर बात थी, लेकिन इससे यह भी पता चलता है कि, तूतनखामन, अनखेसेनामुन से बेइंतिहा मुहब्बत करता था। उसके जीवन में किसी अन्य स्त्री, पत्नी के लिए कोई स्थान नहीं था। विवाह के बाद, अपनी दो पुत्रियों को खो

चुका, तूतनखामन, अपनी मृत्यु के समय तक, अनखेसेनामुन के प्रेम से कभी भी विरक्त नहीं हुआ। उसने किसी अन्य पत्नी की कामना नहीं की। अपने शादी शुदा जीवन में, तूतनखामन और अनखेसेनामुन एक साथ शिकार पर जाते, एक दूसरे को उपहार देते। उनका आपसी समर्पण बे-मिसाल था।

उन दोनों का दिल एक दूसरे की मुहब्बत में धड़कता। वो मानते कि, वे अभिन्न हैं, उनका कोई और नहीं, दूजा कोई ठौर नहीं। उन्हें एक दूसरे की फ़िक्र है, तो वे सेहतमंद हैं, खुशहाल हैं। उनका युवापन, उनका सामर्थ्य, एक साथ होने में है। उन्हें इश्क है, तो कोई दुःख नहीं, किंचित भी मनःताप नहीं।

इस आख्यान में तूतनखामन ना केवल अल्पवय पति था बल्कि अल्पवय फिरौन भी था। उसका शासनकाल अत्यंत संक्षिप्त था। उसके शासनकाल में अधिकांश समय, उसके पूर्ववर्ती फिरौन अखनातन द्वारा लिए गए, धार्मिक फैसलों को बदलने में निकल गया। यह अत्यंत महत्वपूर्ण सत्य है कि, प्रत्येक सम्राट, जनगण पर अपनी मजबूत पकड़ बनाए रखने के लिए धार्मिक सम्मोहन का इस्तेमाल करता है। तूतनखामन ने भी अपने पूर्ववर्ती फिरौन के समय में लिए गए इस फैसले पर, पुनर्विचार किया कि, राजशाही और मिस्री प्रजाजन, एकेश्वरवादी होंगे। उसके पहले के फिरौन के निर्णय से असंतुष्ट जनता और रूढ़ीवादी पुजारीगण, अल्पवय तूतनखामन पर दबाव बनाने लगे, जिसके कारण से उसे सूर्य देव की पूजा की एकेश्वरवादी व्यवस्था को बदलकर, आमुन को फिर से मिस्र का महत्वपूर्ण देवता घोषित करना पड़ा, उसकी पूजा बहाल करना पड़ी, जोकि बहुदेववादी धार्मिक व्यवस्था का नायक है। हम यह मान सकते हैं कि, पुजारियों के निजी स्वार्थ, इस मामले में प्रबल रहे होंगे, इसीलिये उन्होंने तूतनखामन पर एकेश्वरवाद के स्थान पर बहुदेवतावाद लाने के लिए अपनी आवाज उठाई होगी।

यह स्पष्ट है कि, उस समय के सम्राट के रूप में उसके पास,

बहुदेववादी, धार्मिक आस्थाओं की पुनर्बहाली के अलावा कोई अन्य विकल्प शेष नहीं था। उसके पूर्ववर्ती फिरौन के बाद मिस्र में अस्थिरता थी, और तूतनखामन का ज्यादातर समय, इस अस्थिरता को दूर करने में बीत गया संभव है कि, इसी तरह दबाब में, उसकी मृत्यु भी हुई हो। यह स्पष्ट है कि, धर्म, राजसत्ता पर पकड़ बनाए रखता है और धर्म के माध्यम से राजसत्ता, राज्य पर अपना आधिपत्य कायम रखती है। बहरहाल, तूतनखामन के समय को मिस्री साम्राज्य में धार्मिक अतीत की पुनर्बहाली का समय माना जाएगा। गौरतलब है कि, उसकी पत्नी ने देवता आमुन, के लिए अपना नाम तक बदल लिया था, तो यह स्वीकार करने में कोई हर्ज़ नहीं कि, देश की स्थिरता और सत्ता पर अपनी मजबूत पकड़ बनाए रखने के लिए तूतनखामन और उसकी पत्नी ने धर्म का इस्तेमाल किया, हालांकि वे सत्ता के सुख को अधिक समय तक भोग नहीं सके।

तूतनखामन अपनी पत्नी से आयु में छोटा था और अट्ठारह वर्ष की अल्पायु में स्वर्ग सिधार गया। उसका अपनी पत्नी से प्रेम प्रगाढ़ था। संभव है कि, उसने पत्नी से मोह आधिक्य के चलते, अन्य स्त्रियों से विवाह नहीं किया होगा, जबकि मिस्री समाज, फिरौनों और राजपुरुषों को, एक से अधिक पत्नी रखने के लिए सामाजिक स्वीकृति देता था, किंतु तूतनखामन, अपनी पत्नी के अतिरिक्त अन्य किसी स्त्री के संपर्क में नहीं आया। स्पष्टतः वह, अपनी पत्नी के इतर, किसी अन्य स्त्री बारे में नहीं सोचता था, जबकि वह ऐसा कर सकता था। संभव है कि, उसकी दोनों पुत्रियां, कदाचित जन्म लेने से पहले अथवा तत्काल बाद मर गईं थीं, उनकी मृत्यु का कारण, यह हो कि वह स्वयं अल्पवय, ब्याह का भागीदार था और उसका शरीर, अत्यधिक प्रेम, विशेषकर सहवास के लिए तैयार नहीं था।

वह अपनी पत्नी से छोटा था और पत्नी से पहले, मात्र अट्ठारह वर्ष की आयु में मर गया था, इस स्थिति में हम केवल कल्पना कर सकते हैं कि, उसकी पुत्रियों का मरना, उसकी शारीरिक अल्पवयस्कता अथवा

दौर्बल्य का परिणाम रहा होगा। उसकी पत्नी ने उसकी मृत्यु के बाद, किसी अन्य पुरुष अथवा राजपुरुष से विवाह नहीं किया, क्योंकि वह अपने पति के प्रति मोहासक्त थी, जैसा कि, उसका पति स्वयं भी उसके प्रति। तूतनखामन यह मानता था कि, वे दोनों अभिन्न हैं। एक दूसरे के लिए ठौर हैं, आश्रय तुल्य हैं। वह यह भी मानता था कि, उन दोनों को एक दूसरे की फिक्र है, इसलिए वो दोनों खुशहाल हैं। उनका एक साथ रहना, उनके यौवन और सामर्थ्य की श्रीवृद्धि का कारण है। यदि उन दोनों के मध्य इश्क है तो, मनःताप, संताप की कोई गुंजाइश नहीं। बहरहाल अपनी पत्नी अनखेसेनामुन। अपनी प्रेयसी अनखेसेनामुन के प्रति बेहद रूमानियत भरे ख्याल लिए, तूतनखामन, दो दशक से भी कम समय में, दुनिया के लिए एक ख्याल बनकर रह गया...

नेफरतारी और रामसेस महान

मिस्र के फिरौन सम्राट, रामसेस महान ने ईसा से 1312 साल पहले नेफरतारी से विवाह किया था और उसकी लगभग दो सौ पत्नियों में से नेफरतारी मुख्य रानी थी, पत्नी थी। असल में रामसेस महान के हरम में उसकी सभी पत्नियों में से, आठ रानियां मुख्य थीं, जिनमें सबसे पहला स्थान नेफरतारी का था। रामसेस महान से ब्याह के फौरन बाद रानी नेफरतारी ने रामसेस महान के ग्याहरवें उत्तराधिकारियों में से सबसे पहले उत्तराधिकारी को जन्म दिया। रामसेस महान नेफरतारी से इतना ज्यादा प्रभावित था कि, वो कहता कि, मेरा प्यार बेमिसाल है, अन्य कोई इसके मुकाबले में नहीं है, नेफरतारी दुनिया की सबसे खूबसूरत महिला है, जिसने मेरा दिल चुरा लिया है। फिरौन रामसेस महान के हरम में पत्नियों की भरमार थी, लेकिन नेफरतारी उसकी परम प्रिय पत्नी थी।

रामसेस महान ने अपने जीते जी अपनी और अपनी प्रिय पत्नी के शानदार मकबरे की कल्पना की थी और उसने मकबरे के निर्माणकर्ताओं, वास्तुकारों और कलाकारों को यह निर्देश दिया था कि, नेफरतारी हर तरह से उसके समान महत्व की है, ऐसा मानकर मकबरे का निर्माण किया जाए। यही वजह है कि, नेफरतारी और रामसेस महान के मकबरे और उनकी प्रतिमायें आज भी भव्य और खूबसूरत हैं, जोकि मिस्र की पुरातात्विक धरोहर का अनूठा उपहार हैं। यह मिस्र के फिरौन राजाओं की परंपरा थी कि, वे स्वयं की अमरता के लिए अपने जीते जी अपने भव्य मकबरों का निर्माण करवाते थे, जहां पर उनकी मृत्यु के उपरांत, उनके ममीकृत शरीर संरक्षित रखे जाते थे, ताकि वे उचित समय पर पुनर्जीवित हो सकें और पुनः अपनी देह का इस्तेमाल कर सकें।

उसने, नेफरतारी के लिए, मृत्यु पूर्व मकबरा बनवाने से पहले अपने समकक्ष ऊंचाई और समान सजधज की मूर्ति बनाने की व्यवस्था की थी। रामसेस महान मानता था कि, नेफरतारी का मंदिर भव्य होगा, जोकि मिस्र की वास्तुकला में गिने-चुने उदाहरण में से एक होगा। पुरुष प्रधान समाज में अपनी पत्नी के लिए इतना गहन प्रेम और उसकी मृत्यु के बाद उसके महत्त्व को अपने जैसा रखने की व्यवस्था करके रामसेस महान ने यह सिद्ध कर दिया कि, वह नेफरतारी के प्रति अत्यधिक समर्पित था।

पुरुष प्रधान समाज में सत्ता के शीर्ष पर बैठे फिरौन सम्राट रामसेस महान की दो सौ पत्नियां, उसकी कामुकता और मिस्र में पुरुषों के मुकाबले स्त्रियों की हीनदशाओं का स्पष्ट संकेत देती है। वह मिस्र के ख्यातनाम फिरौन सम्राटों में से एक था। उसने तत्कालीन मिस्री समाज में प्रचलित परंपरा के अनुसार बहुस्त्रीगामिता और हरम में अनेकों पत्नियां रखने की परंपरा का पालन किया, लेकिन इनमें से उसे आठ पत्नियां विशेष प्रिय थीं, और उनमें से सर्वाधिक प्रिय नेफरतारी थी। उसने अपने जीते जी अपने और नेफरतारी के भविष्य की योजना तैयार कर रखी थी कि, मृत्यु के उपरांत वे दोनों फिर से जी उठेंगे। इसलिए उसने दोनों के लिए समान महत्व, समान ऊंचाई और समान सौंदर्य मानकों से सुसज्जित प्रतिमाएं तैयार करवाईं और मकबरे बनवाएं। असल में रामसेस या नेफरतारी के जन्म और दैनिक जीवनचर्या के बारे में तथ्यगत जानकारियों का विलोप हो चुका है।

फिर भी मृत्यु के बाद, उन दोनों के मकबरों से प्राप्त वास्तुकला की निशानियां, यह स्पष्ट करती हैं कि, रामसेस महान, नेफरतारी से किस कदर प्रेम करता था। जब मिस्र में पुरुषों की तुलना में बनाई गई, स्त्री प्रतिमाओं की ऊंचाई कम हुआ करती थी, उस समय फिरौन रामसेस महान ने नेफरतारी की प्रतिमा अपने समान कद में बनवाई, जिससे स्पष्ट होता है कि, वह नेफरतारी से कितना प्रभावित था। हम जानते हैं कि रामसेस महान की प्रिय पत्नी नेफरतारी का पूरा नाम नेफरतारी मेरिमुट था,

जिसमें से, नेफरतारी से आशय, सुंदर साथी और मेरिमुट का अर्थ है, मातृ देवी मुट की प्रिया। रामसेस महान और उसकी पत्नी की प्रेम कथा, इतिहास के बजाय मिथकों में भले ही कही जाती हो, लेकिन उनका प्रेम अद्भुत था। मिस्री समाज में प्रेम के ऐसे अनेकों प्रकरण मिलते हैं, किंतु सम्राट रामसेस महान और नेफरतारी के प्रेम के इस आख्यान को, उनमें से सर्वाधिक प्रचलित आख्यान माना जा सकता है। कहते हैं, यदि आप प्रेम में हों, तो आपका सिर, पूज्यनीय देवताओं से पहले प्रियतमा के आगे ही झुकेगा...

फ्रेया

मुद्दतों पहले की बात है, जब नॉर्स देवताओं के दो कुनबे होते थे। एक तो वे जो, एसर यानि कि, पुराने नॉर्स देवता थे, जिनमें, विली, वे और ओडिन प्रमुख थे, जबकि दूसरा कुनबा वनीर देवताओं का था, जिनमें समुद्रों के देवता नजोर और उसकी दो बेटियां, फ्रेया और फ्रीयर शामिल थे। सामान्यत: यह माना जाता है कि, वनीर समूह के देवता, खेती और उर्वरता के देव थे जबकि एसर देवता, शक्ति और युद्ध के देवता थे। इन दोनों समूहों में अक्सर युद्ध होता रहता और वे एक दूसरे को बंदी बनाते फिर संधि होने पर छोड़ते रहते। एक बार फ्रेया और फ्रीयर के बंदी बनने का उल्लेख भी मिलता है। कहते हैं कि, एक पुरातन नॉर्स देव मिमिर जोकि, अपने ज्ञान के लिए प्रसिद्ध था। उसने दोनों कुलों के मध्य युद्ध रोकने के लिए एक सुझाव दिया कि, वनीर देवताओं में से फ्रेया, एसर देवता ओडिन से ब्याह करे, तो दोनों कुलों में स्थाई युद्ध बंदी हो जाएगी। हालांकि फ्रेया ने मजबूरी में ही सही, यह ब्याह कर लिया, लेकिन उसने कभी भी इस समाधान को पेश करने वाले मिमिर को क्षमा नहीं किया।

उसे मालूम था कि, युद्ध और रक्तपात रोकने के लिए यह समाधान, दोनों पक्षों के दरम्यान, स्थाई शान्ति का मार्ग प्रशस्त करता है। वो अपने कुल के परंपरागत शत्रु ओडिन से प्रेम नहीं करती थी लेकिन वो, ज्ञान के देवता मिमिर के सुझाव पर हिंसा और रक्तपात को रोकने के लिए ओडिन से ब्याह करने के लिए राजी हो गई, भले ही उसके मन में मिमिर के प्रति दुर्भावना बनी रही। उसका, ओडिन से ब्याह युद्ध टालने वाले समझौते के तहत किया गया था, अतः नवदंपत्ति के आपसी संबंधों में प्रेम और आसक्ति की खोज करना व्यर्थ है। बहरहाल ओडिन और फ्रेया के समागम

से बालदुर नाम के, बहादुर राजकुमार का जन्म हुआ, लेकिन फ्रेया इस शादी से अब भी, संतुष्ट नहीं थी। वो अपने पति की लालसाओं के कारण से तनाव में आ गई थी और जैसे ही उसे यह पता चला कि, भविष्य में उसके बेटे की जान खतरे में पड़ सकती है, तो उसने बालदुर को अजेय बनाने के लिए उस पर जादू करने का फैसला किया। उसके जादू से बालदुर को कोई दर्द नहीं हुआ, लेकिन वो चाहता था कि, उसे इस जादू से मुक्त रखा जाए।

उसकी मां फ्रेया ने उसके अक्षय जीवन को ध्यान में रखकर उससे यह झूठ बोला था कि, वह कालांतर में इस जादू से मुक्त हो सकता है। कहते हैं कि, बालदुर लंबे समय तक जादू तोड़ने का तरीका खोजता रहा जोकि, उसे कभी मिला ही नहीं। इधर शादी के बाद फ्रेया वल्क्रीज कही जाने वाली अप्सराओं की मुखिया बन गई जोकि ओडिन की सेवकायें थीं और जो युद्ध के समय मारे गए योद्धाओं की आत्मा को दिशा दिखाने का कार्य करती थीं। चूंकि फ्रेया तनाव में थी और अपने ब्याह के प्रति उसमें गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था तो उसने ओडिन से अपनी शादी तोड़ दी। जिसके कारण एसर समूह के देवता नाराज हो गए, खासकर थोर ने वनीर पक्ष के अनेकों दिग्गजों को बेरहमी से मार डाला। उसने देवी फ्रेया को श्राप दिया कि, वह कभी भी अपनी ससुराल को छोड़ नहीं पाएगी तथा किसी जीवित प्राणी को नुकसान नहीं पहुंचा पाएगी। थोर ने सभी अप्सराओं को छोड़कर फ्रेया के पंख छीन लिए।

उस समय ज्यादातर लोग यह मानने लगे थे कि, फ्रेया में उसके कुनबे की खेती और उर्वरता जैसे देवत्व की भावना के स्थान पर एक योद्धा जैसी भावना निहित हो गई हैं। थोर की बंदिशों के बावजूद फ्रेया जानती थी कि, उसकी ससुराल की अभेद्य दीवारों में एक गुप्त कमजोरी भी है, इसलिए वो वहां से निकल भागी और उसने एक विशाल कछुए के साथ नाइन झील में निवास करना प्रारंभ कर दिया। उसी समय उसने एक शूकर देवता से भी मित्रता की, जो ये भूल गया था कि, वह वास्तव में

शूकर नहीं है। दरअसल यह कथा प्रेम कथा नहीं है बल्कि ओडिन और फ्रेया के मध्य एक संधि तथा संधि के एवज में फ्रेया के साथ ओडिन के सहवास की कथा है। फ्रेया इस संधि और दाम्पत्य सम्बन्ध से मुक्ति चाहती थी, क्योंकि वह इस ब्याह के लिए पहले ही अनिच्छुक थी। ससुराल से मुक्त हुई, फ्रेया को बाद में पकड़कर ससुराल वापस ले जाया गया। उसे फिर कभी, किसी ने नहीं देखा और चिंता यह है कि, वह मर खप गयी होगी।

यह आख्यान जर्मन मूल के लोगों में प्रचलित है। इसके मुताबिक नॉर्स देवताओं के दो अलग-अलग वैचारिक समूह थे, एक खेती और उर्वरता का तथा दूसरा युद्ध और शक्ति का। उनमें युद्धों की निरंतरता थी, जिनके कारण से रक्तपात और मृत्यु की अपरिहार्यता के संकेत यह कथा देती है। इस कथा में एक ही मूल के देवताओं में पारंपरिक दुश्मनी का विचार नया नहीं है, क्योंकि यह पूरी दुनिया में दृष्टव्य सह प्रचलित सत्य है। ज्ञान के नॉर्स देवता मिमिर इस रक्तपात से मुक्ति चाहते हैं और वे इसके लिए संधि का प्रस्ताव देते हैं, जिसके तहत एक पक्ष दूसरे पक्ष के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित कर लेता है और फिर उभय पक्ष शांति के साथ रह सकते हैं। कथा में वनीर देवता समूह में से फ्रेया इस संधि से प्रसन्न नहीं है, लेकिन उसके पास अन्य कोई मार्ग भी नहीं है। अतः वह दुश्मन पक्ष के देवता ऑडिन से विवाह करने के लिए सहमत तो होती है, लेकिन इसमें उसकी अनिच्छा भी सम्मिलित है। वह इस तरह का सुझाव देने वाले देवता मिमिर से अप्रसन्न है। संभवत इसका कारण यह हो कि, एक युवती के रूप में उसकी अपनी अस्मिता, अपनी पहचान है और वो अपने अनुकूल वर या प्रेमी की कामना करती होगी, लेकिन युद्ध ने उसके ऊपर एक नई तरह की संधि आरोपित कर दी।

जिसमें उसे न केवल अनिच्छा से, पति का चयन करना पड़ा बल्कि उसके साथ अनेकों वर्ष तक दैहिक संबंध भी स्थापित करना पड़े। क्या यह उचित है कि, किसी युवती की अनिच्छा के बावजूद, उस पर कोई वर थोप दिया जाए, जोकि उसके ना चाहने पर भी उसकी देह का, इस्तेमाल

करे। बहरहाल इस विवाह में प्रेम नहीं था, किंतु अनचाहे सहवास से एक बहादुर बच्चे का जन्म होता है। जिसकी मृत्यु की भविष्यवाणी को ध्यान में रखकर फ्रेया, अपने पुत्र पर जादू करती है, ताकि वह अनश्वर और अजेय बना रहे, जबकि बच्चा अपनी बहादुरी के चलते, इस जादू से मुक्त होना चाहता है। यह कथा असल में युद्ध रोकने और शांति की कथा तो है, लेकिन इसमें एक युवती की अस्मिता का सौदा भी सम्मिलित है। युद्ध रोकने के लिए उसका इस्तेमाल होता है, भले ही वह इस संबंध को पसंद नहीं करती। पूरी दुनिया का इतिहास, ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है, जहां स्त्रियों देह की बर्बर लूट किया जाना अथवा युद्ध को रोकने के लिए वैवाहिक संबंधों की स्थापना किया जाना हो। इस अर्थ में यह आख्यान धरती के इतिहास का पुनः प्रकटीकरण करता है। स्पष्ट तथ्य ये कि, पुरुष युद्ध तो लड़ते हैं पर उनके युद्धों का अंत, स्त्रियों की देह पर बलात कब्जे और सहवास पर निहित होता है।

यह अजीब बात है कि, वे लोग, युद्ध के स्थान पर शांति के लिए, भूखंडों और अन्य किसी वैकल्पिक उपाय की तुलना में स्त्रियों देह की गारंटी को प्राथमिकता क्रम में रखते हैं। संभव है कि, स्त्रियों में निहित प्रेम तत्व या सामर्थ्य के आधार पर यह विश्वास किया जाता हो कि, आगे चलकर हिंसा नहीं होगी? क्या यह उचित है कि, शांति और अहिंसा के नाम पर स्त्रियों की इच्छाओं का दमन कर दिया जाए। फ्रेया व्यक्तिगत रूप से ऑडिन के प्रेम में नहीं थी, किंतु अपने देश के सम्मुख आन पड़ी, विपत्ति के निवारण के लिए उसे समझौता करना पड़ा। चूंकि वो समझौते के पति ओडिन की लालसाओं से विरक्त थी। इसलिए उसने एक विशिष्ट समय में संधि के मार्ग को त्याग कर, वैवाहिक सम्बन्ध को तोड़ने का मार्ग चुना और ओडिन से अपने ब्याह को तोड़ दिया। हालांकि उसका यह निर्णय विलंब से लिया गया निर्णय था, अगर वह चाहती तो ब्याह से पहले भी यह निर्णय ले सकती थी। संभव है कि, उस समय वह और उसकी बहन, एसर कुनबे के देवताओं की बंदिनी थीं और बंदिनी के तौर पर जीवन जीने के बजाय स्वयं की मुक्ति चाहती हो। हो सकता है कि,

उसने संधि के समय, स्वयं के कुनबे की सुरक्षा के लिए, अपनी इच्छाओं को हाशिए पर डाल दिया हो?

आख्यान से स्पष्ट संकेत मिलता है कि, ब्याह टूटने और संधि टूटने में कोई अंतर नहीं था। अतः एसर समूह के देवताओं ने सम्बन्ध टूटने के बाद काफी हिंसा की और देवी फ्रेया को बंदी बनाए रखने का जतन किया। उन्होंने चाहा कि, वह अपनी ससुराल का परित्याग ना कर सके। यहां तक कि, एसर समूह के देवता ओडिन की सेविका, अप्सराओं को छोड़कर उसके पंख भी छीन लिए गए, किंतु फ्रेया उस परिवार की निर्बलताओं को जानती थी, अतः वो वहां से भाग निकली और जल में रहने वाले विशाल कछुए के साथ निवास करने लगी। स्मरण रहे कि, उसके पिता नेजोर स्वयं, जल के देवता थे। इस कथा में एक दिलचस्प उल्लेख यह है कि, एक भुलक्कड़ देवता जो यह भूल गया है कि, वह शूकर नहीं है किन्तु स्वयं को शूकर समझता है। उसकी मित्रता फ्रेया से हो जाती है। दुर्भाग्यवश फ्रेया पकड़ी जाती है और उसे पुनः ससुराल में बंदी बना लिया जाता है। मुमकिन है कि उसे मृत्यु का मुख देखना पड़ा हो क्योंकि बाद में उसे किसी ने देखा नहीं। इस आख्यान में देवताओं के संघर्ष लगभग वैसे ही है जैसे वास्तव में नश्वर मनुष्यों और राजाओं के संघर्ष हो सकते हैं। जमीनों के लिए। स्त्रियों के लिए। उनकी संधियां भी वैसी ही है, जिनमें स्त्रियों की अस्मिता का कोई मोल नहीं होता...

नार्सिसस

इको एक परी थी। जिसकी तकदीर में यह लिखा था कि, वह सिर्फ दूसरों की आवाजों और उनके आखिरी लफ़्ज़ों को दोहरा पायेगी। इसके अलावा वह खुद ब खुद कुछ बोल नहीं सकेगी। एक रोज उसने नार्सिसस को देखा और उसे मन ही मन में चाहने लगी। वह उसका पीछा करती रही। लेकिन जब तक नार्सिसस कोई बात बोलता नहीं, तब तक वह उसको दोहरा नहीं सकती थी। नार्सिसस का जन्म, नदी के देवता और लिरिओप नामक की परी के प्रणय संबंधों के दौरान हुआ था। लिरिओप को एक भविष्यवक्ता ने यह बता दिया था कि, जैसे ही नार्सिसस खुद को पहचानना भूल जाएगा। उसका बुढ़ापा आ जाएगा। बहरहाल बचपन बीता और नार्सिसस एक खूबसूरत युवक हो गया। उसे जो भी देखता, उससे मुहब्बत करने लगता, हालांकि नार्सिसस ने अभी तक, किसी के इश्क में मुब्तिला होने का कोई संकेत नहीं दिया था।

एक रोज उसे यह अनुभूति हुई कि, कोई उसका पीछा कर रहा है। तब उसने उससे बात करने की कोशिश की, लेकिन उसकी यह कोशिश बेनतीजा रही, क्योंकि इको सिर्फ नार्सिसस के लफ्जों को दोहरा सकती थी। वो अपनी तरफ से कुछ बोल नहीं सकती थी। इको ने एक दिन नार्सिसस को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन नार्सिसस ने, उसे स्वीकार नहीं किया और फिर दु:खी इको अदृश्य हो गई। उसका जिस्म, जैसे हवा में घुल गया हो। जब वह नार्सिसस को नहीं पा सकी, तो हमेशा हमेशा के लिए पहाड़ों और गुफाओं, जंगलों के दरमियान छुप गई, क्योंकि अब उसके पास कोई जिस्म नहीं था। उसकी हड्डियां गोया पहाड़ों की चट्टान बन गई हों। उसे पहाड़ों की चोटियों, घाटियों और गुफाओं में सुना जा

सकता था। लेकिन उसके लिए नार्सिसस की मुहब्बत में नाकामी, सबसे बड़ा दंड था।

देवताओं ने कहा था कि, नार्सिसस के पास ऐसा कुछ भी नहीं होगा, जिससे कोई इश्क करे, सो नार्सिसस के पास जो भी आता, उससे नाउम्मीद होकर लौटता। एक रोज नार्सिसस, शिकार करने निकला था और उसे प्यास लगी, तो वह तालाब में पानी पीने के लिए झुका, लेकिन पानी में अपनी ही छवि को पहचान नहीं सका। उसे अपनी छवि से इश्क हो गया। यह उस भविष्यवाणी के जैसा समय था, जो उसकी मां को भविष्यवक्ता ने बताया था। वह वहां से हिल भी नहीं पा रहा था और पानी में अपनी छवि को पकड़ भी नहीं पा रहा था। जिससे वह अत्यधिक प्रभावित था। उसने देवताओं को आवाज दी कि, उसे इश्क से वंचित क्यों किया जा रहा है जबकि वो उन दोनों के दरम्यान, मौजूद है। वह जिसे इश्क करता है। उसकी पकड़ में क्यों नहीं आ रहा है?

वह अपनी छवि से बातें करने लगा। उसने तय किया कि, वह जिसकी मुहब्बत में गिरफ्तार हुआ है। उसे छोड़कर कहीं नहीं जाएगा। वह बिना नींद और खाने के वहीं ठहर गया। खुद से मुहब्बत में पागल नार्सिसस बर्बाद हो गया। उसकी बर्बादी को देखकर, इको वापस आई। वह शोक करने लगी जैसे ही नार्सिसस ने अपनी छवि को आखिरी विदाई दी। इको ने उसके लफ़्ज़ों को दोहराया। इसके बाद नार्सिसस, जमीन की शैया पर लुढ़क गया। परियों ने उसकी मृत्यु पर शोक मनाया और मुर्दा जिस्म को, अपने बालों से ढक दिया। वो उसका अंतिम संस्कार करने के लिए तैयार हो चुकी थीं पर जैसे ही वापस मुडीं तो वहां पर कोई इंसान नहीं था, बल्कि एक फूल था, जिसे नार्सिसस कहते हैं।

यह आख्यान प्रतीकात्मक रूप से बेहद दिलचस्प है, क्योंकि नार्सिसस, नदी के देवता और लिरिओप नाम की परी की संतान है। नदी, जो एक जल स्रोत है और सांकेतिक रूप से किसी अन्य जलस्रोत पर नार्सिसस की मृत्यु हुई। जल स्रोत जो उसके पिता का घर है।

भविष्यवाणी यह थी कि, जब भी नार्सिसस अपने आप को पहचान नहीं पाएगा, तब उसका बुढ़ापा आ जाएगा यानि कि, उसकी मृत्यु हो जाएगी। शिकार के एक दिन वह प्यासा है और जल स्रोत के किनारे अपनी ही छवि पर मुग्ध हो गया है। वह उससे दूर नहीं जाना चाहता, बल्कि उसकी मोहब्बत के नाम पर देवताओं से शिकवा करता है और उसी जगह पर अपनी ही छवि को अनाम प्रिया के रूप में पुकारते हुए मर जाता है।

कथा कुछ इस तरह से आगे बढ़ती है कि, नार्सिसस बेहद खूबसूरत युवा हो चुका है और सभी उससे मोहब्बत करने लगते हैं। लेकिन वह किसी की और की तरफ ध्यान नहीं देता और सभी की उन्सियत को ठुकरा देता है। हालांकि खुद से उन्सियत और अपने आप को ना पहचानने के हालात में, उसकी मौत यकीनी हो जाती है, जैसा कि, भविष्यवाणी की गई थी। आख्यान कहता है कि, इको नाम की परी, नार्सिसस से पहली ही भेंट में मोहब्बत करने लगती है। लेकिन नार्सिसस उसकी तरफ ध्यान नहीं देता और वह दु:खी होकर, अपना जिस्म को बैठती है, और पहाड़ों कंदराओं और जंगलों में छुपकर रहने लगती है, क्योंकि उसके पास, अब खुद का कोई जिस्म नहीं है।

इको जो असल में किसी भी आवाज की प्रतिध्वनि है, एक नायिका परी के रूप में नार्सिसस से मोहब्बत करती है जोकि एक खूबसूरत युवा की जगह, अपनी मृत्यु के स्थान पर, एक शानदार फूल बन जाता है। यह आख्यान अद्भुत तरीके से एक युवती और एक युवक की असहमति से उपजी अफ़सोसनाक घटनाओं का विवरण देता है, जिसके मुताबिक, दोनों ही अपने जिस्म को त्याग कर कायांतरित हो जाते हैं वो युवती केवल आवाज की प्रतिध्वनि बन जाती है, जबकि नार्सिसस एक खुशबूदार फूल। यह कथा इंसानों और परियों के दरमियान मुहब्बत की नाकामी की कथा है। लेकिन उनका प्रेम, रूप बदल कर अमर हो जाता है। युवती, प्रतीकात्मक रूप से प्रतिध्वनि के रूप में और युवक, नार्सिसस के फूल के रूप में तब्दील हो जाता है।

परियां युवक की मृत्यु का शोक करती हैं, लेकिन वे देह का अंतिम संस्कार करने से पहले देखती है कि, वह एक फूल में बदल चुका है। फूल जो अनंत काल तक धरती पर रहने वाला है और प्रतिध्वनि जो आवाजों के अमरत्व तक, इस दुनिया में जीवित रहेगी। इस कथा में कथित रूप से यह संकेत भी दिया गया है कि, नार्सिसस, किसी की मोहब्बत को क़ुबूल नहीं करता और एक रोज खुद से मोहब्बत करते हुए, अपने जिस्म को खो बैठता है। यह कहानी एक खास समय में असफल प्रेम की कहानी है, किंतु अनंत समय तक एक दूसरे के समानांतर जीवित रहने वाले, प्रेमी जोड़े के रूप में यह कथा भी हमेशा हमेशा के लिए जीवित रहेगी। लोग नार्सिसस से इश्क करेंगे और पहाड़ों में अपनी आवाजों की प्रतिध्वनि सुनकर खुश हुआ करेंगे...

थर थर कांपती पत्तियां

मुद्दतों पहले कनाडा के अंध महासागरीय तट पर एक महान योद्धा रहता था। जिसके पास अद्भुत शक्तियां थीं, मसलन खुद को अदृश्य बना लेना, शत्रुओं की साजिशों को गुप्त रूप से जान पाना वगैरह वगैरह। उसकी बहन जोकि तेज हवाओं की मलिका थी, समुद्र तट पर खेमा बना कर रहती थी। वो अपने भाई के कामों में मदद करती। वो उन लड़कियों का इम्तहान लेती जो उसके पराक्रमी भाई से ब्याह करना चाहतीं थीं। लेकिन लम्बे समय तक कोई लड़की मलिका के इम्तहान की कसौटी पर खरी नहीं उतरी। चूंकि उसका भाई अक्सर अदृश्य बना रहता तो वो ब्याह के लिए इच्छुक लड़की के साथ समुद्र तट पर टहलते हुए पूछती, क्या तुमने मेरे भाई को देखा है? लड़कियां मलिका का दिल जीतने के लिए झूठ बोल देतीं हां हमने उसे देखा है। मलिका पूछती तो बताओ वो अपनी स्लेज कैसे खींचता है? कोई लड़की कहती बड़ी डोरी से, कोई कहती डंडे से और कोई कहती मूस की खाल से। मलिका जानती थी कि, ये कपोल कल्पित जबाब हैं तो वो उन्हें अस्वीकृत कर देती। संयोग से उसी गांव में एक मुखिया के तीन लड़कियां थीं जिनमें से सबसे छोटी लड़की बेहद खूबसूरत और नर्म दिल थी। उसकी दोनों बड़ी बहने उससे ईर्ष्या करती थीं और उसके प्रति क्रूर व्यवहार भी किया करतीं।

वे अपनी बहन को फटे पुराने बदरंग कपडे पहनने देतीं। उसके बाल काट देतीं, इतना ही नहीं, उन्होंने उसके चेहरे को आग में झुलसा दिया ताकि वो बदसूरत दिखे। वो दोनों अपने पिता से कह देतीं कि, छोटी बहन ने यह सब खुद ब खुद किया है, हालांकि छोटी बहन सब्र करती और अपने काम में व्यस्त रहती। उसकी दोनों बड़ी बहने योद्धा से ब्याह

करना चाहतीं थीं तो वो दोनों एक शाम को, मलिका के साथ समुद्र के किनारे टहलने पहुंच गईं ताकि उसे बेवकूफ बना कर अपनी तमन्ना पूरी कर लें। मलिका ने सबसे बड़ी से पूछा क्या तुमने योद्धा को देखा है? उसने कहा हां, तब मलिका ने कहा कि योद्धा के कंधे का पट्टा कैसा है? उसने कहा वो चमड़े का है सो योद्धा उसे अपने पास नहीं रखता। यह झूठ था तो मलिका ने उससे कहा तुमने झूठ बोला है। जाओ यहां से। इसके बाद दूसरी बहन ने भी झूठ बोला, उसने कहा कि, मैंने योद्धा को देखा है। उसके कंधे का पट्टा घास से बुना गया है। मलिका ने उसे भी अस्वीकार कर दिया। इसी दरम्यान सबसे छोटी बहन ने अपने फटे हुए कपड़ों, जले हुए चेहरे के साथ, इस इम्तहान में शामिल होने का फैसला किया।

उसने अपने कपड़ों को बर्च की छाल से ढंक दिया और अपने साधारण से गहने पहन कर वो योद्धा को ढूंढने जा पहुंची। गांव की अन्य युवतियां और उसकी बड़ी बहने उसकी इस कोशिश को बेवकूफी मानकर बहुत हंसीं। लेकिन वो चुपचाप अपने रास्ते पर आगे बढ़ती गई। शाम का समय था। मलिका ने उससे पूछा क्या तुमने मेरी स्लेज को देखा, उसने कहा नहीं मैंने आपकी स्लेज को नहीं देखा। मलिका हैरान हुई इससे पहले कभी, किसी युवती ने सच नहीं बोला था। उसने पूछा क्या, तुमने मेरे योद्धा भाई को देखा है, वो अपनी बे-पहिया स्लेज को कैसे खींचता है? छोटी बहन ने कहा योद्धा अपनी स्लेज इन्द्रधनुष के साथ खींचता है। मलिका ने फिर पूछा उस धनुष की डोरी क्या है? छोटी बहन ने कहा, आकाश गंगा उसकी डोरी है। ये सच था, मलिका उसे अपने साथ घर ले गयी। उसे नहलाया, उसके चेहरे के दाग गायब हो गए। उसके बाल कौव्वे के पंखों की तरह से काले हो गए, फिर मलिका ने उसे शानदार कपड़े और गहने दिए। तभी योद्धा प्रकट हुआ उसने कहा हां, यही मेरी पत्नी है। यह झूठ नहीं बोलती।

उनका ब्याह हो गया और वे प्रेम से जिन्दगी गुजारने लगे।

बहरहाल इस घटना से उसकी दोनों बड़ी बहने हैरान रह गईं। उनका गुस्सा चरम पर था और वे उसने नुकसान पहुंचाने के बारे में सोचने लगीं। आदिम योद्धा उनकी क्रूरता से वाकिफ था, वो नहीं चाहता था कि, उसकी प्यारी पत्नी को कोई नुकसान या दुःख हो। उसने अपनी दिव्य ताकतों से दोनों बड़ी बहनों को एस्पन वृक्ष में बदल दिया और धरती पर रोप दिया तबसे लेकर आज तक हवा के डर से, एस्पन की पत्तियां थर थर कांपती हैं, चाहे वो तेजी से आये या आहिस्ता से। वो अपनी क्रूरता और झूठ के लिए अब भी दिव्य आदिम योद्धा के कोप को याद करती हैं।

यह आख्यान, अंध महासागर के तटीय कनाडा में रहने वाले जनजातीय समुदाय का आख्यान है। जिसमें सांकेतिक रूप से तेज हवा, जो दिखती नहीं है, वो अपने योद्धा भाई की बहन है। योद्धा भी तेज हवाओं की शक्तियों और अन्यान्य शक्तियों का मालिक है। जिसमें वह अदृश्य रहकर दुश्मनों से निपट सकता है, किंतु वो अविवाहित है और उसकी बहन को उसके ब्याह की चिंता है। हम यह मान सकते हैं कि, ये अमेरिका के मूल निवासियों का जीवन कथन है, जिसकी साम्यता, सिंड्रेला की कथा से की जा सकती है। कथा की नायिका, सबसे छोटी बहन, अपनी बड़ी बहनों से खूबसूरत है, और कोमल हृदय भी। उसकी बड़ी बहने उसे बदसूरत दिखाने के तमाम जतन करती हैं। उसे फटे कपड़े पहनाती हैं। उसका चेहरा उन्होंने जला दिया है और उसके लम्बे बाल काटकर छोटे कर दिए हैं। यही नहीं उन्होंने अपने पिता से यह भी कहा कि, छोटी बहन ने स्वयं ही यह सब कुछ कर लिया है। बहरहाल इस कथा में, दिव्य आदिम योद्धा के ब्याह के लिए तत्पर, उसकी बहन है, जो समुद्र के किनारे एक ठिकाना बनाकर रहती है। यह अद्भुत कथन है कि, हवा समद्र के किनारे ठिकाना बना कर रहे। उसे हम इस कथा में, कहन की सुविधा के लिए, मलिका के नाम से संबोधित कर रहे हैं क्योंकि वह हवा की मलिका है।

वह अपने भाई के लिए सुयोग्य पत्नी की तलाश में है और इच्छुक

युवतियों के इम्तिहान लेती है। खासकर शाम के समय समुद्र के तट पर। ज्यादातर युवतियां झूठ बोलकर दिव्य योद्धा को अपना पति बनाना चाहती हैं, लेकिन योद्धा की बहन ऐसी तमाम युवतियों को अस्वीकृत करती जाती है, यद्यपि वह सांकेतिक रूप से बदसूरत दिख रही, छोटी बहन का स्वागत भी करती है, जिसने अपने फटे कपड़ों में बर्च की छाल का पैबंद सा लगा लिया है और साधारण से गहने भी पहन रखे हैं। हम यह मान सकते हैं कि, मलिका हर युवती में अपने भाई की अच्छी पत्नी की संभावनाएं खोजती है, जो भी उसकी कसौटियों पर खरी उतर जाए। वह केवल देखकर छोटी बहन को ठुकराती नहीं बल्कि उससे सवाल पूछती है और वाजिब जवाब मिल जाने पर उसे अपने योद्धा भाई की पत्नी के रूप में स्वीकार कर लेती है। उसका भाई भी युवती के लिए दृश्यमान हो जाता है। वह मान लेता है कि लड़की, उसकी पत्नी बनने के योग्य है। कथा से स्पष्ट होता है कि, बर्फीले इलाके में निवासरत आदिम कबीले में बेहतर जीवन संगिनी खोजने के लिए किये गए सवाल, उस पर्यावास के अनुकूल हैं, मिसाल के तौर पर स्लेज और प्रातितिक रूप से, अदृश्य शक्तियों का अस्तित्व में होना, ऐन इन्द्रधनुष के जैसा या आकाश गंगा के जैसा।

बहरहाल उनकी दिव्य शक्तियां, लड़की के चेहरे के दागों को मिटा देती हैं और उसकी केश रचना पहले की तरह से खूबसूरत कर देती है। यहां केशों की रंगत काले कौव्वे के जैसी होने का कथन, पर्यावास के अनुकूल और अद्भुत कथन है। मलिका, युवती को शानदार कपड़े और गहने देती हैं और फिर आदिम योद्धा तथा युवती का ब्याह हो जाता है। ब्याह के बाद दिव्य आदिम योद्धा और युवती सुख पूर्वक, प्रेम पूर्वक रहते हैं, किंतु युवती की बड़ी बहनें अब भी, ईर्ष्यावश युवती को नुकसान पहुंचाने की सोचती हैं। इस स्थिति में आख्यान में एक अद्भुत सांकेतिक विवरण मिलता है कि, युवती का का पति। उन्हें एस्पन के दरख़्त में तब्दील कर देता है। जिसकी पत्तियां हमेशा कांपती रहती हैं। चाहे हवा तेज हो या मद्धम। इंसानों के बरअक्स पत्तियों का भय से कांपना, शानदार प्रतीकात्मक कथन है ये। वे अपनी करतूतों का फल पा रही हैं,

पता नहीं शर्मिंदा है अथवा नहीं। लेकिन कथा से यह संकेत अवश्य मिलता है कि, अगर आप सच बोलते हों तो आपको उसका सुखकर परिणाम ही मिलता है और अगर आप क्रूर हृदय हैं तो आपकी आशंकाएं हमेशा जीवित रहती है। यह कथा प्रेम से विवाह की कथा नहीं है, बल्कि विवाह के पश्चात प्रेम की कथा है, जहां पर पति अपनी पत्नी के दुःखद अतीत को सुखद भविष्य में बदलने की कोशिश करता है, क्योंकि उसकी पत्नी ही उसकी प्रिया है, जिसका सुख स्वयं पति का भी सुख है...

कटहदीन का ब्याह

उस रोज युवती, कटहदीन पहाड़ के पास जामुन इकट्ठे कर रही थी। उसने दोपहर की धूप में चमकते पर्वत को देखा उसकी चोटी भव्य सुफैद रंगत में चमक रही थी। युवती ठंडी सांस लेते हुए फुसफुसाई, काश तुम पुरुष होते और मैं तुमसे ब्याह कर पाती। वहां जामुन इकट्ठे कर रही, दूसरी स्त्रियों ने उसे उपहास की नज़र से देखा। युवती को लगा कि, पहाड़ ने उसकी बात अनसुनी कर दी है। तो वो और ऊंचाई की ओर बढ़ गयी। ऊंचे और ऊंचे। फिर उसे किसी ने देखा नहीं। अगले तीन साल तक उसके कुल, कबीले ने उसे पहाड़ पर मर खप गयी मान लिया। लेकिन एक दिन वो गांव वापस लौटी। उसकी गोद में एक खूबसूरत बच्चा था। जिसकी भौंहें पत्थर के जैसी थीं। उस बच्चे में अद्भुत शक्तियां थीं। अगर वो किसी परिंदे या जंगली जानवर की तरफ इशारा करता तो, वे वहीं पर बेसुध होकर गिर जाते और उसके कबीले के लोगों को, शिकार पर नहीं जाना पड़ता था, क्योंकि उनका शिकार उन्हें घर बैठे ही मिल रहा था। वो बच्चा असल में कटहदीन पहाड़ और उस युवती का पुत्र था। जिसे अपने पिता का नाम नहीं बताने का निर्देश दिया गया था। अगले कई सालों तक युवती और उसका पुत्र इस सवाल पर मौन साधे रहे।

लोग ताने मारते, सवाल करते, बच्चे को चिढ़ाते कि, वो एक अनाम पिता की संतान है। लगातार सवालों से बेचैन होकर युवती ने कहा, कटहदीन इसका पिता है। इस बच्चे का जन्म, हमारे कबीले की आगत पीढ़ियों के सामर्थ्यशाली, गौरवशाली होने के लिए, संस्थापक बतौर हुआ है। आगे चल कर ये कबीला पूरी दुनियां में अपनी नस्ल बढ़ाएगा और राज करेगा। फिर एक दिन किसी बात पर नाराज युवती ने अपने कबीले

को धिक्कारते हुए कहा, बेवकूफो जिन हाथों से तुम पानी में तैर सकते हो, उन पर नन्ही सी ततैया भी डंक मार देती है। क्या ये तुम्हें दिखता नहीं। ये सब जानते हुए भी तुम लोग मुझे परेशान करते हो। क्या तुम्हें बच्चे की भौंहों में कटहदीन के निशान दिखते नहीं? तुम्हारा व्यवहार तुम पर अभिशाप है। अबसे तुम अपना ही अहित करोगे। अपने पालतू पशुओं का मांस खाओगे, जो जहर की तरह से तुम्हारी नस्लों को बर्बाद कर देगा। इसके बाद युवती, अपने बच्चे की अंगुली पकड़ कर, पहाड़ की दिशा में बढ़ी और गायब हो गयी। शानदार भविष्य के हकदार, कबीले के लोग, पहाड़ के प्रेम और आशीर्वाद के प्रति अहसानमंद होने के बजाय अपनी जुबानों पर काबू नहीं रख सके। वे महान हो सकते थे। अब मुट्ठी भर शेष रह गए हैं।

यह कथा सांकेतिक रूप से अद्भुत है। कथा में उद्धरित समाज, उत्तरी अमेरिका के अर्वाचीन समुदाय यानि कि, मूल निवासियों की, एक युवती के हवाले से प्रकृति और समाज के एक्य का विवरण देता है। हम सभी जानते हैं कि, आदिम समुदाय मूलतः आत्मावादी और प्रकृति पूजक होते हैं, सो युवती का कबीला भी इस विशिष्टता से मुक्त नहीं है। युवती खाद्य संग्राहक के रूप में अपनी सखियों, नातेदारों के साथ प्रकृति प्रदत्त उपहार, जामुन का संग्रहण कर रही है। वो कटहदीन पहाड़ का सौन्दर्य देखकर अभिभूत है और पति के रूप में उसकी कामना करती है। पहाड़, जोकि, आदिम कबीलों की मान्यताओं के अनुसार, प्रकृति के अन्य तत्वों की तरह से देव शक्ति है अथवा देव पुरुष या प्रातीतिक रूप से कोई सुदर्शन, सुगठित देहयष्टि वाला युवा। कथनाशय यह है कि, कथा की नायिका द्वारा, किसी देवता या सामर्थ्यवान युवक से ब्याह की कामना, अस्वाभाविक नहीं है। युवती, देवता के शीश को, चमकीली धूप में शुभ्र, धवल रूप में देखती है, गोया यह उस खूबसूरत युवा के सिर पर सुफैद पगड़ी हो। वह अपनी मनोकामना को फुसफुसा कर कहती है, जैसे कि, अन्यान्य लज्जावान युवतियां करती हैं।

उसकी सखियां और सगे सम्बन्धी, कदाचित अपने खाद्यसंग्राहक

कबीले जैसी निर्धन अर्थव्यवस्था की पृष्ठभूमि में, और युवती द्वारा जोड़ीदार के रूप में चिन्हित किये गए, देवता या कुलीन युवा की तुलनात्मकता पर उपहास करती हैं, पर युवती उनकी चिंता किये बगैर आगे बढ़ जाती है और अपने कबीले से पलायन कर जाती है। ज़ाहिर है कि, युवती को अपना वर चुनने का अधिकार था और उसने इसका इस्तेमाल किया। बहरहाल अपने प्रेमी को लेकर, सहपलायन कर गयी युवती, अगले तीन वर्षों तक अपने ही कबीले द्वारा लगभग विस्मृत कर दी गयी है और आकस्मिक रूप से एक दिन घर वापस लौटती है, एक पुत्र के साथ, जो अपने पिता के जैसा दिखता है। बच्चे की भौं के पिता जैसे होने का कथन दिलचस्प है क्योंकि यह तो जैविक सत्य है कि संतति, अपने अभिभावकों के शारीरिक लक्षणों से साम्य रखती हो। अल्पवय बच्चे में शिकार करने की विलक्षण शक्ति होने का कथन कबीले के दिव्य शक्तिमान जामाता या अप्रकट बने रहे युवा दामाद के स्तुतिगान जैसा है। हालांकि यह कथन इस बात का संकेत करता है कि, युवती के पुत्र के कारण से वो कबीला खाद्य संग्राहक अर्थव्यवस्था से इतर आखेटकों जैसे खाद्य उपहारों का सुख ले रहा है, वो भी बिना मेहनत किये।

सामान्यतः यह प्रचलित जनविश्वास और मान्यता है कि, मुफ्तखोरी, काहिली, और अकर्मण्यता मनुष्यों के चरित्र में सकारात्मक ऊर्जा नहीं भरती बल्कि वे, अपने सुखकर भविष्य के बारे में सोचने समझने की शक्ति भी खो बैठते हैं। अब कबीले की फ़िक्र रोजी रोटी नहीं है, बल्कि युवती के पति और बच्चे के पिता की खोज परख, कानाफूसी, अफवाहों और उपहास उड़ाने जैसे कृत्यों तक सीमित हो गयी है। उन्हें किंचित भान भी नहीं कि, उनसे अथिक सामर्थ्यवान शक्ति, उनके साथ है और बच्चा दुनिया में, उनके गौरवशाली भविष्य का नायक है। वो युवती जो अपने कुल की उन्नति की आस लिये वापस आई थी। लेकिन नासमझ, निठल्ले, कुंठित समाज की फुसफुसाहटों से मुक्त होकर प्रियतम के घर वापस चली गयी और वो कबीला, जिसे पूरी दुनिया में छा जाना था। अपने करनी के दंड स्वरूप सिमटता जा रहा है। विलुप्त होते समाज सा, जो, अपनी

समृद्धि और ऐश्वर्यपूर्ण जीवन के सपने को, भोर होने से पहले ही विस्मृत कर गया हो। वहां उनके लिए प्रेम था, जो अब नहीं रहा...

सुफ़ैद घोड़ा और नीली हवा

गर्मियों की रुत में, शाम के ढलते ही ठंडक के अहसास के बाद या फिर सर्दियों के मौसम में, जब अलाव जल उठते हैं, तब रूटाबागा के लोग अपने बच्चों को कहानियां सुनाते हैं। खासकर सुफ़ैद घोड़े पर सवार लड़की और नीली हवा के मालिक लड़के की कहानी। कहते हैं कि, लड़की को घुड़सवारी का बेहद शौक था और वो, अक्सर पश्चिमी रूटाबागा की नदियों, झीलों के किनारे, पहाड़ों के इर्द गिर्द, घोड़े की लगाम को नर्म हाथों से थामे हुए घूमती रहती। उसके पास तीन घोड़े थे। एक बर्फ की तरह से सुफ़ैद, दूसरा भेड़ की धुली हुई सुफ़ैद ऊन की मानिंद और तीसरा चांदी सी शुभ्र रंगत वाला घोड़ा। लड़की के लिए यह तय करना मुश्किल था कि, इनमें से कौन सा घोड़ा उसे सबसे ज्यादा पसंद है। उसे सभी घोड़ों की सुफ़ैद अयाल, सुफ़ैद जिस्म और सुफ़ैद पांव बेहद पसंद थे और वो कहती कि, तीनों घोड़ों के कानों के करीब से लटकती अयाल उसे बेहद खूबसूरत लगती है।

लड़की के ही देश में, बेहद करीब रहने वाला लड़का, जो नीली हवाओं का दोस्त था और हवाओं की आवाजें सुनते हुए, घास और मिट्टी पर चहलकदमी करना पसंद करता। उसके ऊंचे जूते बेहद मज़बूत थे, इसलिए उसे रूटाबागा की नदियों, झीलों और पहाड़ों के आस पास पैदल चलने में कोई दिक्क़त नहीं होती थी। वो दूर दूर तक हवाओं की सोहबत में लम्बी लम्बी यात्राओं का शौक़ीन था। वहां गर्मियां सुबह छै बजे और सर्दियों की सुबह आठ बजे शुरू होती थी। उसे गर्मियों और सर्दियों की रात में चमकते सितारों वाली नीली हवा, फिर दिन और रात के दरम्यान, शाम को बहती नीली हवा, इसके अलावा भोर की नीली हवा, अच्छी

लगती थी, पर वह यह तय नहीं कर पाता था कि, कौन सी हवा उसे ज्यादा पसंद है। वह सुबह की हवा पर यकीन करता, उसे याद करता, रात की हवा उसके अन्दर समा जाया करती और उसके सारे राज जानती थी। वो मानता था कि, शाम की हवा, उससे इंतजार करने को कहती है और उसे वो सब देने वाली है, जो वह चाहता है।

बहरहाल एक दिन वो दोनों मिले, नदियों, झीलों और पहाड़ों के दरम्यान भटकते हुए, सुफैद घोड़े पर सवार लड़की और अपने मजबूत जूते पहने हुए पैदल घूमता हुआ लड़का। आखिरकार वो दोनों पश्चिमी रूटाबागा के रहने वाले पड़ोसी तो खैर थे ही। लड़की ने लड़के को अपने तीनों घोड़ों की रंगत के बारे में बताया, जिन पर सवार होकर वो घूमा करती थी और लड़के ने लड़की को तीनों नीली हवाओं के बारे में बताया, जिनकी सोहबत में वो था। जिस पर यकीन करता, जो उसके राज जानती और जो उससे सवाल पूछती और इंतज़ार करने को कहती। इसके बाद एक दिन, एक साथ, वो दोनों चले गए। कोई नहीं जानता कि, दोनों कहां गए? क्यों गए? यहां तक कि, रातों में कहानी कहने वाले, बड़े बूढों में से, किसी को कुछ पता नहीं। वे आज तक हैरान हैं।

यह आख्यान उत्तरी अमेरिका के प्रेयरी के मैदानों का है, जहां पर बुजुर्गवार अपने बच्चों को रात होते ही कथाएं सुनाते हैं, कभी अलाव के इर्द गिर्द और कभी गर्मियों के मौसम में बिना अलाव। इस कथा के नायक और नायिका रूटाबागा नामक देश के पश्चिमी हिस्से में रहते हैं और दोनों की रुचियां एक दूसरे से भिन्न हैं। नायक को पैदल घूमना पसंद है तो नायिका को घुड़सवारी का शौक है। नायक को नीली रंगत पसंद है तो नायिका को सुफैद। नायक को हवाओं की खुश्बू का ख्याल है तो, नायिका को घोड़ों की अयाल। बहरहाल उन दोनों को यायावरी समान रूप से प्रिय है और नदी, झीलें, पहाड़ भी।

उनकी पसंद, प्रकृति से वाबस्ता है और दोनों ही प्रकृति को अपने भीतर तक महसूस करते हैं। नायिका प्राकृतिक पर्यावास के जीव विशेष

पर आसक्त है तो नायक को जीवन दायिनी हवा से बातें करना पसंद है। चूंकि वे दोनों घास के मैदानों में कही गयी कथा के किरदार हैं, तो नायिका को ऊंची घास के दरम्यान घोड़ों के ऊपर बैठकर घूमना निरापद लगता होगा जबकि नायक घास में मौजूद ज़हरीले जीव जंतुओं से बचने के लिए मजबूत और ऊंचे जूते पहनता है। कथा में उन्हें प्रकृति मित्र बताया गया है जो पड़ोसी तो हैं पर मिले उम्र के खास मोड़ पर।

बहरहाल नायक नायिका, मिलने के अवसर पर, एक दूसरे की रुचियों और ख्यालातों को साझा करते हैं। उनका साझापन बेहद निजी है, यानि कि, उन दोनों के अलावा कोई नहीं जानता कि, उनके सह पलायन के मायने क्या हैं और दोनों एक के साथ कहां चले गए हैं। उन बुजुर्गों से दूर जो उनकी कथाएं कहते हैं, उनके बारे में हरेक रात बयान बाजियां करते हैं। उनके साझापन कदाचित प्रेम को बच्चों तक से कह डालते हैं। सो हरेक प्रेमी की तरह से इस कथा के नायक, नायिका भी सचेत हैं। उन गल्पों से जो उनके लिए कही जाने वाली हैं। वे साथ जाते हैं पर उनका जाना कथा वाचकों के लिए रहस्यमयी है। निश्चय ही वो दोनों प्रेम में रहे होंगे। उनके दिलों में एक दूसरे के लिए थोड़ा बहुत मोह ज़रूर होगा। आसक्ति होगी। लेकिन उन्होंने गोपन को अगोपन नहीं किया। कथाकालीन समाज के बूढों के लिए वो दोनों दीर्घकालिक अनिश्चय छोड़ गए हैं। लेकिन उम्र के विशिष्ट काल खंड में उनका मिलना और यह कथा संकेत कि, उन्होंने एक दूसरे के साथ विचार विमर्श किया और फिर चले गए, कदाचित वहां, जहां अफवाहें नहीं होंगी। उनके साझापन के विरोध का संकट नहीं होगा। कोई उन पर ताने नहीं कस पायेगा और वे रह सकेंगे एक साथ प्रेम से, जी सकेंगे अपनी अनुभूतियों की दुनिया में बे-रोक टोक, प्रकृति के इशारों पर धड़कते दिलों की शाश्वत जुगलबंदी में...

देशद्रोह

उन दिनों जबकि गोरे लोग अमेरिका में पहुंचे नहीं थे, तब नानटाकेट और मार्था के वाइनयार्ड में रहने वाले मूल निवासी हमेशा की तरह युद्धरत रहते थे। एक दिन मार्था के वाइनयार्ड के लोगों ने सोचा कि अगर वो आकस्मिक रूप से नानटाकेट के लोगों पर हमला कर दें तो, दुश्मन के ज्यादा से ज्यादा लोगों को मार सकते हैं। हमला सूरज के उगने से पहले के अंधियारे में किया जाना था जबकि ज्यादातर लोग गहरी नींद में सोते हैं। अभी तारे टिमटिमा रहे थे और वो लोग पूरी तैयारी के साथ नानटाकेट पर हमला करने के लिए आगे बढ़े, लेकिन यह देखकर हैरान रह गए कि, नानटाकेट के लोग पहले से ही मुस्तैद हैं, अपने हथियारों के साथ, दुश्मन की चुनौती का सामना करने के लिए। इन हालात में आगे बढ़ना आत्मघाती होता सो मार्था के वाइनयार्ड के सशस्त्र हमलावर निराश और हताश होकर अपने देश वापस लौट गए। अगले कई सालों तक वो यह राज जान नहीं पाए कि, उनका दुश्मन उनके हमले की योजना से आगाह कैसे हुआ होगा?

बहरहाल कुछ अरसा बीता तो दोनों कबीले शांति के साथ रहने को तैयार हो गए, क्योंकि मार्था के वाइनयार्ड का एक युवक लम्बे समय से नानटाकेट की युवती से प्रेम करता था और उसने उस युवती से ब्याह कर लिया। हुआ यूं कि, उसने अपने कबीले को बताया कि, हमले से पहले की रात को वह चोरी से नानटाकेट, गया था। उस रात समुद्र की लहरें शांत थीं क्योंकि ज्वार उतर गया था। उसने वहां पर अपनी प्रेयसी को देखा और उसे भोर से पहले होने वाले हमले से आगाह कर दिया। वापसी में उसे सुकून था कि, अब उसकी प्रियतमा सुरक्षित रहेगी। इसके बाद वो अपने कबीले में लौट आया। उसके कबीले को उसकी इस हरकत

का पता ही नहीं चला किन्तु युद्ध टल गया। बहरहाल अगली सुबह वो उदास होकर, अपने कबीले से बाहर निकला और दूसरों की तरह खुद भी हैरान रह गया, जब उसने दुश्मन को अपनी बांहों में पाया।

यह कथा समद्र द्वीपीय मूल निवासियों की पारस्परिक प्रतिद्वंदिता या दुश्मनी की कथा मानी जायेगी। जिनके झगड़े का अंत और शांति पूर्ण सहअस्तित्व की शुरुआत, एक प्रेम कथा के उजागर होने से होता है। उन दोनों कबीलों के मध्य संभव है कि, दुश्मनी का कारण, उनके पास कृषि योग्य भूमि की कमी, समुद्र पर पूर्णतः निर्भर अर्थव्यवस्था यथा मत्स्याखेट अथवा अन्य जलीय उत्पाद, रहे होंगे, जोकि, उनके अस्तित्व के लिए अपरिहार्य थे। अतः लगता यही है कि, दोनों द्वीपों के मध्य, जलक्षेत्र के समुचित बटवारे की समस्या रही होगी। इसीलिए हरेक द्वीप, दूसरे द्वीप की जनसंख्या का समूल नाश करना चाहता था। संकट का यह समय, अतीत कालीन माना जाएगा, अन्यथा मैसाचुसेट्स के दक्षिण पूर्वी, समुद्र में स्थित, इन दोनों द्वीपों में आज की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार पर्यटन है। कथनाशय यह है कि, समय के साथ अर्थव्यवस्था के नए आयाम विकसित होते है, जो अतीत काल में बेहद सीमित थे।

यह आख्यान, प्राकृतिक दृष्टि से समुद्र में मौजूद धरती के नन्हें नन्हें टुकड़ों पर आधारित देशों की कल्पना और सामाजिक राजनैतिक मान्यता को संबोधित है। जहां द्वन्द, अस्तित्व के लिए अपरिहार्य माना गया और द्वन्द के समय देशद्रोह की अवधारणा भी स्पष्ट हुई। देशद्रोह, जो युद्ध के संकट को टालने और नरसंहार को रोकने का कारण बना, अगर युवक प्रेम में नहीं होता तो, वह अपनी प्रेयसी की जान बचाने के लिए, अपने देश की, आक्रामक योजना को अगोपन नहीं करता। उसके कृत्य से ना केवल उसकी, प्रेमिका बल्कि उभयपक्ष के सैकड़ों लोगों के, जीवन सुरक्षित हुए। वो अपने देशद्रोह को स्वीकार करता है और अपने किये पर उदास है, लेकिन उसका कृत्य, दोनों कबीलों के दरम्यान, समझ का नया द्वार खोलता है। जहां मृत्यु से पहले, जीवन और सहअस्तित्व के लिए, प्रेम की

स्वीकार्यता पर जोर दिया गया है। दोनों कबीले इस प्रेम के ब्याह में बदल जाने के बाद से, शांति पूर्ण सहजीवन के लिए सहमत हुए। देश और विदेश के मध्य आबादियों की पारस्परिक घृणा, शत्रुता और विनाश जैसे मानवता विरोधी, लक्ष्यों की तुलना में, प्रेम, हमेशा हमेशा, धरती पर, नवजीवन के बीज बोता है...

नेरिविक

मुद्दतों पहले की बात है जब एक जादूगर परिंदे को ख्याल आया कि, उसे पत्नी के रूप में एक युवती चाहिए, तो उसने खुद को पुरुष के रूप में बदल लिया। उसकी आंखें कमज़ोर थीं तो उसने वालरस के दांतों से अपने लिए चश्मा बनवाया और सील की खाल का कोट सिलवाया। उसने हर मुमकिन कोशिश की, कि वो खूबसूरत दिखे। ब्याह के इरादे से वो इंसानों की बस्ती में जा पहुंचा। जहां उसे एक युवती पसंद आई और फिर वो उसे पत्नी बना कर अपने घर ले आया। उसकी पत्नी अमूमन घर में रहती और वो, हरेक दिन सील के शिकार के लिए घर से बाहर जाया करता था। घर वापस लौटने पर, शिकार में हासिल सील को अपनी पत्नी को सौंप देता ताकि वो उसे खाने के लिए तैयार कर सके। एक रोज हड़बड़ी में उसका चश्मा खो गया और उसकी पत्नी ने उसकी आंखों को देखा। वो इंसानों जैसी खूबसूरत नहीं थीं और बगैर चश्मे के वो बेहद बदसूरत दिख रहा था। उसकी पत्नी ये देख कर रोने लगी।

वो जोर से हंसा, उसने कहा, तुमने मेरी आंखों को देखा। तभी उसे याद आया कि चश्मे को उसने अपने सिर पर टांग रखा था और उसने फिर से चश्मे को अपनी नाक पर चढ़ा लिया। अगले किसी दिन, जब वो शिकार पर गया था, तब उसकी पत्नी के भाई, अपनी बहन से मिलने उसके घर आये, क्योंकि वो अपनी बहन को देखने के लिए तरस रहे थे। पति की गैर मौजूदगी में भाई, अपनी बहन को लेकर अपने गांव वापस चल दिए। पति जब घर लौटा तो अपनी पत्नी को घर में नहीं पाकर, बहुत व्याकुल हो गया। उसे लगा कि, उसकी पत्नी को कोई जबरदस्ती ले गया होगा। उसने शिद्दत से अपने पंख फड़फड़ाये, जिससे जबरदस्त तूफ़ान

उठा। समुद्र में ऊंची ऊंची लहरें उठीं और वो नाव डगमगाने लगी, जिसमें उसकी पत्नी और ससुराल पक्ष के लोग यात्रा कर रहे थे। इधर वो अपने पंखों की फड़फड़ाहट को तेजतर करता जा रहा था। उधर हवा भयंकर होती जा रही थी।

हिचकोले खाती नाव कभी भी पलट सकती थी। नाव में बैठे लोगों को शक हुआ कि, यह सब उस युवती के कारण हो रहा होगा? तो उन्होंने उसे उठाकर समुद्र में फेंक दिया और जैसे ही युवती ने बचने के लिए नाव का किनारा पकड़ने की कोशिश की, उन्होंने उसका हाथ काट दिया। वो पानी में डूब गयी और समुद्र के तल से जा लगी, तथा नेरिविक बन गयी। यानि कि समुद्र के सभी जीवों की शासक हो गयी। धरती पर लोग जब सील का शिकार करने में असफल हो जाते हैं, तो वे लोग नेरिविक के पास जाते हैं, चूंकि उसका एक हाथ है ही नहीं, तो वे लोग उसे खुश करने के लिए उसकी कंघी कर देते हैं और वो, इसके बदले धरती पर सील और अन्य प्राणियों को भेजती है, ताकि इंसान उन्हें खाकर जीवित रहें।

यह आख्यान एस्किमों समुदायों की वाचिक परंपरा का हिस्सा है। जीवन की बर्फीली दुरुहता के दरम्यान उन लोगों में इस तरह के जादुई तत्वों वाली कहानियों का चलन कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है। उनकी वेशभूषा में जानवरों की खालें और यदाकदा मिलने वाले परिंदों के पंख सम्मिलित होते हैं, तो कहानी भी किसी बदसूरत आदमी को लेकर कही गयी है, जिसे ब्याह की इच्छा है तो वो अपनी बदसूरती छुपाने के लिए सील की खाल का कोट पहनता है और कमजोर नजर वाली कदाचित बेढब आंखों पर वालरस के दांतों का चश्मा लगता है। कहानी से यह स्पष्ट होता है कि, अपने पर्यावास में जो मिले उसे खाओ, उसे पहनो और सुन्दर दिखने के लिए उसका इस्तेमाल करो। तो सील की खाल के कोट, वालरस के दांतों के चश्मे और संभवतः परिंदों के पंखों की सजधज के साथ वो युवक बदसूरत दिखने के बजाये, थोड़ा आकर्षक या सामान्य

व्यक्तित्व का पुरुष दिखाई देता होगा।

उसे परिंदा कहने की सांकेतिकता में, शायद उसकी वेशभूषा में शामिल परिंदों के पंखों का आधिक्य हो सकता है। अन्यथा वो सील का शिकारी है और उसे ब्याह के लिए युवती की तलाश है, ना कि, किसी मादा परिंदे की। कठिन पर्यावासों में रहने वाले इंसानों में जादुई और रहस्यमयी वृत्तांतों की भरमार होना अस्वाभाविक बात नहीं है। मुमकिन है, कथा में उल्लिखित युवा को ऐसे ही कारणों से जादुई शक्तियों वाला परिंदा कहा गया हो। बहरहाल एक बात तो तय है कि, वो परिंदे के तौर पर संबोधित है और जादुई शक्तियों का मालिक है या देह बदल सकता है, यह नितांत कल्पना शीलता है। कदाचित वो, ओझा, गुनिया नुमा कोई व्यक्ति है जोकि, युवती के समाज में कहीं और से आता है। अतः उसके विजातीय होने की सम्भावना बनती है। उसे पत्नी की चाहत है और पत्नी उसे मिल भी जाती है। वो सील का शिकार करके हरेक दिन भोजन की व्यवस्था करता है और प्रेम पूर्वक अपने गांव में रहता है।

उसे स्मृति लोप होता होगा तभी वो अपना चश्मा भूल जाता है और पत्नी को यह देख कर बहुत दुःख होता है कि, उसका पति उतना सुन्दर नहीं है जितना वो सज धज कर दिखता है। एक सुन्दर सुदर्शन युवा के स्थान पर बदसूरत युवा की उपस्थिति उसे आघात पहुंचाती है। इसके बरअक्स पति अपना रहस्य खुलने पर भी हंसता है क्योंकि वो जो चाहता था, उसे पा चुका है। पत्नी के मायके वाले उसे देखने के लिए उसकी ससुराल पहुंचते हैं संयोगवश पति घर पर नहीं है। वो आखेट पर निकला है। चूंकि अपने पति के वास्तविक रूप को देख कर, पत्नी का मोहभंग हुआ है तो वो अपने मायके पक्ष के लोगों के साथ घर से भाग निकलती है। समुद्र में नाव पर यात्रा का उल्लेख, यह स्पष्ट करता है कि, पति का गांव, समुद्र तटीय इलाके में अवस्थित था। तूफ़ान एक संयोग हो सकता है और युवती के साथ गए लोगों का अपने जीवन के प्रति मोह या स्वार्थ कि, नाव पर बोझ कम करने के लिए युवती को समुद्र में फेंक दिया जाता

है। उसका अंग भंग कर दिया जाता है।

वो डूब जाती है और कथित रूप से समुद्र की शासक या देवी तुल्य भी हो जाती है, जिसे धरती के लोग पूजते हैं और इसके बदले वो, उन्हें समुद्री जीव देती है, ताकि वे लोग जीवित रहें। जीते जी, उसे अपने पति के सौन्दर्य से प्रेम है पर मरने के बाद वो सबके जीवन से प्रेम करती है।

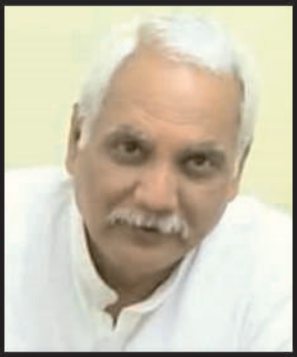

अपना परिचय क्या? कस्बे में जन्मा, कस्बों में ज़िन्दगी महदूद रही, नौकरी मिली भी तो पढ़ाने की...सो जो कुछ कमाया और गंवाया, वो सब किताबों और हर्फों के दायरे के अन्दर। अध्ययन की औपचारिकतायें गृहनगर के स्कूलों, बुन्देलखंड विश्वविद्यालय और सागर विश्वविद्यालय में पूरी करने के फ़ौरन बाद उच्च शिक्षा के कारिंदे हो गये, तब से अब तक तकरीबन ४२ साल गुज़रे जो, पढ़ पढ़ के पढ़ा रहे हैं। लोक संस्कृतियां, जनजातीय जीवन, खेतिहर समूह, मानवीय गरिमा और सामाजिक सरोकार से जुड़े मुद्दे, ज़िद की हद तक अभिरुचि में शामिल हैं। बहरहाल जीवन में कुछ असाधारण घटा नहीं, अब जाके जाना कि साधारण और सहज बने रहना भी कठिन कार्य है, जबकि दुनिया के तमाम संसाधन चंद हाथों में सिमट कर रह गए हों और बहुसंख्यक आबादियां, बुनियादी अधिकारों के वंचन और अप्रतिष्ठा के भयावह संकट के दौर से गुज़र रही हों। ऐसे में अपना होना, नहीं होने के जैसा है।

सृजन बिंब प्रकाशन नागपुर

ISBN 978-93-91817-38-1

9 789391 817381

Read online at: www.anakhar.com